भिखारी ठाकुर ग्रंथावली

पहिल खण्ड

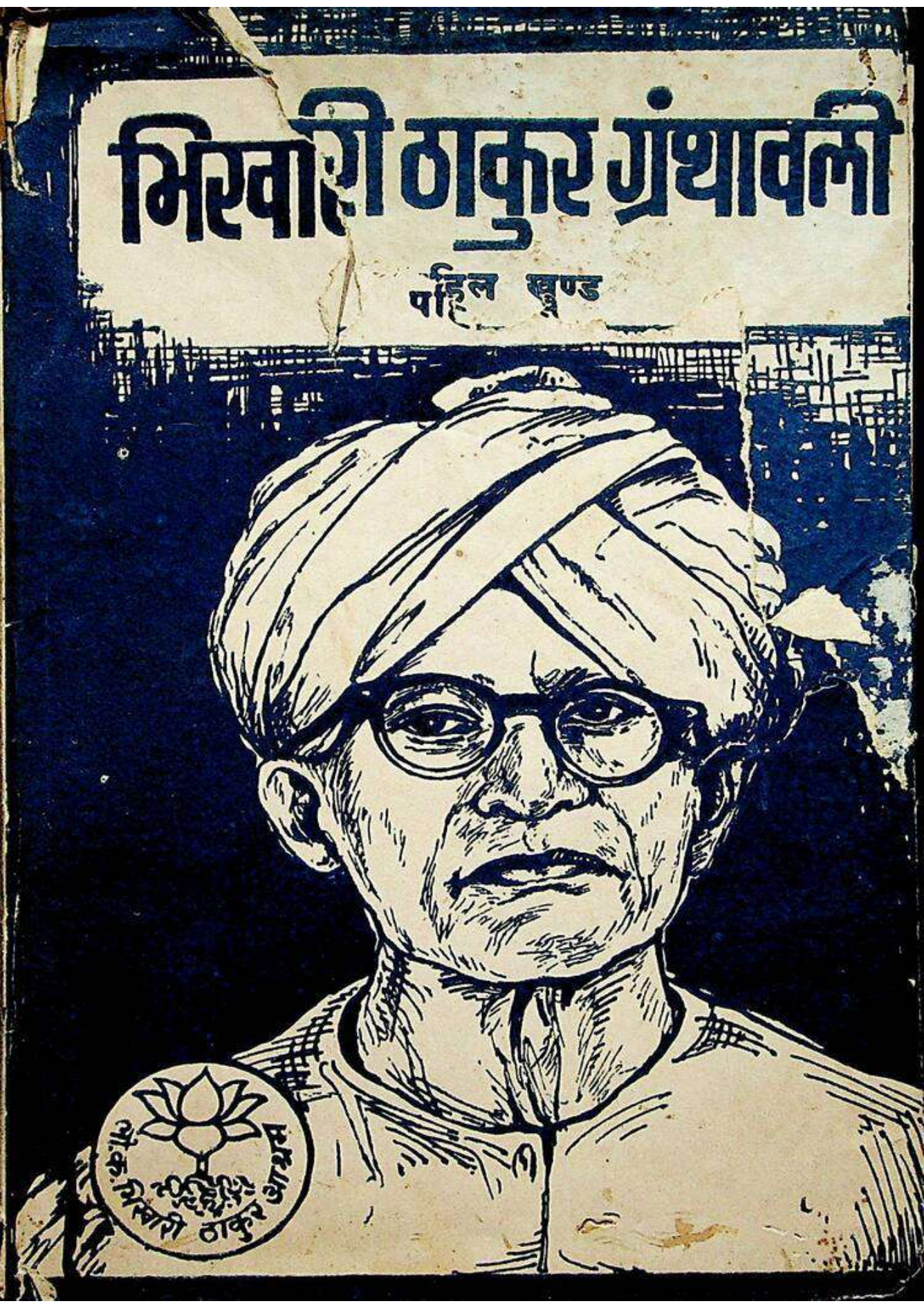

सेवार्थ —

डॉ॰ [illegible] शास्त्री जी
के कर कमलों में

[illegible]

१५-११-८६

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर का सम्पूर्ण कृतियन के प्रकाशन योजना के अधीन

भिखारी ठाकुर ग्रंथावली

पहिल खण्ड

संग्रहकर्त्ता

शिलानाथ ठाकुर : गौरीशंकर ठाकुर

सम्पादकमण्डल

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

नगेन्द्र प्रसाद सिंह रामदास आर्य

प्रो० तैयब हुसैन 'पीड़ित' जलेश्वर ठाकुर

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम

कुतुबपुर (सारन)

http://bhojpurisahityangan.com

Bhikhari Thakur Granthawali : Part I

[Published under the plan of Publication of all works of Bhikhari Thakur]

Collected by

Shilanath Thakur & Gaurishankar Thakur

Edited by

Avinash Chandra Vidyarthi

Nagendra Prasad Sinha — Ramdas Arya

Prof. Taiyab Hussain 'Pirit' — Jaleshwar Thakur

Price : *Rs. 15/-*

भिखारी ठाकुर ग्रंथावली : खण्ड १

प्रकाशक : लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम
कुतुबपुर (सारन)

संस्करण : प्रथम, विजयादशमी, १९७९

सर्वाधिकार : संग्रहकर्त्ता

मूल्य : रु० १५/- (पन्द्रह रुपए) मात्र

मुद्रक : जयदुर्गा प्रेस
नयाटोला, पटना-८०० ००४

http://bhojpurisahityangan.com

प्रकाशकीय

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम के द्वारा प्रकाशित प्रथम पुष्प "भिखारी" पाठकगण के समक्ष गत वर्ष प्रस्तुत किया गया। आम जनता ने उसे बहुत आदर के साथ स्वीकारा। उसी भूमिका-क्रम तथा संस्था की नियमावली में ठाकुर जी की सम्पूर्ण कृति के प्रकाशन की योजना है। अत संस्था का उत्तरदायित्व हो जाता है कि ठाकुर जी की सारी कृतियों का संग्रह किया जाय। ठाकुर जी की रचना के नाम पर बाजार में कुछ ऐसी चीजें भी देखने में आती हैं, जो उनकी नहीं हैं। उनकी कृतियों का छिटपुट प्रकाशन व्यवसायी प्रकाशकों द्वारा होता आया था, जिनमें कई प्रकार की अशुद्धियाँ थीं। आज जबकि भोजपुरी भाषा और उसमें विरचित लोक अथवा विशिष्ट साहित्य का मूल्यांकन किया जा रहा है, जनकवि भिखारी ठाकुर के अवदान को अधिक समय तक ओझल नहीं रखा जा सकता। लोक भाषा-साहित्य-संस्कृति के समर्थक महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी ने भिखारी ठाकुर को भोजपुरी का शेक्सपीयर कहा था। अतएव ठाकुर जी की ग्रंथावली के प्रथम खंड में उनके पाँच प्रसिद्ध नाटकों का प्रकाशन हो रहा है।

कृतियों के संपादन में सर्वश्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, नगेन्द्र प्रसाद सिंह, तैयब हुसैन 'पीड़ित', जलेश्वर ठाकुर एवं रामदास आर्य का योगदान रहा। लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम के उपाध्यक्ष तथा भिखारी साहित्य के अप्रितम उद्गाता, लोक-भाषा-साहित्य सेवानुरागी श्री विद्यार्थी जी ने पाठ की शुद्धता को दृष्टि में रखते हुए पाण्डुलिपि तैयार की।

संग्रह के बाद उनकी कृति को खंड के रूप में निकाला जा रहा है। इस कार्य में स्व० ठाकुर जी के आत्मज श्री शिलानाथ ठाकुर एवं उनके भतीजा तथा भिखारी नाटक मंडली के कर्णधार श्री गोरीशंकर ठाकुर तथा मंडली के अन्य कलाकारों का योगदान रहा है।

फिलहाल ग्रंथावली में किसी प्रकार की व्याख्यात्मक टीका-टिप्पणी अथवा समीक्षा का समावेश नहीं किया जा रहा है। विशुद्ध पाठ मात्र के प्रकाशन का कार्यक्रम संपन्न हो जाने के बाद आश्रम द्वारा ठाकुर जी की कृतियाँ सर्वांगीण समीक्षा सहित प्रकाशित की जायेंगी। देहाती क्षेत्र में स्थापित लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम ने अपने अत्यंत सीमित साधनों से लोक सेवा का व्रत लिया है। इसके अनुष्ठान में जन-साधारण तथा सरकार का उदार सहयोग अपेक्षित है, जिससे अपने उद्देश्यों के कार्यान्वयन में इसे संतोषजनक सफलता सुलभ हो सके।

आश्रम संग्रहकर्त्ता, संपादक-मंडल तथा सर्वश्री जयदुर्गा प्रेस के स्वामी श्री नगेन्द्र प्रसाद सिंह के प्रति विशेष आभारी है।

—रामदास राही
मंत्री
लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम

http://bhojpurisahityangan.com

"हमनी के बोली में केतना जोर हवे, केतना तेज बा, ई अपने सब भिखारी ठाकुर के नाटक में देखीले। लोग के काहे नीमन लागेला भिखारी ठाकुर के नाटक ? काहे दस-दस, पनरह-पनरह हजार के भीड़ होला ई नाटक देखे के खातिर ? मालूम होतआ कि एही नाटक में पउलिक के रस आवेला। जवन चीज में रस आवे उहे कविताई। केहू के लमहर नाक होखे, आ ऊ खाली दोसे सूँघत फिरे त ओकरा खातिर...का कहल जाय। हम ई ना कहतानी जे भिखारी ठाकुर के नाटकन में दोस नइखे। दोस बा त ओकर कारन भिखारी ठाकुर नइखन, ओकर कारन हवे पढ़ुआ लोगन। ऊहो लोग जे अपना बोली से नेह लगावत, भिखारी ठाकुर के नाटक देखत आ ओमें कवनो बात सुझावत (त) ई कुल दोस मिट जात। भिखारी ठाकुर हमनी के एगो अनगढ़ हीरा हवे। उनकरा में कुलि गुन बा खाली एने-ओने तनी-तूनी छाँटे के काम हवे।"

—महापंडित राहुल सांकृत्यायन
(भोजपुरी, बरसात, संवत २००५)

http://bhojpurisahityangan.com

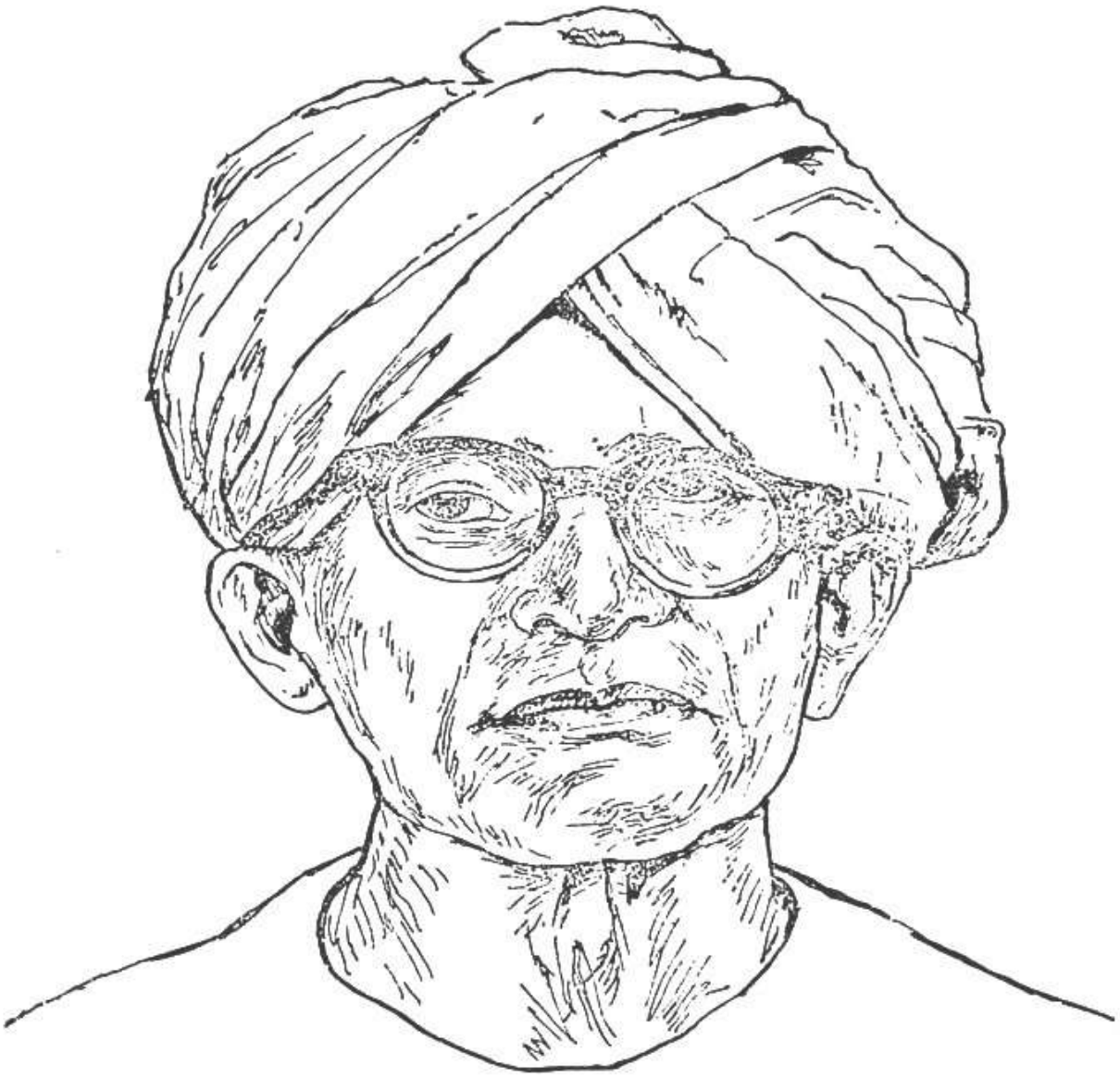

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर

जन्म : १८-१२-१८८७ :: निधन : १०-७-१९७१

http://bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर ग्रंथावली

खण्ड १

- बिदेसिया/९
- भाई बिरोध/६७
- बेटी बियोग/८६
- कलियुग प्रेम/११९
- राधेश्याम बहार/१३६

http://bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर ग्रंथावली की प्रकाशन-योजना

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर (सारन) के निर्णयानुसार लोक कलाकार भिखारी ठाकुर की समस्त कृतियों के प्रकाशन का निश्चय हुआ है। ठाकुर जी की समस्त कृतियों का संकलन तथा उनका शुद्ध पाठ तैयार करना एक दुस्साध्य कार्य है; क्योंकि, उनके जीवन-काल में ही उनके नाटक (जिसे वे स्वय 'तमासा' कहते हैं) विभिन्न मण्डलियों द्वारा यद्किंचित् परिवर्त्तन कर अपनाये जाते रहे और लोक-रुचि के अनुकूल प्रदर्शित होते रहे।

संपादक-मण्डल ने सभी उपलब्ध स्रोतों का अवलोकन करने के बाद ठाकुर जी के वंशधर—श्री शिलानाथ ठाकुर एवं श्री गौरीशकर ठाकुर के पास उपलब्ध सामग्री को ही आधार बनाया और ठाकुर जी की परम्परा में श्री गौरीशंकर जी की मंडली की मौखिक वार्त्ताओं को स्वीकार किया। बड़े कठोर परिश्रम के बाद ग्रंथावली का प्रथम खण्ड आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

ग्रंथावली तीन खण्डों में प्रकाशित होगी। प्रथम खण्ड के पाँच नाटकों के बाद द्वितीय खण्ड में शेष नाटक होंगे और तीसरे खण्ड में भजन आदि फुटकर काव्य देने की योजना है।

भिखारी-साहित्य के अध्येता, विद्वान एवं कलाकारों से साग्रह अनुरोध है कि वे अपने बहुमूल्य सुझाव आश्रम को भेजें ताकि ग्रंथावली को और प्रामाणिक बनाया जा सके।

सम्पादक मण्डल उन सभी सम्बद्ध व्यक्तिओं का आभारी है, जिनका सहयोग इसे समय-समय पर प्राप्त हुआ।

—सम्पादक मण्डल

http://bhojpurisahityangan.com

बिदेसिया

(सूत्रधार मंच पर आ के मंगलाचरण सुनावतारे)

श्लोक

वामांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्री शंकरः पातु माम्
अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः
हे राम पुरुषोत्तम नरहरे नारायण केशव
गोविन्द गरुडध्वज गुणनिधे दामोदर माधव
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम्
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी
द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी
महावीर बिनवों हनुमाना
जासु सुजस प्रभु आप बखाना
धन्य-धन्य गिरिराज कुमारी
तुम समान नहिं कोउ उपकारी

http://bhojpurisahityangan.com

नाच तमासा कीर्त्तन जेते
होखत बा सब जग मँह तेते
नावत बानीं सब कर माथा
चित देइ सुनहु बिदेसिया काथा
एह किताब के सब बिस्तारी
थोरही में सब कहत भिखारी

आज विदेसी के तमासा होइहन। बिदेसी के तमासा काहे ? दूर-दूर के लोग कहेला जे विदेसिया के नाच देखे चले के। बिदेसिया के नाच ना हवन बिदेसिया के तमासा हवन। एह तमासा में चार आदमी के पाट बा—बिदेसी एक, प्यारी सुंदरी दू, बटोही तीन, रखेलिन चार।

अथवा, बिदेसी ब्रह्म, बटोही धरम, रखेलिन माया, प्यारी सुंदरी जीव। ब्रह्म जीव दूनो जाना एही देह में बाड़न बाकी भेंट ना होखे। कारन ? माया। एकरा के काटे वाला बटोही धरम।

आत्मा से परमात्मा काहे कुरोख हो गइलन ? देना का झंझट से चाहे विरोध का झंझट से जइसे स्त्री के पति छोड़ के परदेस चल जालन तइसे झूठ-झंझट से आत्मा से परमात्मा कुरोख हो जालन। बीच में कारन—रखेलिन स्त्री। झंझट से छोड़ा के मिलाप करा देबे खातिर बटोही—उपदेश। एह चारो के संबाद होखे के चाहीं। कइसन ? प्यारी सुंदरी के राधिका जी लेखा, बिदेसी के श्रीकृष्ण चन्द्र जी लेखा, रखेलिन के कुबरी लेखा, बटोही के ऊधो जी लेखा।

पातिव्रत धर्म स्त्री खातिर सब धर्म से उत्तम धर्म ह जइसे—

उत्तम के अस बस मन माहीं
सपने आन पुरुष जग नाहीं

पतिबरता सती सुलोचना का रामजी से बात भइल, स्तुति कइली। कहली हा जे हमरा पति के सीस ना देब त—

अब हम जाइ मरब सत साधी
मिलब हमहिं जस मिलत समाधी

http://bhojpurisahityangan.com

पतिवरता का ई दुख काहे भइल ? जइसे लरही-धरन-कमरबाला पर जतना भार रहेला ततना भार कोरो पर ना रहे। राजा हरिश्चन्द्र में पूरा सत भइल हा तब डोम किहाँ बिका गइलन हाँ जेकर किरती आज ले गवात वा। ई केहू कहे जे बनउवा बात ह तेकरा खातिर बनउवा भी ह। कइसे ? जवना कुँआ के जल ऊख में पटावल जाला ओही कुँआ का जल से मरिचा पाटेला, ऊहे जल ऊख के मीठ आ मरिचा के तींत कइ देला। जइसे —

जिनकी रही भावना जैसी
प्रभु मूरति देखी तिन तैसी

विदेसी ऊहे हवन। विआह क के घर में जनाना के वइठा देलन। अपने चल गइलन कमाए। बहरा से ना एगो खत भेजतारन, ना खबर भेजतारन, ना खरख-बरच खातिर पाँच गो रोपेया मनीआडर से भेजतारन। बाहर में जाके दोसर जनाना राखि लेतारन। एहिजा घर में प्यारी सुंदरी रोअतारी।

बटोही ऊहे हवन जे गाँव-नगर से बहरा जा तारन, आवतारन। ओह बाट के हाल जानतारन। अथवा बिदेसी रामचन्द्र जी। भरत जी महाराज बटोही बनि के राम जी के बन से फेरे खातिर गइले हाँ। ऊ विदेसी त दोसर जनाना राखि लेलन तेहसे ना लवटलन बाकी रामचन्द्र जी काहे ना लवटलन ?

तापस भेस बिसेस उदासी। चउदह बरिस राम बनवासी।

भादो के महीना अन्हरिया तेरस का दिन आधा राति खानी प्यारी सुंदरी सोचतारी—

भादो दरसावत, आधा राति होइ जावत
बदी तेरस परि जावता बूँद झम-झम-झम झमकत बा
घेरत घनघोर, झींगुर-दादुर मचावत सोर
दामिनि दल साजि-साजि चम-चम-चम-चमकत बा

http://bhojpurisahityangan.com

पुरवा पवन आवत, सनसनावेत, सरमावत मन
भावत नइखे सरग, दम दम-दम-दम दमकत बा
कहत भिखारी भारी जारी जनावता तम
तरुनी के तबीयत भीतर बम-बम-बम बमकत बा
ओ समय में प्यारी सुन्दरी का कहि के रोअतारी ?

(लोरिकायन का लय में)

जनियाँ मकनियाँ में हनि के केवरिया
डहकत बाड़ी बारम्बार
पिया घरे रहितन, जवन-जवन चहितन
कहितन करितीं तइयार
मनवाँ भवनवाँ अँगनवाँ में लागत नइखे
कब मिलिहन समाचार ?
कहत भिखारी नाई, प्यारी के चरित गाइ
काइ करिहन करतार ?

(जतसारी के लय)

ए सामीजी, जवना जूने भइल सुमंगली
त जनलीं जे भाग जागल हो राम
ए सामीजी, नइहर से नाता तूरि दिहलऽ
त ससुरा सोहावन लागल हो राम
ए सामीजी, घरवा-भीतरवा बइठाइ कर
गइलऽ कवना दो मुलुकवा भागल हो राम
ए सामीजी, खतवा में पातावा पेठइतऽ
त सुनि के अगरइती पागल हो राम
ए सामीजी हाथ-गोड़ चउरि के, लोहवा लाल कइके
ईहे हवे देहिया दागल हो राम

http://bhojpurisahityangan.com

ए सामीजी, सुसुकि-सुसुकि लोरवा पोंछत बानीं
केहू नइखे सुनत रागल हो राम
ए सामीजी, कहत भिखारी नाई, पतइन खाइ के,
गुनलऽ ना, मिमिआली छागल हो राम

(दोसरा तरह के जतसारी के लय)

डगरिया जोहत ना, बीतत बाटे आठ पहरिया हो
डगरिया जोहत ना
धोती पटधरिया धइ के कान्हावा पर चदरिया हो
बबरिया झारि के ना, होइबऽ कवना सहरिया हो
बबरिया झारि के ना
एकऊ ना भेजवलऽ खत कतहूँ से खबरिया हो
नगरिया देखि जा ना, नइखीं खोजत बटसरिया हो
नगरिया देखि जा ना
केइ हमरा जरिया में भिरवले बाटे अरिया हो
चकरिया दरि के ना, दुख में होत बा जतसरिया हो
चकरिया दरि के ना
परोसि कर थरिया, भात - दाल - तरकरिया हो
लहरिया उठेला ना, रहितऽ करितऽ जेवनरिया हो
लहरिया उठेला ना
कहत भिखारी मनवाँ करेला हर घरिया हो
उमरिया भरिया ना, देखत रहतीं भर नजरिया हो
उमरिया भरिया ना

(सोरठी के लय)

पिया कहलन बहरा जाइबि, कुछ दिन में घूमि के आइबि
एकिया हो मोरे रामऽ, सुकवा उगल तब गइलन भागल हो राम

http://bhojpurisahityangan.com

जाये नाहीं दिहितीं कबहूँ, लाखो तरहे कहितन तबहूँ
एकिया हो मोरे रामऽ, पहिले से रहितीं तनी भर जागल हो राम
तब से ना नींद आवेला, घर ना अँगनवाँ भावेला
एकिया हो मोरे रामऽ, एही सोचे मनवाँ भइल बा पागल हो राम
कहत भिखारी दास, दिअरा में घर ह खास
एकिया हो मोरे रामऽ, साँवली सुरतिया बा मनवाँ में लागल हो राम

कवन साँवली सूरति ?

जवना साँवली सूरति खातिर विश्वामित्र जी तपस्या छोड़ि के अयोध्या में पहुँचलीं हाँ। दसरथजी महाराज कहलीं हाँ जे अपने के कहहीं में देरी बा, हमरा करे में देरी नइखे।

विश्वामित्र जी कहली हाँ—नील बरनवारे, जिनिकर नीला रंग के कमल लेखा बदन बा, हम उनुके खातिर अइलीं हाँ—

असुर समूह सतावत मोही। मैं जाचन आयउ नृप तोही।

दसरथजी महाराज कहलीं हाँ कि राज माँगीं, धन माँगीं, प्रान माँगीं बाकी साँवली सूरत देल कबूल नइखे।

विश्वामित्र जी महाराज कहलीं हाँ जे हम स्राप देबि।

दसरथजी महाराज कहलीं हाँ—स्राप कबूल बा, दुनिया बदनाम करी सेहू कबूल, बाकी साँवली सूरत दीहल कबूल नइखे।

तब बसिष्ठ बहुबिधि समझावा। नृप सन्देह नास करि पावा।

झगरा बसिष्ठ जी महाराज छोड़वलीं हाँ।

अथवा, आजु के प्यारी सुन्दरी का कहि के रोअतारी—

ए किया हो मोरे रामऽ, जब से परदेस में बाड़न रहल हो राम
ए किया हो मोरे रामऽ, तनी ना सोहात बा कवनो टहल हो राम
ए किया हो मोरे रामऽ, रहि-रहि के मनवाँ जात बा दहल हो राम
ए किया हो मोरे रामऽ, कवनी बेयरिया आइ के बहल हो राम
ए किया हो मोरे रामऽ, कवहूँ के नइखीं दुखवा सहल हो राम

http://bhojpurisahityangan.com

एकिया हो मोरे रामऽ, सुनहट लागत बा दुअरा महल हो राम
ए किया हो मोरे रामऽ, ओहिजा उड़त बा चहल-पहल हो राम
ए किया हो मोरे रामऽ, एहिजा के लहकल-सहकल ढहल हो राम
ए किया हो मोरे रामऽ, नइखे भिखारी से जात कहल हो राम

एगो हई ह—

परदेसी का सोचे मरलीं।
अन-पानी के सवाद रुचत नइखे, कबहूं पेट ना भरलीं।
मतलब मोर बिधाता जनिहन, प्रेम का फंदा में परलीं।
छठ, एतवार एको ना छोड़लीं, बरत से काया के जरलीं।
कहत भिखाती उपाय नइखे लउकत, कोटिन जतन क के हरलीं।

(निरगुन)

हे राम, जोगिनियाँ बनि के हम,
करब मालिक के उदेस। हे राम···
तूरि के गला के हार, देहब अगिया में जार
छोड़ि के परइलन परदेस। हे राम···
टिकुली-सेनूर तजि, पिउ-पिउ भजि-भजि
छूरा से छिलाइ केर केस। हे राम···
गहना सोना-चानी के, लोढ़ा से खानि-खानि के,
एही सोचे बनबि अनभेस। हे राम···
कहत भिखारी नाई, अंग में भभूत लगाई
तूमा लेके घूमब हरमेस। हे राम···

(बिरहा)

मालिक चलि गइलन परदेस, घर में छोड़ि के
हमरा तनिको भर धरात नइखे धीर।
तनिको भर धरात नइखे धीर, बटोही भइया!
कइक जनम के उदय भइल पाप के कमइया

http://bhojpurisahityangan.com

चढ़ल जवानी जोर परदेस गइलन कन्हइया
बीचे धार में दहत बाटे छेद कइल नइया
पियऊ विनु जगत में ना लउकत बा खेवइया
कहत भिखारी पंच लोग में देत बानीं दोहइया
हमरा तनिको भर धरात नइखे धीर।

फेरु अइसे कहाता—

पियवा गइलन कलकातावा ए सजनी!
तूरि दिहलन पति-पत्नी-नातावा ए सजनी,
किरिन भीतरे परातवा ए सजनी! पिया···
गोड़वा में जूता नइखे, सिरवा पर छातावा ए सजनी,
कइसे चलिहन रहतवा ए सजनी! पिया···
सोचत-सोचत बीतत बाटे दिन-रातवा ए सजनी,
कतहूं लागत नइखे पातावा ए सजनी! पिया···
लिखत भिखारी खोजिकर बही-खातावा ए सजनी,
प्यारी सुन्दरी के बातवा ए सजनी! पिया···

कबो ईहो—

पिया निपटे नादानवाँ ए सजनी!
हमरा घोंटात नइखे कनवाँ भर अनवाँ ए सजनी,
चाभत होइहें मगही पानवाँ ए सजनी! पिया···
भीतरे रोवत बाड़न तनवाँ में मनवाँ ए सजनी,
छोड़त होइहन मुसुकानवाँ ए सजनी! पिया···
लड़िका नइखन, भइल बाड़न मस्तानावाँ ए सजनी,
जेकर हइसन बा जनानावाँ ए सजनी! पिया···
गावत भिखारी हउए कुतुबपुर मकानवाँ ए सजनी,
प्यारी सुन्दरी के गानावाँ ए सजनी! पिया···

http://bhojpurisahityangan.com

चौपाई

श्री गणेश महादेव दिनेसा
जेहि सुमिरे सब मिटत कलेसा
तेहि चरन में मैं सिर नाऊँ
चरचा कुछ बिदेसी के गाऊँ
जयति भागवत जय बालमीकी
जयति रामायण श्री तुलसी की
सन्त मण्डली पद सिर नाऊँ
विप्र चरन-रज सीस चढ़ाऊँ
कवि सज्जन सब के पद बन्दे
करहु कृपा जो होखो अनन्दे
गिरत बानीं सकल चरना
जो बिनु स्वारथ अघ सिर धरना
विद्या से बानीं कमजोरा
करहु माफ सब अवगुन मोरा
बिचऊ नाटक बानीं बनावत
बिनु विद्या के नइखे आवत
गावे लायक हम ना बानीं
पत राखऽ अम्बिका भवानी
अब आगे के सुनहु बेयाना
करत बिदेसी बिदेस पयाना
कहत पियारी से तुरते जाइब
चतुर बानीं हम बहुत कमाइब
पत्नी कहे पति जा मत बहरा
केइ लगावल अइसन लहरा ?

(सूत्रधार के प्रस्थान)

http://bhojpurisahityangan.com

(नाटक प्रारम्भ)

चौपाई

समाजी—

बाल्मीकि महाभारत गीता
करहु कृपा जग जननी सीता
एह नाटक के विचऊ बाना
गावत बानीं बिदेसिया गाना.
पति कहे पत्नी से बाता
हम जाइब देखे कलकाता

(बिदेसी आ प्यारी सुन्दरी के प्रवेश)

बिदेसी : हो प्रानप्यारी, सुनतारू ?

प्यारी सुन्दरी : का कहतानी ए स्वामी जी ?

बिदेसी : एगो सलाह बा ।

प्यारी : भला कवन सलाह बाटे ?

बिदेसी : सलाह बा कि हमार मन करता जे तनी कलकाता से जाके हो अइतीं ।

प्यारी : ए रवों, रउआ कलकाता जाये के कहत बानीं, रउआ कवना बात के तकलीफ बाटे ?

बिदेसी : हमरा कवनो बात के दुख-तकलीफ नइखे बाकी हमार दोस्त अइलन हा कलकाता से । कलकाता के समाचार सुनि के हमरो तबियत कइले बा कि हमहूँ जाइब । हम पन्द्रह दिन में लवटि के चल आइब ।

प्यारी : ए रवों, रउआ पनरह दिन खातिर कहतानीं,हम घरियो छन भर खातिर रउआ के अपना आँखी का सोझा से ना जाये देब ।

बिदेसी : हम जतरा कइले बानीं त देखऽ, जतरा पर ठकठेनि तूं मत करऽ ।

http://bhojpurisahityangan.com

प्यारी : (गीत)

दूनों एके साथे रहे के परानी ।
देस परदेस में असाम-मुलतानी,
सँगही में राखऽ चरनों के दासी जानी । परानी····
गवना करा के देस जइवऽ बिरानी,
केकरा पर छोड़ि केर टुटही पलानी ? परानी····
केकरा से आग माँगब ? केकरा से पानी ?
खालैं ऊँचा गोड़ परी चढ़ल बा जवानी । परानी०—
कहत भिखारी सून होई रजधानी,
पति मति फेरि द बिधाचल भवानी । परानी०—

बिदेसी : (चौबोला)

मन हमार परदेस जाये के चाहत अबहीं प्यारी
जल्दी से तइयार करहु कुछ, रास्ता के बटसारी
फिरती बार तोहरे पहिरन हित कीनब बंगला सारी
कहे भिखारी खुसी रहऽ घरे, मत करऽ सोच हमारी

प्यारी : (चौबोला)

हाय नाथ, तोहें सौंप दीन्ह मोर भाई, बाप, महतारी
सत के बन्धन तोड़ि के स्वामीजी मति करहू बरिआरी
हम तोहे सम्बन्ध बिधाता जोड़ी रचेउ बिचारी
कहे भिखारी कुसल करहु नित गनपति उमा त्रिपुरारी

बिदेसी : (चौबोला)

परदेस जाइब हे प्रिये, घर में रहऽ तनी धीर से
आँखों से आँसू आ रहे, कपड़ा भिजत है नीर से
तन-मन-जिगर से कहत हूँ भगवान रखिहें सरीर से
कहते भिखारी तोहि सँगे आ के फगुआ खेलब अबीर से

हे प्रानप्यारी, देखऽ, आउर महीना में कहूँ रह जाइब लेकिन फगुआ के दिन तहरा सँगे आ के रंग-मसाला जरूर होई।

http://bhojpurisahityangan.com

प्यारी : परदेस जाये कहू कहि के जीव मत तरसाइये।
कछु भूल-चूक जो होय हमसे तदपि मत बिसराइये ॥
एह सोक-सागर-धार में कहुँ छोड़ि हमें मत जाइये।
कहतें भिखारी घरहिं रहिकर प्राणनाथ ! बचाइये ॥
(गोड़ पर गिरतारी)

बिदेसी : अनेरे गोड़ पर फुट-फुट गिरतारू।

प्यारी : (कबित्त)

अँगना आनन्द लागत, दुअरा बधावा बाजत,
जाये के बिदेस रउआ कबहू मत भाखिये।
धोती आ कमीज, टोपी आसकोट सिलाइ देहब,
इतर के बास तेल भूतनाथ माखिये।
विबिध मिठाई, पकवान, तरकारी, दध्री,
निमिकी, मोराबा, पापड़, घरहीं सब चाखिये।
कहत भिखारी पिया हिया में छमा करिके
हमरासे गरीबनी पर दया नित राखिये।

बिदेसी : हम जाइब परदेस के, घर में करS बहार।
बरिस दिन पर आइब सुनिलS, छैल छबीली नार ॥

प्यारी : चलि जइबS परदेस के, घर में रहब अकेल।
कहत भिखारी कइसे चलिहें, बिन अँइजन के रेल?

बिदेसी : जतरा भइल बिदेस के, धरहु राम पर ध्यान।
करिहें जानकि-जीवन प्यारी ! तोर-मोर कल्यान ॥

प्यारी : त्राहि-त्राहि अबला कर स्वामी ! मत करहु परिसान।
सीता-राम गइलन कानन संग, जानत सकल जहान ॥

बिदेसी : संघत के फल तुरते मीलल, हरन भइल प्रिय नारि।
आजु तलक ले सुनि ल प्यारी, गावत बेद पुकारि ॥

प्यारी : धन संघत, धन-धन करनी, जो जानत सकल जहान।
धन पतनी जो पति मुख पंकज, करत मधुप इव पान ॥

http://bhojpurisahityangan.com

बिदेसी : (गीत)

प्यारी, देस तनी देखे द हम के।
जात - आवत में देरी ना लागी,
जइसे घोड़ा के रेस। देस तनी···
कहना मानऽ करब ना देरी,
जल्दी से भेजब सनेस। देस तनी···
बल - बुद्धि से रोजे कमाइब,
नगद माल हरमेस। देस तनी···
कहत भिखारी तूँ सोच दूर करऽ
करिहन कृपा महेस। देस तनी···

(गीत)

प्यारी : पिया मोर, मति जा हो पुरुबवा।
पुरुब देस में टोना बेसी बा,
पानी बहुत कमजोर। मोर, मति जा हो···
सुनत बानीं आँख पानी देत बा,
सारी भइल सरबोर। मोर···
एक नाथ बिनु मन अनाथ रही
घुसी महल में चोर। मोर···
कहत भिखारी हमारी ओर देखऽ
कतिना करीं निहोर ? मोर···

(गोड़ पर गिरतारी)

बिदेसी : तूं त अनेरे नूं फूट-फूट गोड़ पर गिरतारू। अच्छा ल, अतना रोअतारू त हम ना जाइब। अच्छा एहिजे रहऽ, हम तनी स्नान क के आवतानीं।

प्यारी : ए रवों, हम बाल्टी में पानी आन देतानीं, रउआ एहीजा स्नान करीं।

http://bhojpurisahityangan.com

बिदेसी : स्नाने कइला ले बा ? जाइब त स्नान करब, मंदिल में शंकरजी के पूजा पाठ करे के होई, जल चढ़ावे के होई ।

प्यारी : ए रत्नों, हम जातानी फुलवाड़ी में से फूल तूर के आन देत बानीं; रउआ मंतर पढ़ देहब हम जाइब त शंकरजी पर चढ़ा आइब ।

बिदेसी : जब सब काम घर में मेहरारुए करी त मरद घर में रहि के का करी ? हटीं जी, हमरा के जाये दीं । कतना देरी से पेसाब लागल बा । पेसाब का मारे पेट फूलि के नर-गर भइल आवता ।

प्यारी : एगो कँटिया आन देत बानीं, पेसाब क लेब । हम फेंक देब ।

बिदेसी : आरे बउराहिन कहीं के, नीमन आदमी कँटिया में पेसाब करेले? इहे असगुन मनावत बाड़ू कि बेमार परस, परले-परल पेसाब करस ?

प्यारी : रावा बरतन में पेसाब ना करब त चलीं जहाँ पेसाब करब तहाँ हम खड़ा रहब ।

बिदेसी : आरे पागल, पेसाब उतरी कि टीक प चढ़ जाई ?

प्यारी : अच्छा त जाईं, रउआ कर आईं । जाईं, हम खड़ा बानीं । बाकी हमरा से छल मत करब ।

(बिदेसी पेसाब करे के बहाने जातारन ।)

समाजी : (चौपाई)

पिउ के प्यारी राखन लागे । करि छल कछुक धीर देइ भागे ।।

बिदेसी : (एगो दोस्त से) राम राम दोस्त !

दोस्त : राम राम, बड़ा चंचल बाड़ऽ ।

बिदेसी : हमरा घर के समाचार नइख नूं जानत ?

दोस्त : कवन ममिला लागल, कहीं पिटइलऽ हा ?

बिदेसी : ना दोस्त राम ! कलकाता जाये के मन भइल बा । औरत से सलाह लेबे लगनी हाँ त ऊ अठान-कठान डाल देली हा । हम खुदे चल देलीं हाँ । दोस्त से तनी सलाह लेबे खातिर अइलीं हाँ ।

दोस्त : हमार राय लेबे अइलऽ हा ?

बिदेशी : हँ ।

दोस्त : हम राय न देब

बिदेसी : काहे ना राय देब ?

http://bhojpurisahityangan.com

दोस्त : तूं काल्हे गवना करवलऽ हो आ आजे जतरा क देलऽ? तहरा लेखा चपाट सवाँग खोजलो पर ना मिली ।

बिदेसी : का दोस्त राम, गवना करावेवाला बिदेस ना जाय ?

दोस्त : रह-सह के जाला । तूं एके बेरा पावदान पर लात घ देलऽ ।
(बिदेसी चार डेग आगे बढ़ि के लवटतारे)

बिदेसी : (दोस्त से) दोस्त राम, जतरा ठीक रहे कि भेंट हो गइल । चाभी छूटले जात रहे । हई चाभी लीं ।

दोस्त : चाभी कहाँ के हऽ ?

बिदेसी : ई चाभी तीसरा अँगनई में कोनिया घर में अलमारी बा ओकरे ह ।

दोस्त : जवन सोनपुर में किनाइल रहे ?

बिदेसी : हँ, ओही अलमारी में कपड़ा-लत्ता, गहना-गुरिया, सब कुछ बाजाप्ते राखल बा । कह देब खूब पेन्हिहें, कुछ चिन्ता मत करिहें । खाये खातिर रबड़ी मलाई जतना खाइल पार लागे खाइल करिहें जे में मस्त रहिहें । रामजी कथी के कमी देले बानीं ?

दोस्त : (मुँह फेरि के) का बड़ले बा ? (सोझा) गाय हव ?

बिदेसी : हं, एगो गाय बिआ । कोराई, चोकर, भूँसी राखल बा, खूब खिअइहें ।

दोस्त : जवन ससुरारी दहेज मिलल रहे ?

बिदेसी : हं-हँ । एगो सलाह बा । हमार घर राउर घर तनी दूर बा । कभी काल आ के हाल चाल लेत रहब ।

दोस्त : हई चाभी लऽ । जुग जबाना खराब बा । लोग का कही ?

बिदेसी : जब हमार राउर मन साफ बा त केहू का करी ?

दोस्त : अच्छा ठीक बा, जा ।

http://bhojpurisahityangan.com

बिदेसी : राम राम दोस्त !

दोस्त : राम राम भाई !

(बिदेसी बाहर जातारन । प्यारी सुन्दरी मंच पर आवतारी । बिदेसी के दोस्त मंचे पर बाड़न ।)

प्यारी : (बिदेसी का दोस्त से) ए रवों, उहाँ के देखलीं हाँ ?

दोस्त : केकरा के ?

प्यारी : रउआ अपना दोस्त के ?

दोस्त : हँ, देखलीं हाँ ।

प्यारी : कहाँ देखलीं हाँ, तनी बताईं ना ।

दोस्त : टीसन पर देखलीं हाँ, टिकठ कटा के रेल में बइठल ।

प्यारी : ए रवों, जाईं, भेंट हो जाई ?

दोस्त : आरे ओहिजे बाड़न ? झाझा निअरवले होइहें ।

प्यारी : कुछ कह गइलन हा ?

दोस्त : काहल छोड़ हमरा के पक्का पहचान दे गइलन हा । हई ल चाभी । देखिहऽ, रिंग ढीला बा, दबा के रखिह । जानत बाड़ू चाभी कहाँ के ह ? तीसरा अँगनई में कोनियाँ घर बड़हू नूं ? ओह में अलमारी बा ?

दोस्त : हँ ।

दोस्त : ओही में लूगा-सारी बा, खूब पेन्हिह । गाय हव ?

प्यारी : हँ, बिआ ।

दोस्त : गाय के अतना खिअइह कि कबज जाय ।

प्यारी : अच्छा ।

दोस्त : खूब रबड़ी, मलाई आ अनारकली बिसकुट चाभल करिहऽ ।

प्यारी : का हमरा से मजाक करतानीं !

दोस्त : दोस्त का जनाना से मजाक कइल जाला ?

प्यारी : अब का करीं हो दादा !

http://bhojpurisahityangan.com

समाजी : (चौपाई)

सुनि प्यारी पिउ गये परदेसा
तेहि छन हो गईं पागल भेसा
याद परे जब पती पेयाना
साँस लेत लागे जनु बाना
रोवन लागे धुनि-धुनि छाती
सूझे तनिक दिन ना राती

(प्यारी घनी बिलाप करतारी)

प्यारी : (गीत-१)

करि के गइलन बलमुआँ निरासा !
गवना करा के सँइयाँ घरे छोड़ि दिहलन,
गइलन बिदेस हमे करि के बेकासा । निरासा···
सँइयाँ के सुख हम कुछुओ ना जनलीं,
बिचहीं बिधाता बितवलन तमासा । निरासा···
सतदेव सत राखऽ अरज करति हूँ,
दुख में दया करऽ शंकर जरा सा । निरासा···
कहत भिखारी भगवती सहाय होखऽ
सँइयाँ मिला के पुरा देहु आसा । निरासा···

(गीत-२)

घरवा के ना तनिको उदेस कइलन,
जब से बिदेस गइलन साजन मोर ।
गवना करा के सँइयाँ घरे छोड़ि दिहलन,
गइलन पुरुबवा के ओर । जबसे···
खत-खबर एको ना भेजलन,
हो गइलन निपटे कठोर ।

http://bhojpurisahityangan.com

दाढ़ी धरत रहीं, पँइयाँ परत रहीं
कहि–कहि लाख–कड़ोर । जबसे···
दया तनिक उनुका नाहिं लागल
भगलन बँहियाँ झकझोर ।
सँइयाँ के सुख हम कुछुओ ना जनलीं
देखलीं ना काला चाहे गोर । जबसे···
चहुँ दिसि चितवत बीतत रात-दिन
कतहूँ ना लउके अँजोर ।
कहत भिखारी अब जिअल कठिन बा
नयना से ढरकत बा लोर । जबसे···

(गीत–३)

कवने अवगुनवें पियवा हमें बिसरवलन, पियआ हमें बिसरवलन हो,
कियां पिया के मतिया बउराइल हो राम ।
जइसे सपनवाँ अपना पियाजी के देखलीं,अपना पियाजी के देखलीं हो,
जिउवा में सनाक देना समाइल हो राम ।
जब हम जनितीं अपना पिया का पाछा लगतीं अपना पिया का
पाछा लगतीं हो, जरिये के हउवे हमार भुलाइल हो राम ।
कहत भिखारी पिया फाँसी देके भगलन, पिया फाँसी देके भगलन हो,
अधजल में जिउआ बा टँगाइल हो राम ।

समाजी (चौपाई)

तेहि अवसर बटोही एक आये ।
तासो प्यारी दूख सुनाये ।।
पति गुन कहि-कहि रोवन लागी ।
सुनि बटोही के धीरज भागी ।।

(बटोही पूछ रहल बाड़े बाजा बजनिहार सजवहिया से)

http://bhojpurisahityangan.com

बटोही : ए बबुआ ढव-ढब !

समाजी : का ह बाबा ?

बटोही : हम टीसन पर जाइब ए बबुआ !

समाजी : ए बाबा हइहे रास्ता सीधे टीसन पर चल जाई ।

बटोही : अच्छा ए बबुआ, ई बतावऽ कि कलकाता के मसूल कतना बा ।

समाजी : कलकाता के मसूल एह घरी तीस रुपया लागी ।

बटोही : (चिहा के) तीस रुपया लागी ? सवा रुपया में ना फरिआई ?

समाजी : सवा रुपया में त टिकठे ना मिली महराज !

बटोही : बबुआ, कम सुने लऽ का ?हम कहतानी रेल, तूं कहतारऽ टिकठ ।

समाजी : टिकठे ना कटइबऽ त रेल प कइसे चढ़बऽ ?

बटोही : का बबुआ टिकठ प चढ़ा के रेल में धसोर दिआई ?

समाजी : ना महाराज, तीस गो रोपेया देबऽ त एगो टिकठ मिली ।

बटोही : टिकठ कथी के ?

समाजी : कागज के ।

बटोही : कती मूटी के ?

समाजी : हती मूटी के ।

बटोही : हमरा के बुरबके समझतारऽ ? तीस गो रोपेया लागे जात बा त नान्ह-बार के सूते-बइठे लायक ना होई त लेके का होई ?

समाजी : कवनो घर दुआर ह ?

बटोही : अच्छा ए बबुआ, तीस रोपेया टिकठ में लाग गइल । रेल में कतना लागी बबुआ ?

समाजी : रेल में एको पइसा ना लागी ।

बटोही : अच्छा ए बबुआ रेल में हमार एको पइसा ना लागी त टिकठ के कवन काम बा ? हम रेल में बइस के दमदमवले चल जाइब ।

समाजी : ए बाबा, बिना टिकठ लेले रावा रेल में चढ़ब त दोबरी चार्ज लाग जाई । ना त छव महीना जेहल के खिचड़ी खाये के परी ।

बटोही : ए बबुआ, ई त घरो छोड़ला के बड़ा भारी रोग भइल ।

समाजी : ए बाबा, त खरचे-बरचे रावा पास में ना रहे त कलकाता का चल देलीं ? पगरी बन्हा के, लाठी लेके, सेरवानी झारि के चल देले बानीं ।

http://bhojpurisahityangan.com

बटोही : हम का जानत बानीं कि रेल में आ टिकठ में एके हाली दाम बुकनी हो जाई हो ?

समाजी : ए बाबा, आज कल मसूल बढ़ गइल बा ।

बटोही : बढ़ जाला अघेली-सूका कि एके हाली दहाना के दहाना ?

(प्यारी सुन्दरी खड़ा हो जातारी)

प्यारी सुन्दरी : ए बाबा !

बटोही : का बबुआ, कुछ कहबऽ का ?

समाजी : हम रावा से कुछ नइखीं कहत । होने बाड़ी भगतिन ।

प्यारी० : ए बाबा !

बटोही : का बबुआ, कुछ कहबू का ?

प्यारी० : हम पूछतानीं जे रावा कहाँ जाइब ।

बटोही : हमरा से ? कलकाता हो बबुआ । ओह बबुआ से रेल के भाड़ा बूता पूछतानी, तोहरा से कुछ ना हो, तूं जा ।

प्यारी० : ए बाबा, हम रउआ से एगो आपन दुख कहब ।

बटोही : का भइया, हम कवनो ओझा-गुनी हईं ?

प्यारी० : ओझा-गुनी के बात नइखे ए बाबा ! जब से हमार पती परदेस चल गइलन तब से एगो चोठी-चपाठी ना भेजलन हा ए बाबा !

बटोही : ओ, पाठी भुलाइल बा । खूटी में गाड़ के चरही में बाँध देला, ओही पर भला मचत रहिती ।

प्यारी० : पाठी नइखे भुलाइल । हम रावा से पूछतानी कि रावा कहाँ जाइब । गइलन तब से एको चोठी ना आइल ।

बटोही : ओ, मालूम भइल, पेट बथत बा । का खइलू हा, फुलवरी ?

प्यारी० : कुछुओ ना ए बाबा !

बटोही : ओ, एक ढेबुआ भर आदी खा लीहऽ ।

प्यारी० : ए बाबा !

बटोही : जतना अयगुन होई सब पचा दी ।

प्यारी० : ए बाबा, रावा सुनात नइखे ?

बटोही : आ रे पागल, हमरा सुनाते नइखे ? ई जुलुमी दवा ह, जुलुमी ।

http://bhojpurisahityangan.com

प्यारी० : हमार पेट नइखे बथत ए बाबा ! जब से हमार पती जी परदेस में गइलन तब से एको चीठी आ चपाठी ना भेजलन हां हो बाबा !

बटोही : मालूम भइल । ओ, पाठी सियार ले गइल बा । एगो कि दू गो रे ? दू गो ले गइल होई त एह अकाला में राजे बुरुज भइल ।

प्यारी० : हे ? पाठी सियार नइखे ले गइल । जब से हमार स्वामी जी परदेस गइलन तब से एको जोह-जाह ना मिलल ह ए बाबा !

बटोही : ओ ? स्वामी कवन चीज रे ?

प्यारी० : ए बाबा, हमरा घर के सवाँग ।

बटोही : त हइसे नूं फरिआ के कहेला । तब से तें बीस गो भेंवता का कइले बाड़िस ? के, ससुर ?

प्यारी० : ना ।

बटोही : भसुर ?

प्यारी० : ना ।

बटोही : देवर ?

प्यारी० : ना ।

बटोही : जाउत ?

प्यारी० : ना ।

बटोही : फेरु दूर होले कि ना । एक हाली कहेली कि हमरा घर के सवाँग हवन, एक हाली कहेले कि केहुए ना । ई बाबा के बुरबक समझ लेले बाड़ी । अब बुरबक का साथे बुरबक लेखा बतिअवला से फरिआई । ई बताउ जे नाता में केहू लागे लहू ।

प्यारी० : हँ ए बाबा !

बटोही : के ?

प्यारी० : ए बाबा, पुरुष ।

बटोही : ओ बुझ गइलीं—भतार

प्यारी० : हँ ए बाबा !

बटोही : तब, तें, हमरा से .....

प्यारी० : ए बाबा, रउआ ओनिये कावर जातानी, तनी खोज ढूँढ़ के पता लगा के रउआ तनी लिअवले आइब ए बाबा !

http://bhojpurisahityangan.com

बटोही : ई बताउ कि हम चलल बानीं नगद नारायन दाम कमाये कि देसा-देसी तुम्हारा भतार खोजता है ?

प्यारी० : ए बाबा, रउआ हमार देह नइखीं देखत का ?

बटोही : आउर बनल । रे पागल, भला हम तोर देह देख के का करब ए ? केकरा घर के ना सर-सवाँग देस-परदेस कमाये जाला ? त का घर के बेकत आपन प्रान त्याग देली ? हमहूँ त अपना घर के एगो सर-सवाँग हईं जे दम-दमवले चलल बानीं बहरा कमाये खातिर ।

प्यारी० : ए बाबा, पाव भर बनावल हमरा से ना घोंटाय ।

बटोही : ना हमार बाबू ! का खाइल जात होई ? ना ढुकते होई ना घसते होई । बूढ़ हो गइल बानीं, हमार अकिलो कतहूँ हेराइल बा ? (समाजी का ओर; बबुआ रे, हमरा बुझात नइखे कि एह उमर के जनाना के आँखि का सोझा सवाँग जो ना रहे त मन करत होई कि कुँआ में गिर जाईं ।

प्यारी० : ए बाबा, चलीं कुछ अन-जल क लीं ।

बटोही : का अन-जल करीं रे ? तोरा दुख के मारे ओटा खिआइ गइल बा ।

(बटोही बइठतारे ।)

समाजी : (पूर्वी)

सिरि गनपति के चरन के सरन गहि,
कहि के सुनावत बानीं गीत में बिदेसिया ।
मचिया ऊपर धनि, छतिया में हनि-हनि
पति के धेयान ध के रोवे प्यारी धनियाँ ।

प्यारी० : (गीत—तेवड़ा)

अब पत राखऽ श्री भगवान !
करि गवन मोहिं छोड़ि भवन, पिया
कइलन पुरुब पेयान । अब पत···
ना मालूम केहि देस गइलन,
तनी ना मिलत ठेकान । अब पत···

http://bhojpurisahityangan.com

राम ना बिसरत एक छन, मोर
भइल बा बयस जवान । अब पत···
अब ले कसहूँ धीर धरीं, हम
करिके छाती पखान । अब पत···
कहे भिखारी पिया का पद में
रहत निसि-दिन ध्यान । अब पत···

गीत (पूर्वी)

करि के गवनवाँ भवनवाँ में छोड़ि कर
अपने परइलऽ पुरुबवा बलमुआँ ।
अँखिया से दिन भर गिरे लोर ढर-ढर
बटिया जोहत दिन बीतेला बलमुआँ ।

बटोही : आरे हमार बाबू, चुप रहऽ । गइल बाड़न त ओतहीं रहिहन ? अइहन नूं ।

प्यारी० : (गीत)

गुलमा के नतिया, आवेला जब रतिया त,
तिल भर कल ना परत बा बलमुआँ ।

बटोही : आ का कल परो हो दादा !

समाजी : तूँ काहे रोअतारऽ ऐ बाबा ?

बटोही : बेचारी के दुख देखि के जीव ब्याकुल बा ।

प्यारी० : (गीत)

तोहरे कारनवाँ परानवाँ दुखित बाटे
दया क के दरसन दे द हो बलमुआँ ।
काइ कइलीं चूकवा कि छोड़लऽ मुलुकवा तूं ?
कहलऽ ना दिलवा के हलिया बलमुआँ ।

http://bhojpurisahityangan.com

साँवली सुरतिया सालत बाटे छतिया में
एको नाहीं पतिया भेजवलऽ बलमुआँ।
कवना नगरिया डगरिया में पिया मोर
करतऽ होइबऽ घर-बास हो बलमुआँ।
घर में अकेले बानीं, ईसवर जी राखऽ पानी
चढ़ल जवानी माटी मिलता बलमुआँ।
बिरह के कूपवा में, जोगिनी का रूपवा में
तोहरे के अलख जगाइब हो बलमुआँ।
मदन सतावत बाटे, छतिया फाटत बाटे
अनवाँ जहर लेखा लागत बा बलमुआँ।
जनितीं त ध के हाथ, छोड़ितीं ना तनी साथ
दिन-रात सँगही में रहितीं बलमुआँ।
ताकतऽ बानीं चारू ओर, पिया आ के करऽ सोर
लवटो अभागिनी के भगिया बलमुआँ।
मोरा लेखा दुखिया के मुखिया ना जग केहू
भुखिया बा तोहरे दरस के बलमुआँ।
निज हाथे तेगा धरि, गरदन काटि करि
माटी में मिलाइ के परइलऽ बलमुआँ।
कहत भिखारी नाई, आस नइखे एको पाई
हमरा से होखे के दीदार हो बलमुआँ।

(रोअत-रोअत बटोही के देह पर गिर जातारी)

बटोही : कहब, कहब।

प्यारी० : (बटोही से)

गीत (पूर्वी)

कहाँ जइबऽ भइया ? लगावऽ पार नइया तूं
मोर दुख देखि ल नेतर से बटोहिया।

http://bhojpurisahityangan.com

सुनऽ हो गोसइयाँ, परत बानीं पइयाँ,
रचि-रचि कहिहऽ बिपतिया बटोहिया।
छोड़ि कर घरवा में, बीच महधारावा में
पियवा बहरवा में गइलन बटोहिया।
जइबऽ तूं ओही देस, देखि लऽ नीके कलेस,
ईहे सब हलिया सुनइहऽ बटोहिया।
नइहर ईयवा, तेयागि देलन पियवा,
असमन जनिहऽ जे धियवा बटोहिया।
कइसे के कहीं हम, नइखे धरात दम
सरिसो फुलात बाटे आँखि में बटोहिया।
कहत भिखारी, नीके मन में बिचारि देखऽ
चतुर से बहुत का कहीं हो बटोहिया।

(पूर्वी)

बटोही : कइसन पिया तोर ? करिया कि हवन गोर[1]?
सचमुच रूपवा बता द प्यारी धनियाँ।
जाइ के कहब हम, तोहरा ले नाहीं कम
अधिका बुझाई जहाँ तक प्यारी धनियाँ।
मन में सबुर करऽ, जयऽ शिव, हरिहर
कहत भिखारी कारज होई प्यारी धनियाँ।

प्यारी० : करिया ना गोर बाटे, लामा नाही हउवन नाटे,
मझिला जवान साम सुन्दर बटोहिया।
घुठी प ले धोती कोर, नकिया सुगा के ठोर।
सिर पर टोपी, छाती चाकर बटोहिया।
पिया के सकल के तूं मन में नकल लिखऽ
हुलिया के पुलिया बनाइ ल बटोहिया।

---

१. सूत के पुलिया।

http://bhojpurisahityangan.com

आवेला आसाढ़ मास, लागेला अधिक आस,
बरखा में पिया घरे रहितन बटोहिया।
पिया अइतन बुनियाँ में, राखि लिहतन दुनियाँ में
अखड़ेला अधिका सावनवाँ बटोहिया।
आई जब मास भादो, सभे खेली दही-कादो,
कृस्न के जनम बीती असहीं बटोहिया।
आसिन महीनवाँ के, कड़ा घाम दिनवाँ के,
लूकवा समानवाँ बुझाला हो बटोहिया।
कातिक के मासवा में, पियऊ का फाँसवा में
हाड़ में से रसवा चुअत बा बटोहिया।
अगहन पूस मासे, दुख कहीं केकरा से ?
बनवाँ सरिस बा भवनवाँ बटोहिया।
मास आई बाघवा, कँपावे लागी माघवा त
हाड़वा में जाड़वा समाई हो बटोहिया।
पलंग वा सूनवाँ, का कइलीं अयगुनवाँ से
भारी ह महिनवाँ फगुनवाँ बटोहिया।
अबीर के घोरि-घोरि, सब लोग खेली होरी
रँगवा में भँगवा परल हो बटोहिया।
कोइलि के मीठी बोली, लागेला करेजे गोली
पिया विनु भावे ना चइतवा बटोहिया।
चढ़ी वइसाख जब, लगन पहुँची तब
जेठवा दबाई हमें हेठवा बटोहिया।
मंगल करी कलोल, घरे-घरे बाजी ढोल
कहत भिखारी खोजऽ पिया के बटोहिया।

(प्यारी सुन्दरी आपन बिपति गावते जात बाड़ी)

http://bhojpurisahityangan.com

गीत—१

प्यारी० : पिया मोर गइलन परदेस, ए बटोही भइया !
रात नाहीं नींद दिन तनी ना चएनवाँ, ए बटोही भइया,
सहतानी बहुते कलेस, ए बटोही भइया !
रोवत-रोवत हम भइलीं पगलिनियाँ, ए बटोही भइया,
एको ना भेजवलन सनेस, ए बटोही भइया !
नाहके जवानी हम के दिहलन बिधाता, ए बटोही भइया,
कुछ दिन में पाकि जइहन केस, ए बटोही भइया !
कहत भिखारी तोहरा गोड़ के लउँड़िया, ए बटोही भइया,
करऽ पिया के कसहूँ उदेस, ए बटोही भइया !

गीत—२ (बिरहा)

चढ़ल जवानी जोर
पियऊ हो गइलन कठोर,
हमें छोड़ के लोभइलन परदेस !
छोड़ के लोभइलन परदेस बटोही भाई
गवना कराके दिहलन घरवा में बइठाई
का कइलीं कसूर जे परदेस गइलन पराई
एकर कुछुओ हालत बालम ना देहलन सुनाई
पियऊ का बियोग में प्रान छूटि जाई
हमरे सिरवे बीतत बा, ना दोसरा का बुझाई
लहकत बा करेज आ के अगिया के बोताई ?
कहे भिखारी तनिक पिया के दरसन द कराई
हमें छोड़ के लोभइलन परदेस ।

http://bhojpurisahityangan.com

गीत—३

करउँ प्रनाम, काम अड़बड़ बा,
सुनहु बटोही मोर भाई !
छल करिके पिया पुरुब देस में
चलि गइलन बिसराई ।।
प्रान पिया बिनु कुछु ना सोहाता
उर में दाह अधिकाता ।
बाट चलत में गोड़ भहराता,
बसि गइलन कलकाता ।।
अपने चलत ना अब लगि केहु के,
कुछुओ कइलीं बुराई ।
ना जाने केहि हेतु बिधाता
दिहलन डबल सजाई ।।
धरम के भाई, होखऽ सहाई,
का - का दूख सुनाईं ?
स्वामीजी के चरन देखब तव
नया जनम होइ जाई ।।
पिया-पिया रटि-रटि प्रान तेजब हम,
अब ना बिपति सहाई ।
कहे भिखारी पिया प्रेम के फाँसी
दिहलन गले लगाई ।।

समाजी : (पूर्वी)

चलि भइलन राहे राही, बनि के अधिक दाही
पुरुब का देसवा में पहुँचे बटोहिया ।

http://bhojpurisahityangan.com

नगर - सहरिया वो हाटवा बजरिया में
करत बिदेसी के उदेस हो बटोहिया।
लोग से भरल मेला, कतहूँ ना लउकेला
माथ पर हाथ धके झँखेला बटोहिया।
रामजी के दया भइले, एक ओरि चलि गइले,
खुलि गइले पलक दइब के बटोहिया।
बइठि के सलोनी पास, खेलत रहलन तास
सनमुख परल नजरिया बटोहिया।
चीन्हि कर मने मन, होइ गइलन धने-धन,
प्यारी के खबर कहे लगलन बटोहिया।

बटोही (बिदेसी से) : सुनि लऽ बिदेसी बात, कइलऽ तूं बहुते घात
अबहूँ से चेतऽ दीन-दुनियाँ बिदेसिया।
तोर कुलवंती नारी, रोअतारी पूका फारि
काटि के तूं डालि दिहलऽ कुँआ में बिदेसिया।
ध्यान धके पति पर, फेंकरि - फेंकरि कर
मनि बिनु फनिक बेहाल बा बिदेसिया।
खेलतारऽ जूआसार, छोड़िकर घर - द्वार
घरनी लोटत बिआ धरनी बिदेसिया।
जल्दी से घर चेतऽ, दुखित नारी के हेत
अतने गरज के अरज बा बिदेसिया।
कहत भिखारी फुलवारी के उजारि देलऽ
पूत होके भइलऽ जमदूत तूं बिदेसिया।

बटोही : दोहा

सुनहु तात एक बात तुम, जुआसार को त्याग
कहना मानऽ नाहीं त , कुल में लागी दाग

http://bhojpurisahityangan.com

(चौबोला)

कुल में लागी दाग जोग यह मानहु बचन हमार
आगि लगावहु एह नोकरी में, बजर परहु जुआसार
तोरी धनी भइली जस बन के कोइलिया
करे पिउ - पिउ तोहि के पुकार
पथर के छाती तोहार हउवे बिदेसी
ना त फाटत तुरत दरार

(गीत—लोरिकायन के लय)

बटोही : अइलऽ कलकातावा त खतवा भेजइतऽ ताबर हो तोर ।
रोपेया भेजइतऽ मनीआडर से, गँइयाँ में होइत हो सोर ।
रोपेया खोंइछवा में लेइं कर, गुनवाँ गइती हो तोर ।
दुअरा पर रहितऽ त केहू नाहीं देखित करिया गोर ।
सुनरी का लोरवा से चूनरी होखत बा सर हो बोर ।
कहत भिखारी चेतऽ अबहूँ से, करत, बानीं निहोर ।

(गीत—लय कुँवर बिजई के)

बटोही : बबुआ राम नाम करऽ सुमिरनवाँ हो ना ।
बबुआ लागि गइल नीमन लगनवाँ हो ना ।
बबुआ खोजि कर भइलीं हरानवाँ हो ना ।
बबुआ सहजे भइल दरसनवाँ हो ना ।
घर में रोवत हवहू भीतरे जनानावाँ हो ना ।
तेज देले वाड़ी सभ आभरनवाँ हो ना ।
नइखे गतर पर एकहू गहनवाँ हो ना ।
लूगा पहिरत वाड़ी फाटल-पुरानवाँ हो ना ।
बबुआ कहियो-कहियो करेली भोजनवाँ हो ना ।
लवले बाड़ी तोहरा सूरत में परानवाँ हो ना ।

http://bhojpurisahityangan.com

बाहर चाभत बाड़ऽ पाकल पाता पानावाँ हो ना ।
बबुआ बाँव नाहीं जाई कलपानवाँ हो ना ।
बबुआ जलदी से चलि जा मकानवाँ हो ना ।
सीखऽ गानावाँ के करे के रचनवाँ हो ना ।
तनी कइले जइहऽ नीके पहचानवाँ हो ना ।
बबुआ मानिलऽ भिखारी के कहनवाँ हो ना ।

(आल्हा के लय)

बटोही : भजि ल रामचन्द्र के नाम, तुरत विदेसी चल जा घर के ।
देरी करे के नइखे काम, दिन-रात चाहे घरी-पहर के ।
देखत नइखऽ निमन जबून, बहुत दिनन से रहले फरके ।
लउकी तबहीं होई दिदार, लगिहन नैना से लोर ढरके ।
मन में अचरज बाटे बुझात, लकड़ी संघत करी लहर के ।
काहे ना जरि के होइबऽ छार, बीगऽ प्याला भरल जहर के ।
पद अनहद के करऽ बिचार, पदवी पवलऽ ऊँचा दर के ।
विद्या से भइलऽ भरपूर, काहे लगलऽ नीचा खरके ।
लगन महूरत पहुँचल ठीक, दहिना अंग लागल अब फरके ।
पिउ प्यारी से होई मिलाप, कहत भिखारी दीअर पर के ।

(लय पचरा)

बटोही : बात एक सुनिल बिदेसी भइया, घरवा से चलि अलहूँ ।
तोहार जनाना के दुखवा देखि के सुनि के पतिअलहूँ !
टीसन पर आइ बिदेसी भइया रेल पर चढ़ि गलहूँ ।
दिन-रात लागल बिदेसी कलकत्ता में उतरलहूँ ।
खोजत-खोजत बिदेसी कतहूँ पता तनिको ना पलहूँ ।
प्यारी का कारनवाँ पाँच गो रोपेआ अबले ना कमलहूँ ।

http://bhojpurisahityangan.com

झूठहू का फेर में मत परिहऽ, असले कहल कहलहू ।
कहत भिखारी आजु हम भेजब कसहू बबुआ बलहू ।

(लय पचरा)

बटोही : दुलहा बनि के गइलऽ बिआह करे
बान्हि के माथवा पर मउरिया ।
हथवा धइके लेइ अइलऽ बनाइ लेल बहुरिया ।
तेकरा के छोड़ि के परइलऽ अइलऽ बबुआ देस दूरिया ।
खाये के ना घर में हवहिस जव-मटर-मसूरिया ।
हमरा से कहली जे जाके कहिहऽ,कवन कइलीं हम कसूरिया।
दुखवा सुनि के बरत नखहू देह में तनिको सुरबुरिया ।
दुअरा पर रहितऽ बिदेसी,प्यारी बनइती-खइतऽ पूरी-जउरिया,
घर के टहल करितऽ चाहे करितऽ केहू के मजूरिया ।
मिलि-जुलि के रहितऽ बिदेसी
कइले रहिती मनवाँ में सबुरिया ।
खुसी से पहिरती प्यारी सारी चोली गहना गुरिया चुरिया ।
पचरा के लइया बिदेसी हउए पद हउए भोजपुरिया ।
कहत भिखारी नाई हम हईं कानकुबज कुरिया ।

ए बबुआ, हम तोहरा घर से आवत बानीं । ए बबुआ तोहार बेकत के दुख ना देखल गइल हा त दूगो मजदूरा लगा के रोअवले आवतानीए बबुआ !

(पूर्वी)

बिदेसी : बान्हि के पगरिया रगरिया मचावतारऽ
कवना नगरिया के हवऽ तूं बटोहिया ।
हमरी जनानावाँ मकानावाँ भीतरवा में
साधि कर रहेली भवनवाँ बटोहिया ।

http://bhojpurisahityangan.com

चीन्हि ले लऽ कइसे, बतावऽ हमें जइसे तूं
जनियाँ मकनियाँ भीतर के बटोहिया ।

बटोही : कायापुर घर हउए, पानी से बनावल गउए
अचरज अकथ ह नाम हो बिदेसिया ।
चललीं बहरवा से कानवाँ परल मोरा
सती का बिपति के मोटरिया बिदेसिया ।
हउई बटोहिया, लागल जब मोहिया त
जोहिया लगाइ कर अइलीं बिदेसिया ।
तोहरा जनानावाँ के आसरा लागल बाटे
कब आइ के देबऽ दरसनवाँ बिदेसिया ।
मोरवा मचावे जइसे सोरवा गरज सुनि
प्यारी छपटाली राही देखि के बिदेसिया ।
छोड़िकर घरवा के बहरी ओसरवा में
जल बिनु मछरी के हलिया बिदेसिया ।
बीसवा बरिसवा के, अबहीं ना केस पाके
साँवर बरन प्यारी धनियाँ बिदेसिया ।
माथवा के बारवा भँवरवा समान बाटे
मुँहवाँ दीपकवा बरत बा बिदेसिया ।
फूलवा सरिस जगदीस जी बनाइ कर
पति के बियोग देइ दिहलन बिदेसिया ।
सुनिकर कानवाँ में, गुनिकर मनवाँ में
कहत भिखारी घरे चलि जा बिदेसिया ।

पूर्बी

समाजी : अतना सुनत बात, मुरछा बिदेसी खात
गिरि गइले धरती धड़ाम से बिदेसिया ।

http://bhojpurisahityangan.com

जोंस नइखे तनवाँ में, होस नइखे मनवाँ में
प्यारी-दुख सुनि के बेहोस बा बिदेसिया ।
पतरी तिरियवा, लपकि ध के पियवा के
अँचरा से करेली बेयार हो बिदेसिया ।
ताकतारन आँख खोलि, मुँह से ना आवे बोली
धिरिजा धरा के पूछे रंडिया बिदेसिया ।

बटोही : एके हाली हइसे हड़बड़ा के गिर गइलऽ ? ल, सब कपड़ा लेटा गइल, काथी से झारीं, ना ईंटा बा, ना पथल बा । कहऽ ना, बबुआ के ताखी[1] लोघड़ा के हेइजा भागल बा । बड़ ताखी बनवले बाड़ऽ बबुआ ! जूना-कुजूना पाव भर सतुआ घोर के खा सकेलऽ ।

बिदेसी : ए बाबा, रावा तनी बइठीं ।

(बटोही बइठतारे आ बिदेसी घर का भीतर जातारे)

चौपाई

रंडी : मन में कष्ट भइल कहऽ काहे ?
तन कछु पीर कि घर का दाहे ?

दोहा

बिदेसी : तन के पीर कछुक नहीं, लागी घर के आह ।
प्यरी के दुख समुझ के, होत कलेजा दाह ।

रंडी : प्यारी कवन ?

बिदेसी : घरवाली ।

रंडी : हम हईं बनवाली ?

बिदेसी : हाँ-हाँ तुम भी हो

रंडी : हम हैं कि वह ?

बिदेसी : दोनों ।

---

१. टोपी ।

http://bhojpurisahityangan.com

रंडी : क्या आप यहाँ रहना चाहते हैं कि घर जाना ?

बिदेसी : घर जाना चाहते हैं ।

रंडी : ए रवों, जब रावा घरहीं जाये के रहे त हमार हाथ-बाँह काहे के धइलीं ?

बिदेसी : तहरा के कवनो हम छोड़ देतानी ?
(बटोही से) ए बाबा !

बटोही : का बबुआ, आ गइलऽ ? कवनो प्रकार से अपना घरे-दुआरे जइबे करऽ ।

बिदेसी : ए बाबा, हम त अपना घरे जइबे करब, रउआ बहुत देरी भइल । रउवा कुछ अन-जल करीं ।

बटोही : हमार त अन-जल कइल ओही दिन बिसर गइल, जवना दिन ओकर दुख देखलीं । तीन दिन त हमरा झाड़ा फिरला भइल ।

बिदेसी : का कहीं ए बाबा !

बटोही : का बबुआ, मिजाज ठीक बा नूं ?

बिदेसी : जीव त ठीक बा । रउआ से कहे में कुछ लाज लागता ।

बटोही : कवन अइसन बात बा कि तोहरा कहे में लाज लागता ?

बिदेसी : ए बाबा, हम एही से नइखीं कहत कि रावा कहीं कह देनी ....।

बटोही : का बबुआ, हमरा के एके हाली पुरान लुभुकी समझ गइलऽ? पाव भर अन पचावतनी, एक लोटा जल पचावतानी, एगो बात हमरा से ना पची हो ? का जाने, मने ह कहला बिनु ना रहाई त उहो एकांत में कहब बबुआ । उहो एकांत जगहा टिपा लेले बानीं । एतवार के दिन हबड़ा पुल पर बइठ के कहब जे ना केहू रही, ना केहू सूनी ।

बिदेसी : ए बाबा, घरे से परदेस अइलीं त आउर एगो सादी एहिजा क लेलीं ।

बटोही : ए बबुआ, ईहे नीमन काम कइलऽ । लायेक बेटा के इहे काम ह कि जहाँ जाये तहाँ कुछ हाथे लगा लेवे । कवनो प्रकार से तूं अपना घरे-दुआरे चल जा ।

http://bhojpurisahityangan.com

रंडी : ए रवों, ई के ह ?

बिदेसी : ना तूं घर में रहबू ?

बटोही : ए बबुआ, ई के ह ?

बिदेसी : ए बाबा, उहे जनाना ह जवना से हम सादी कइले बानीं।

बटोही : खुद ऊहे हइले हई ? हटऽ बउराह, तनी हमरो के देखे द।

रंडी : ए रवों चलीं घरे, लड़िका रोअत होइहें स।

बिदेसी : ना ओनहीं रहबू ?

बटोही : का बबुआ; इनका देह से लड़िका-फड़िका बाड़न स ?

बिदेसी : हँ ए बाबा।

बटोही : क गो बबुआ ?

बिदेसी : दू गो ए बाबा।

बटोही : खास इनका देह से दूगो ?

बिदेसी : हं ए बाबा।

बटोही : तहरा देह से अभी एको ना ह ?

बिदेसी : आ एके बातवा नूं भइल बाबा !

बटोही : हम उनुका के बड़ा फरहर देखतानीं ए बबुआ। खास टटुआनी के कान कटले बिआ। आ फरहरे ले ना ए बबुआ, बड़ा रहनदार देखतानी।

बिदेसी : हं ए बाबा, रहन-सुभाव देख के हम मोहा गइलीं हां।

बटोही : हँ ए बबुआ, देस-परदेस सगरो घुमलीं बाकी अइसन मेहरारू से भेंट ना भइल रहे। बाकी आज सुजनी ह आ संजोग ह तबे भेंट भइल। ना त हइसे भला कवन मेहरारू होई जे मरद के कपार पर चढ़ल चले हो ?

बिदेसी : ए बाबा, तनी बइठीं।

(रंडी के गाना)

रंडी : नाहीं कहब जाये के, हम रहब केकरा पास ? राजा !
जहाँ-जहाँ जइबऽ तहाँ जवरे लिअवले चलऽ

http://bhojpurisahityangan.com

बटोही : तूं का जइबू सहबाला ?

रंडी : माई-बाप छूटल, आखिर भइल उपहास, राजा ! नाहीं···

बटोही : उपहास के करी हो ? उपहास करी से अपना घरे रहे। (बिदेसी से) बबुआ, जवना सती के तूं हाथ-बाँहि घइलऽ ओह सती के तूं छोड़ देलऽ, एह में अझुराइल बाड़ऽ। ई जादू जानेले। कवनो प्रकार से घरे चल जा।

(रंडी खड़ा होतिआ)

बटोही : बबुआ, मुँह पर के बड़ाई कइल नीमन ह। इनकर सारी कइसन बा, बेलाउज कइसन बा, सिंगार-पटार कइसन बा।

रंडी : जिअते हमें ना पइबऽ, पाछे खानी मोह खइबऽ
प्रान तेजब अबहीं लाके गरदन में फाँस, राजा ! नाहीं...

बटोही : फाँसी काहें लगइबू हो ? तूं होसियार हो के गँवार भइल बाड़ू ? (बिदेसी से) बबुआ, बिआह में एगो कलसा धराला। कलसा का नीचे बालू बिछावल जाला से मालूम होला कि जलवामयी हवन। तवना पर जब बिछावल जाला। ऊ कच्छप नारायन हवन। तवना पर से कलसा घइल जाला। मालूम होला कि समुद्र हवन। छीर समुद्र में बिस्नू भगवान रहेले। एह से ओह में कसइली डाल दिआइल। बिस्नू भगवान के साथ लछिमी रहेली एहसे ओह में पइसा डाल दिआइल। बिस्नू भगवान के नाभी से कमल। आम के पलो कलसा में, नीचे डंटी क दिआला। तवना पर से चार मुँह वाला दिया धराइ जाला। ऊ ब्रह्मा हवन। अतना गवाह के सामने जवना सती के हाथ-बाँहि तूं घइलऽ ओह सती के छोड़ देलऽ, एकरा में आके अझुरा गइलऽ। एकरे जामल तोहरा मुँह में आग दी ?कवनो प्रकार से तूं घरे चल जा।

रंडी : तिरिया के बध होई, पातक से धर्म खोई,
सुनिलऽ लिखल बा,एकर मानऽ बिसवास,राजा ! नाहीं···

http://bhojpurisahityangan.com

बटोही : जाये द, बीस दिन में लवट के चल अइहें ।

बिदेसी : तूं रोअते-रोअते आपन प्रान देबू ?

बटोही : आ हा हा ! तूं ओकरा गोड़वा पर गिर परऽ । कहऽ हो, तोहरे अइसन आदमी देस-परदेस में असथिर नइखे रहे देत । (रंडी से) गजबे बाड़ू भाई ? तनी भर जाये देला त ।

रंडी : कहत भिखारी चुगला (साबसी) जनावत बाटे
कहाँ के दो पगला बटोही बदमास, राजा ।

(रंडी बटोही के माथ पर हाथ चला देतारी)

बटोही : (बिदेसी से) ए बबुआ, तनी हमरो के मार लेबे द ।

बिदेसी : ना ए बाबा !

बटोही : मेहरारू हो के मरद पर हाथ चलवले बिआ । एकरा मारहीं के रहल हा त ईंटा चला के मारित, पथल चला के मार दीत, चाहे गड़ासी से काटि के भाला से भोंकि दीत । ई हमरा के माथ पर मरले बिआ । तूं नइखऽ जानत जे हाथ से माथ पर मारला से आदमी परले पेसाब करेला । ऊ ढेर मरले बिआ, हम थोरहूँ मारब जरूर । ना दादा, गुंडा से हमार नाम कटि जाई । पगरी हमार हलुक हो जाई भाई !

बिदेशी : आहा, जाये ना दीं ।

रंडी : (गीत)

पिया पिरितिया लगाइ के, दूर देस मति जाहु ।
कहे भिखारी भीख माँगि के, हम लाइब तुम खाहु ।।
प्रातकाल में दरसन करि के, भिक्षा माँगकर लाऊँगी ।
अपने हाथ से सुन्दर भोजन, नितहीं तुझे कराऊँगी ।।
आहा, हे प्रान प्यारे, नैना के तारे, कहूँ जा मत बिसारे
केवल आसरा है तिहारे ।

http://bhojpurisahityangan.com

बदेसी : कही बात तुम साँच कामिनी ! हम से कहत बनै ना ।
पर एक कारन अहै ताहि में कहे बिनु जात रहै ना ।
बान समान चोट मोहिं लागत धरनी प्रान तजै ना ।
कहे भिखारी यह दुख भारी हम से जात सहै ना ।

रंडी : पूर्वी

सुनि कर बतिया काँपत बाटे छतिया, तूं
दोसरा का मतिया में परलऽ बलमुआँ ।

बटोही : फेन हमार नाम धराए लागल ।

रंडी : घरे चलि जइबऽ लवटि के ना अइबऽ तूं
आस तूरि के सब नास कइलऽ बलमुआँ ।
जइबऽ भवनवाँ परानवाँ तेयागि देहब
पाका जानऽ जनिहऽ कहनवाँ बलमुआँ ।
असल के हईं बेटी, इरिखे फँसल बा नेटी
कर तूरि घर जनि जइहऽ बलमुआँ ।
अइसन रहिया उपहिया के बात सुनि
मनवाँ उदास मति करिहऽ बलमुआँ ।
कहत भिखारी नाई, तेजि देलीं बाप-माई
कवन उपाइ हम करीं हो बलमुआँ ?

बटोही : (बिदेसी से) ।

रंडी में ना कुछ बाटे, कुत्ता जइसे हाड़ चाटे,
एको नाहीं घाट तूहूँ लगबऽ बिदेसिया ।
छोड़ि द अधरम, मिजाज क के नरम तूं
मनवाँ में करि लेहु सरम बिदेसिया ।
धरम का नाव पर चढ़ि के मउज करऽ
हरऽ बिरहिनियाँ के दुख हो बिदेसिया ।

http://bhojpurisahityangan.com

आवतानी घर देखि, चलि जाई सान-सेखी
डूबि मरऽ घूठी भर पानी में बिदेसिया।
तोहरी तिरियवा किरियवा के खाइ कर
कहतारी पति बिनु गति ना बिदेसिया।
बिनु देखे चैन ना, दिन चाहे रैन ना,
मैन बेचैन करत बा बिदेसिया।
बोलिया कोइलिया के गोलिया लागत बाटे,
होलिया समान फूँकि दिहलऽ बटोहिया।
आगि लागे धन में, पिलेग होखे तन में ओ
मति केहू परे रंडी फन में बिदेसिया।
जाके प्यारी धनियाँ के, हर लऽ हरनियाँ के
छोड़ि दऽ कुचलिया रहनियाँ बिदेसिया।
कहत भिखारी सरदारी अतने में बाटे
पनियाँ बहाने बोधऽ जनियाँ बिदेसिया।

रंडी : गाना

तोहे जाने ना देहीं पियारा ?
जो तुम चाहो कतहुँ को जाना,
हति देहु प्रान हमारा। तोहे···
अबहीं उमर के मैं काँचा बहुत हूँ,
मन में तूं करिलऽ बिचारा। तोहे···
निस दिन प्रेम के प्यासी रहति हूँ,
ललचत आँख बिचारा। तोहे···
रसिक पिया मोहे त्यागि न जाओ,
इतना करो उपकारा। तोहे···
कहत भिखारी अनते कहूँ मति जा,
प्रीतम प्रान अधारा ! तोहे···

http://bhojpurisahityangan.com

बिदेसी : गाना

मानऽ मानऽ तूं प्यारी हमार कहना ।
मुलुक में जाइब, जलदि फिर आइब,
हमरा त घर बा इहे अँगना । मानऽ···
जाइब त भर पेट दाना ना खाइब
इहवाँ लागल बा बहुत लहना । मानऽ···
राति के कवनो भाँति से ना सूतब
तोहरे में अधिक लागल चहना । मानऽ···
चाहे भिखारी खराब होइ जाइब
तोहरे त प्रेम के पेन्हब गहना । मानऽ···

रंडी : गाना

हमरा के पिया बिसरइहऽ मति हो ।
बहुत दिनन से आसा लागल पिया,
आसा निरासा करइहऽ मति हो । हमरा···
मन में धीरज धरऽ छाड़ ऽफिकिर पिया,
झूठहूँ के जिया हहरइहऽ मति हो । हमरा···
एही अरजी पर मरजी करहु पिया,
जियरा के मोर तड़पइहऽ मति हो । हमरा···
तोहरे सुरतिया में नैना लागल पिया,
अँखिया के मोर तरसइहऽ मति हो । हमरा···
कहत भिखारी सुनऽ सँइया रसिया,
उढ़री के नाँव धरवइह मति हो । हमरा···

बटोही : मानऽ बतिया बिदेसी, तूं चल जा घर के ।
प्यारी के दुख मो से कहलो ना जात बाटे

http://bhojpurisahityangan.com

कवनो बिधि राखतीया जीव जर मर के। मानऽ···
नयना में नींद परत एक छन नाहीं,
रात से बिहान करेली कहर के। मानऽ···
कहि-कहि के रोवत बिया एको के ना भइलीं,
पास के ना सास के ना ससुरा-नइहर के। मानऽ···
कहत भिखारी अरज मोर अतने बा,
अबहूँ से चेतऽ दीन दुनियाँ से डरके। मानऽ···

चौबोला

रंडी : माता, पिता, भाई, भउजाई तोहरे कारन राजा !
गेह-नेह सब सखी जाति-कुल, तेजलीं सकल समाजा ।।
नीति बिचारि के देखऽ धीरज धरि, प्रेम में होत अकाजा ।
कहे भिखारी राखऽ प्रानपति, बाँह गहे कर लाजा ।।

बटोही : तनी बोलऽ बिदेसी, तूँ जइबऽ कि ना ?
बहुत दिनन से कुमति ऽकमइलऽ
सुमति के सुपथ चलइबऽ कि ना ? तनी···
पर तिय संग रति कुंभ नरक मानऽ
धरम का कुंड में नहइबऽ कि ना ? तनी···
पापिन गिधिनियाँ के सोझा से दूर करऽ
गाढ़ में नइया बचइबऽ कि ना ? तनी···
कहत भिखारी तूं कहला के लाज राख
पुरुखन के नइयाँ बढ़इबऽ कि ना ? तनी···

(रंडी से) बाड़ी वालीबतिया तूं मानलऽ हो मत करऽ बे-बिचार ।
थोड़े कहे से तूं पूरा समुझिहऽ
नीमन बना ल रहनियाँ हो तूं त खुदे होसियार ।
हमरा कहे से बिदेसी के जाये द
मिलि जइहन छैला चिकनियाँ हो तोहार बनल बा बजार ।

http://bhojpurisahityangan.com

दया करके कुछ पुण्य कमा लऽ
बड़ी तोहार हउए सवतिनियाँ हो,ओकर कर उपकार ।
कहत भिखारी मरत बिया बिरहा से
सुन्दर बाड़ी प्यारी धनियाँ हो जिनकर हउअन भतार ।

रंडी : हट जा फजीहत करा देहबि तोहि के । (बटोही के धसोरत)
फुहरी-फुहर पेठवनियाँ पेठवलस बुरबक बटोही के ।

बटोही : ढेर परहेजल जीव के काल हो गइल । देखऽ बिदेसी, रेसमी चादर फाटल कि हाथे गोड़े सीकर भर देव ।

रंडी : हमरा से ज्यादा चटाका ना होइबऽ, सिखाबऽ मत मोहि के ।
सइयाँ के सेवा से सुन्दर बना दिहलीं तेल घीव से बोहिके ।
(बिदेसी के बटोही हटा देतारे । बिदेसी मंच पर से जातारे)
चोटही बेसरमी का लाज नइखे लागत,पढ़ावऽजाके ओहिके ।
कहत भिखारी तूं जाइ के कहिहऽ भतार करिहें जोहि के ।

समाजी : बड़ धोबिया पेंच मरलींहा बाबा !

बटोही : तोहरा भुभुन फूटे से डेरइनीं हा बबुआ !

रंडी : (गीत)
कहाँ गये मोर खेलवना छोड़ि के ?
पियवा पिरितिया काहें बिसार दिया नान्हें से जोर के ?

बटोही : का बबुआ, बिदेसी चल गइलन ? साफा ?

समाजी : हँ, चल गइले ।

बटोही : इहे कइल चाहत रहे ? तनी हँसी मजाक कइलीं हाँ । जाये के बेरा बोल बतिआ लेला । ओह पर खखनल बाड़ी । (रंडी से) तोहार भलाई छोड़ के बुराई ना कइलीं हाँ । अइसन लंगा-लूचा से देह बचा के राखे के चाहीं । अच्छा, गइलन त हम बानी नू ? (समाजी से) ए बाजावाला !

http://bhojpurisahityangan.com

समाजी : का बाबा ?

बटोही : हमरा अइसन बूढ़ के नोकरी कलकाता में ना मिली का ?खाटा-खट हप्ता मिलते चूड़ीदार कुरता सिआई, सेनगुप्ता धोती लिआई। गोड़ के मोजो। भउजी के अइसनके ठाट रही। साया किनाई पीअर दग-दग। कुरती लिआई करिया कुच-कुच। साड़ी किनाई लाल भभूका। किरपिन रहलन, हम पूछ के खिआइब, डबल कि सिंगल ?

(बटोही बइठ जातारे)

रंडी : चलती बार पिया हमसे ना बोला, चला मुख मोर के।

बटोही : ए बाजा वाला !

समाजी : का रे बुढ़वा ? का रे बुढ़वा ?

बटोही : इहे बोली ह ? मुँह से 'जी' नइखे आवत ?

समाजी : 'जी' के रउआ कामे करत बानीं।

बटोही : कवन जबून काम देखत बाड़ऽ ?

समाजी : देखतानी मेहरारू खींच-खींच के मारत बिआ।

बटोही : ए बुरबक ! पढ़ले नइखऽ, देवता पर कुत्ता पेसाब क देला। लोग लीप-पोत के अंकुरी-पूरी चढ़ा के बाँट के खा जाला। तोहरा अइसन गँवार के के कहल करी ?

समाजी : खूब कुटा।

बटोही : हमरा बीच में बोलो मत।

रंडी : हम उनुका बिनु जीअब नाहीं पिअब बिस घोर के।

(बटोही के घसकल)

समाजी : बाबा भगलन हो।

बटोही : (फिरि के) बबुआ हमरा के डेराभुत मत समझऽ। एह मोटरिया में तरुआर पिजा के धइल बा। हई देखतारऽ नू लाठी ? सादे-

http://bhojpurisahityangan.com

सादी नइखे, गुप्ती बा। उहो महुरावल बा। एह से कालो से डर ना लागे। (एही बीचे बटोही चल जातारन। रंडी के बिलाप चलता। बिदेसी मंच पर आवतारन।)

रंडी : नाहक नेह सँइया हमसे लगाया, खराब किया तोर के।
कहत भिखारी सवतिन किहाँ भगलन करेजा खँखोर के।

बिदेसी : काहे रोअत बाड़ू ?
(बिदेसी रंडी के समुझावतारे)
तूँ खायेक बनावऽ तले हम आवत बानीं।
(कहि के जातारन)

समाजी : (रंडी से) ऊ गइलन। बुढ़वा का दो सिखा देलस हा।

रंडी : ठीके कहतानीं, बुढ़वा आइल तब से मन उचटल लागत रहे। अच्छा, हमहूँ चल जात बानीं।
(रंडी अपना लइकन के साथे सामान के पेटी लेके निकलतारी)

बाड़ीवाला : का हो, चल देलू ?

रंडी : हँ चल देलीं।

बाड़ीवाला : हमार घर भाड़ा के दी ?

रंडी : हमरा रउआ कवनो बात बा ?
(बाड़ीवाला जाये के मना करता बाकी रंडी अपना सर सामान का साथे बिदेसी के घर खातिर चल देत बाड़ी। राह में उनुकर सब सामान डाकू ले लेत बाड़न स।
दोसरा ओर से बिदेसी मंच पर आ जातारे आ समाजी से अपना घर वाली के पूछतारे।)

बिदेसी : बगल से हमरा घरवाली के बोला दीं।

समाजी : गइली, एहिजा नइखी।

बिदेसी : कहाँ तक गइल होइहें ?

http://bhojpurisahityangan.com

समाजी : टीसन तक।

बिदेसी : भेंट हो जाई ?

(बाड़ीवाला आ साहुकार आ के घर भाड़ा आ कर्जा के तगादा करत बाड़े। भाड़ा आ कर्जा ना चुकवला खातिर रक-झक, तोर-मोर होता। बाड़ीवाला आ साहुकार बिदेसी के कपड़ा उतरवा लेत बाड़े। बिदेसी एक गमछी पेन्ह के घर जातारे।)

बिदेसी : (रो-रो के गावतारे)

का बहाना करब घर जा के ?
पातुर के धन चातुर देके आप रोवत पछताके।
बहुत कथा इतिहास सिखावल ना कइलीं बुढ़वा के।
हालत काइ भइल पिया तोरी पुछिहन जब जोरू धा के,
कवन जबाब देहब प्यारी से, मन में रहब सरमा के।
कहत भिखारी भिखार होइ गइलीं दौलत बहुत कमा के।

(गावत-गावत मंच से बाहर गइला पर दोसरा ओर से रंडी अपना लइका का साथे फाटल-चीटल रूप में गावत आ रहल बाड़ी।

रंडी — गाना—१

रास्ता कवन बिदेसी का घर के ?
दुख के हालत बड़ सवतिन से रोअब कहब गोड़ पर के।
प्यारी बिदेस, देस पिया भगलन, अब हमार लीही खबर के ?
करब टहल महल के निसि दिन देखब नजर भर-भर के।
कइसे प्रान रही प्रीतम बिनु छोड़ि दिहलन बाँह धर के।
लुगरी पहिरब, सतुआ खाइब निजे मजूरी कर के।
कहत भिखारी सारी धन लुटलस डाकू नतीजा कर के।

गाना—२

अब मन करबऽ तूं कवन जतन ?
सब दिन के बरबाद भइल धन,
चल गइलन घर छोड़ि के सजन।

http://bhojpurisahityangan.com

आज तलक कुछ काम ना कइलीं
कइसे पोसइहन सब लरिकन ।
भूसन-बसन रहल कुछुओ ना,
नाहीं रहल एकऊ बरतन ।
राम नाम कहऽ कहत भिखारी
नाहीं त भइल चउथ आ के पन ।

गाना—३

ए किया हो रामऽ, पियऊ के मतिया केइ हरल हो राम ।
ए किया हो रामऽ, कहिया के पापवा आ के फरल हो राम ।
ए किया हो रामऽ, मुदई के मनसा खूब तरे फरल हो राम ।
ए किया हो रामऽ, एह सें बा नीमन हमार मरल हो राम ।
ए किया हो रामऽ, आजुए से उढ़री नँइयाँ परल हो राम ।
ए किया हो रामऽ, कहत भिखारी उपजल झरल हो राम ।

(बेटा के रो-रो के गाना)

बेटा— गाना—१

अब ना जीअब हमार महतारी ।
दाल-भात, घीव, पापड़, रोटी, सपना भइल तरकारी ।
जमपुर हेतु काल सिर ऊपर भइलन बटोही सवारी ।
पहिरे के तन पर बस्तर नइखे खाये के लोटा ना थारी ।
जागऽ दाता केहू भोजन करा दऽ, हम बानी मूरत चारी ।
कहत भिखारी हमार देखि दुख कब ढरिहन गिरिवरधारी ।

गाना—२

अब हमनी के कटाइल गला ।
ना फुफहर ना ममहर गोतिया
ना बहनोई ना ससुर साला

http://bhojpurisahityangan.com

समय पाइ हित मुदई भइलन
घर से निकाल देलन बाड़ी वाला ।
बड़ अनरीत गीत लागत बा
बेटा से बाबूजी कइलन कला ।
दास भिखारी कहत मन चेतऽ
राम-राम कहऽ लेके माला ।

(रंडी अपना लइकन का साथे मंच पर से हटतारी ।)

(मंच पर प्यारी सुन्दरी के आगमन)

प्यारी सुन्दरी — गाना—१ (विलाप)

हमरा के सासत करि के
परदेसे गइलन बेइमान ।
साँवली सूरत हमरा दिल से ना बिसरत
लागल सुरतिया के बान । हमरा के···
पान खात मुसुकात रहत नित
हरि के ले गइलन परान । हमरा के···
दुनियाँ में दुखित केहू नइखे लउकत
एह घरी हमरा समान । हमरा के···
कहत भिखारी नाहक बाँह धइलन,
तनिको ना कइलन गेयान । हमरा के···

गाना—२ (सोरठी)

कवने अयगुनवाँ पियवा हमें बिसरवलन,
पिया हमें बिसरवलन हो,
किया पिया के मतिया बउराइल हो राम ।
जइसे सपनवाँ अपना पियाजी के देखलीं
अपना पियाजी के देखलीं हो,
जिउआ में सनाक देना समाइल हो राम ।

http://bhojpurisahityangan.com

जब हम जनतीं तब पिया का पाछा लगतीं,
हम पिया का पाछा लगतीं हो,
जरिये के हउए हमार भुलाइल हो राम ।
कहत भिखारी पियवा फाँसी देके भगलन,
पियवा फाँसी देके भगलन हो,
अधजल में मनवा बा टँगाइल हो राम ।

(दोहा)

तन, धन, धाम, धरनि, पुर, राजू, झूठे सकल जवाल ।
चरन पादुका पिया के लेके, सती होखब तत्काल ॥

समाजी : (चौपाई)

इहाँ के बात इहाँ रहि गयऊ । बिचहीं में कुछ लीला भयऊ ।
दोस्त बिदेसी के घर आये । प्यारी से कुछ हाल सुनाए ॥

(मंच पर बिदेसी के दोस्त देवर के रूप में आवतारे)

देवर : भउजी काहे रोवत बाड़ू ? चुप रहऽ । भइया परदेस गइलन त हम बानी नू ? हमरा से रुपइया, गहना, कपड़ा जे कुछ खोजऽ से हम देब ।

देवर : (सवैया)

भउजी अफसोस तेजो मन से, कुछ हुकुम देहु सबे कर डारी ।
काहू बिधि मत कष्ट सहऽ जब ले दुनियां में हमार बजारी ।
झूठ एको रत्ती मैं न कहूँ, जस तोर हृदय तस मोर बिचारी ।
कहे मानहु बात हमारी भिखारी सुलच्छनि साजहु भूसन-सारी ।

प्यारी० : (दोहा)

प्यारी के मन लागल बाटे, जहँवाँ बाड़न राम ।
माड़ो में सतबन्ध भइल बा, कहत भिखारी हजाम ॥

http://bhojpurisahityangan.com

देवर : (कबित्त)

भउजी तूं जइसन अलवेली कटीली बाड़ू
तइसन हम तन के मस्ताना तइयारी हईं ।
जइसे तूं चाह करबू तन-मन से हमरा के
तइसे हम धन-जन से सबसे तुम्हारी हईं ।
जइसे तूं छल-कपट, अयगुन के त्याग देलू
तइसे हम लोभ, मोह, मद से निरधारी हईं ।
मन में बिचारऽ, अब से रोदन बिसारऽ
दया करके बिचारऽ कहत दियरा के भिखारी हईं ।

प्यारी० : (दोहा)

देवर जी दया करऽ, पति-पत्नी में मेल ।
कसहूं जाके जल्दी बोला के, नीमन देखा द खेल ।।

देवर : भउजी सूनहु बात एक, भइया गये परदेस ।
ना जानी केहि हेतु से, भेजत नाहीं सनेस ।।

(चौबोला)

भेजत नाहीं सनेस, भेस तव लागत निपट उदासा ।
कतहूँ से जतन करब हम अबहीं, पाका मानऽ बिसवासा ।।

प्यारी० : बिसवास केहू के करब कइसे, धोखा देके पिउ गये ।
बिसवास सुख सोहाग पिउ के साथे साथ चले गये ।।

देवर : भउजी तनिक अफसोस दिल में झूठे करती तूं अबे ।
जिन्दगी तलक सुख देब तुमको जानि हो हमके तबे ।।

प्यारी० : जिन्दगी के आसा है नहीं, हमको तो आसा पीउ की ।
खाना वो गहना पहनना चाहना नहीं है जीउ की ।।

देवर : देह-प्रान ते प्रिय नाहीं जग कछु, सुनले भउजी कान से ।
हठ करके दुख का बोझ से आखिर तूं मरबू सान से ।।

(हाथ घ लेत बाड़न)—हल्ला मत करऽ ।

http://bhojpurisahityangan.com

प्यारी० : मरना तो बेहतर वही जो मर जाय अपना सान से ।
दसरथ जी के पुत्र से प्रिय सुनिलऽ देवर कान से ।।

देवर : (चौपाई)

भउजी मानऽ कहल हमारी ।
नाहीं त करब तुरत बरियारी ।।
असल बाप के हईं बेटा ।
ते ना सहबे एक चमेटा ।।

प्यारी० : ना कुछ पइबऽ मरबऽ जान ।
पाछे होइबऽ खूब हलकान ।।
सोच - समझ के चलऽ देवर ।
चाहे लेलऽ तन के जेवर ।।

देवर : जेवर-फेवर कुछ ना चाहीं ।
गोटे बात समुझ मन माँहीं ।।
अबहीं हमरा बस में आ जा ।
तब देखऽ कइसन बा माजा ।।

प्यारी० : माजा राम भेजवलन पार ।
सुनि लऽ देवर बात हमार ।।
जीउ के पीउ में लागल आस ।
चाहे परी गला में फाँस ।।
हे पिया ! कहाँ लगवलऽ देरी ।
भइ जस हालत बाझ-बटेरी ।।
हे बिधि-बिस्नू ! भइलऽ बाँव ।
अब हम कवनी ओर पराँव ?
हे गंगाजी राखऽ लाज ।
हमें बा अपना पीउ से काज ।।

http://bhojpurisahityangan.com

शंकर से बिनऊँ करजोर ।
पीउ चरन में लागो डोर ।।
देवी - दुर्गा तोहे मनाऊँ ।
जल्दी दरस पिया के पाऊँ ।।

(एगो मेहरारू आवतारी)

मेहरारू—ए बहिन, केवाड़ी खोलऽ, तनी आग द ।

समाजी : (चौपाई)

आइ पहुँचल मोसकिल भारी ।
अब का प्यारी करे बिचारी ।।
तेहि अवसर परोसिन एक आयी ।
आग - आग कहि के गोहराई ।।
सुनते देवर निकल पराई ।
सत के पत रखलन रघुराई ।।
अब आगे लीला जे होई ।
सो सब कहब सुनऽ सब कोई ।।
जेहि बिधि से बिदेसी घर आई ।
पिउ प्यारी भेंटे हरखाई ।।
धन मालिक के बड़का माया ।
कहे भिखारी करिहें दाया ।।

प्यारी० : (पूर्वी)

दिन बहु बीति गइले, तबहूँ ना पिया अइले
मनवाँ में गुतलऽ से कइलऽ बलमुआँ ।
रचि के चिता बनाऊँ, लेके स्वामी के खराऊँ,
जरि कर हरि से मिलब हो बममुआँ ।

http://bhojpurisahityangan.com

प्यारी० :

(विलाप गीत—१)

रहि-रहि उठत बाटे मनवाँ में सूल ।
सामली सूरत पिया, गड़ल वाड़न हमरा हिया,
मुँहवा कमलवा के फूल । रहि ··· ···
मालिक मोर गइलन भागल, पछवा से जइतीं लागल,
जरिये के वाटे हमार भूल । रहि ··· ···
देखऽ दुख दीनानाथ ! दूनो जोड़ी एक साथ,
कहिया ले मिलइबऽ समतूल ? रहि··· ···
कहत भिखारी नाई, पुरुब के ह कमाई
अब सब गावल बा फजूल । रहि-रहि ·····

(विलाप गीत—२)

हाय सँइयाँ, कइ दिहलऽ सून भवनवाँ ।
बाँह ध के सँइयाँ गोसइयाँ तेयाग दिहलऽ
का देखलऽ बगदल रहनवाँ । हाय सँइयाँ···
एको कसूर मोर मुँह से ना कहलऽ
होखतानीं गुनि-गुनि हरनवाँ । हाय सँइयाँ···
साँवली सूरत मोरा मन से ना बिसरत
मधुर - मधुर मुसुकानवाँ । हाय सँइयाँ···
कुरता - चादर टेढ़ी टोपी लगा के
कहिया ले देबऽ दरसनवाँ । हाय सँइयाँ···
पावस रैन भेयावन लागेला
बरिसेले बूँद सावनवाँ । हाय सँइयाँ···
कवना दो देस जाके झोपड़ी लगवलऽ
छछनत बा हमरो परानवाँ । हाय सँइयाँ···
कहत भिखारी कटारी से मार देतऽ
बयस पर करिके गवनवाँ । हाय सँइयाँ···

http://bhojpurisahityangan.com

(विलाप गीत—३)

हाय, सँइयाँ कइ देऽ सून खटोला। सँइयाँ···

घर में बिछाई कि अँगना बिछाईं,
दुअरा बिछाईं कि कोला ? सँइयाँ···

केकरा से कहीं हम दिलवा के बतिया
देवरा बा निपटे भकोला। सँइयाँ···

आम के डारी कोइलिया कुहुके
ओसहीं कुँहुँकत बा चोला। सँइयाँ···

बालम के बहरा से जल्दी बोला दऽ
पारबती बमबम भोला। सँइयाँ···

कहत भिखारी भेयावन लागत बा
हमरा कुतुबपुर के टोला। सँइया···

(विलाप गीत—४)

ए किया हो राम, स्वामीजी के पोसाक बा घर में धइल हो राम।
ए किया हो राम, चमकत ना होइहन, भइल बा मइल हो राम।
ए किया हो राम, सोचते-सोचत दिनवाँ गइल हो राम।
ए किया हो राम, मनवाँ में गुतलीं सेहू ना भइल हो राम।
ए किया हो राम, कहत भिखारी केहू जादू कइल हो राम।

(विलाप गीत—५ लय आल्हा)

राम रसायन तोहरे पास, देरी होत बा महाबीर जी।
जाइ के अहिरावन दरबार, काली-कवर से रामचन्द्र के,
लिहलन छन में जान बचाय, खुसी भइल बा बानर-दल में।
ओसही पति के मति द फेर, अभी मिला द घर-घरनी से।
कहत भिखारी दोउ कर जोर, श्यामसुन्दर में सुरत लागल बा।

(विलाप गीत—६ लय लोरिकायन)

स्वामी के सुरतिया, बतिया सालत बा दिन-हो-रात।
ऊपर से कहत बानी भीतरा से नइखे पूरा कहात।

http://bhojpurisahityangan.com

कवना दो देसवा में वाड़न केहू नइखे आवत हो जात ।
केहू नइखे देखत मकनियाँ में जनियाँ के बिल-हो-खात ।
कुतुबपुर दिअरा के कहत भिखारी नाई हो जात ।

(विलाप गीत—६ लय सोरठी)

ए किया हो राम, कहिया हम स्वामीजी के दरसन पाइब हो राम ।
ए किया हो राम, दुअरा बधइया कब बजवाइब हो राम ।
ए किया हो राम, जथा सकती दरब कब लुटाइब हो राम ।
ए किया हो राम, गरदन में माला कब पहिराइब हो राम ।
ए किया हो राम, स्वामीजी से कहिया बतिआइब हो राम ।
ए किया हो राम, तरसल नयना जब जुड़वाइब हो राम ।
ए किया हो राम, कहत भिखारी जनम-फल पाइब हो राम ।

(विलाप गीत—७)

उड़ि के तूँ चलि जा जिया पियऊ का देसवा में,
अहो मोरे रामऽ, मोर मनवाँ पिउ का रंग में राँगल हो राम ।
सूतल रहलीं राति के, पिउ सँग में नींद से माति के
अहो मोरे रामऽ, बोलते मुरुगवा चिहुँकि के जागल हो राम ।
कहलन जे बहरा जाइब, कुछ दिन में घूमि के आइब
अहो मोरे रामऽ, हाथ झटकारि के बेदरदा भागल हो राम ।
तब से ना निंदिया आवेला, घर ना अँगनवाँ भावेला
अहो मोरे रामऽ, एही सोचे मनवाँ भइल बा पागल हो राम ।
कहत भिखारी ठाकुर, पिया बिनु भइलीं भाकुर
अहो मोरे रामऽ, साँवली सुरतिया बा हर छन लागल हो राम ।

(बिलाप गीत—८)

सँइयाँ गँइयाँ छोड़लऽ, धइलऽ कवनी ओर डगरवा ?
कइसे लाँघत होइबऽ कतिना नदिया नारवा ?
बहुत मिलत होइहन परबत जंगल झारवा ,
कहँवाँ बइठलऽ जाइ के केकरा दुआरवा ?

http://bhojpurisahityangan.com

चिठिया भेजावत रहितऽ लिखि के बारमबारवा
तनिको ना अखड़ित मिलत रहित समाचारवा।
कहत भिखारी रहि-रहि उठत बाटे लहरवा
देखत वानीं कहिया ले लवटि के अइबऽ घरवा।

(विलाप गीत—९)

चलने का बेरिया कहलऽ ना पियऊ एको बतिया हो।
हमरा के छोड़ि कर गइलऽ पुरुबवा केई मारल तोहार मतिया हो।
कवनो सहर से संवाद भेजलऽ ना लिखलऽ एको पतिया हो।
राह चलत रूप देखि के भोरवलसि कि कहूँ चतुर सवतिया हो ?
चरन-कमल भगवान के देखब कव कहत भिखारी नाई जतिया हो।

समाजी : (धुन पूर्वी)

एक दिन धनियाँ मकनियाँ भीतरवा में
रोवतारी भरि के केवरिया बिदेसिया।
रात कुछ बीति गइले, दुअरा बिदेसी अइले
कहलन "खोलि द केवारी प्यारी धनियाँ !"
चोरवा समुझि कर, लोरवा गिरन लागे
रोइ-रोइ सोरवा करेली प्यारी धनियाँ।
"दइब कठोरवा भेजवलन चोरवा के
बिपति परल घनघोरवा बलमुआँ !
पिया में बा मोर जिया, कसहूँ के बारे दिआ ?
हउआ लागी त बूति जाई हो बलमुआँ !
आगा-पाछा केहू नाहीं, रोअतानी घर माँहीं,
कवन जुगुतिया चलाईं हो बलमुआँ !"

प्यारी सुन्दरी : (चौबोला)

हाय दइब अब केहि गोहराऊँ अइले महलिया में चोर।
सँइयाँ घरे रहितन, धइ बान्हि मरितन, केकरा से कहीं करि सोर ?

http://bhojpurisahityangan.com

प्रीतम पिउ बिनु प्रान छूटत नइखे, हिरदय बा बहुत कठोर।
त्राहि रमापति, त्राहि उमापति, अव धरम बचावहु मोर।

बिदेसी : (पूर्वी)

खोलु-खोलु धनिया ! मे बजर केवरिया हो
हम हईं पियवा तोहार रे सँवरिया !
नाहीं हम हईं राम ठग बटवारवा से
नाहीं हम हईं डाकू चोर रे सँवरिया !
पूरुब से आवतानी, करऽ पहिचान बानी
मुदित ना बहरे बीतल प्यारी धनियाँ !

समाजी : अतना सुनत धनी, खोललीं केवरिया से
दुअरा पर देखे पिया ठाढ़ रे सँवरिया।
तुरते खोलि के पट, प्यारी ताके पति झट
पपिहा का स्वाती बूँद मिललन बलमुआँ !

प्यारी० : धन ह आजू के रात, पिया से भइल बात
हिया मोर देखि के जुड़इलन बलमुआँ !
आजुए के रोज सन, तिथि वो महीना धन
कहत भिखारी कर जोरि के बलमुआँ !
कुतुबपुर मोर ग्राम, बेड़ा पार ला द राम,
जाति के हजाम जिला छपरा बलमुआँ !

(चौबोला)

प्रेम मगन मन बहुत होत है देखि के चरन तुम्हारे !
सोक धार में बहत जात रहीं खींचि के कइलीं किनारे।
बहुत दिनन पर दरसन दिहलऽ हे प्रभु प्रान अधारे।
कहे भिखारी जय गंगाजी बहुरल सेन्दुर हमारे।

(रंडी बिदेसी के गाँव पहुँचत बाड़ी लइकन के लेले। ओहिजा पूछतारी।)

http://bhojpurisahityangan.com

रंडी : एह गाँव में कोई बहरा से आइल हा ?

समाजी : हँ, बिदेसी अइले हा ।

रंडी : उनका घरे कवन राह जाई ?

समाजी : हइहे गली धइले चल जा ।

बिदेसी : (देखि के चिहात)—तोहार का दसा भइल ।

रंडी : रउआ छोड़ के चल अइलीं । लइकन साथे सामान लेके आवत रहीं कि डाकू सब लूट लेलन स ।

बिदेसी : अच्छा जाये द । हमार-तोहार जिनिगी रही त घर भर जाई ।

रंडी : एहिजा केहू के चीन्हत नइखीं ।

बिदेसी : कइसे चिन्हबू ? देखऽ दूमुँहा में सवतिन खड़ा हवऽ ।

(रंडी सवतिन के गोड़ लागतारी)

रंडी : (लइका से)—ए बबुआ, माई बाड़ी, गोड़ लागऽ ।

(लइका माई के गोड़ लागत बाड़न । सकल परिवार के मिलन हो जाता ।)

समाजी : बोलिए वृन्दाबन बिहारी लाल की जय ।

—: समाप्त :—

http://bhojpurisahityangan.com

भाई बिरोध नाटक

चौपाई

समाजी : सिरि गनेस महादेव भवानी, रामा हो रामा
रामा, सीस चरन में नवावत बानीं, रामा हो रामा
रामा, भरत लखन रिपुसूदन रामा, रामा हो रामा
रामा, जानकि सिद्ध करहु सब कामा, रामा हो रामा
रामा, लघु नाटक चाहत मन करना, रामा हो रामा
रामा, देहु कृपा करि, राखहु सरना, रामा हो रामा ।
रामा, सब सज्जन से बिनय है मोरी, रामा हो रामा ।
रामा, दास भिखारी कहत कर जोरी, रामा हो रामा ।
रामा, सुनहु कृपा करि के मन लाई, रामा हो रामा ।
रामा, रहे भवन एक तीन गो भाई, रामा हो रामा ।
रामा, उपदर, उपकारी ओ उजागर, रामा हो रामा ।
रामा, सनमत रहत सदा तिनका घर, रामा हो रामा ।
रामा, उजागर के पन बा थोरा, रामा हो रामा ।
रामा, उपकारी बाड़न लरकोरा, रामा हो रामा ।

(मंच पर उपकारी बहू जँतसारी गा रहल बाड़ी)

बेरि-बेरि कहीला गोरी, गेहुमा दे दऽ ए गोतिन मोरी,
अपने पीसब ना केहु से पिसवाइब ए सजनी ।
जाँतवा चलत बा हर-हर, गिरता पिसानवाँ भर-भर,
गाइ - गाइ गितिया सबेरे ओरवाइब ए सजनी ।
साफ से चुहानी जाइब, रचि-रचि के रोटिया पकाइब
देवरू से सामीजी के बोलवाइब ए सजनी ।

http://bhojpurisahityangan.com

कहत भिखारी नाई, दाल - तरकारी - मलाई,
बेनाइ डोलाइ के मालिक के पवाइब ए सजनी।

समाजी : चौपाई

बस्ती के एक बुढ़िया माई।
उपकारी के अँगना आई॥
बहु विधि करि छल बात बनाके।
फोरत कुटनी घर कुटना के॥

बुढ़िया कुटनी : ए उपकारी बहू ! कवनो बाड़ू स रे ?

उपकारी बहू : हँ ए दादी, आईं, बानीं। आईं बइठीं।

कुटनी : आज हमार देह बथत बा, तनी मीस द।

उपकारी : बबुआ बो देह मीस देत बाड़ी, हम घुनसारी अनाज भूँजे जात बानीं।

कुटनी : जा ए उपकारी बो।

(उपकारी बहू घुनसारी जात बाड़ी उपदर बहू लगे आ जातारी।)

कुटनी : (उपदर बहू से)—आहो, तोहरा कव जाना बबुआ बाड़न ?

उपदर : (लजा के) ना ए दादी, हमरा के अबहीं रामजी ना बुझलन हाँ।

कुटनी : तोहरा गोतिनियाँ का कव जाना बबुआ लोग बा ?

उपदर : चार जाना बाड़न।

कुटनी : तोहार मरदू कहाँ बाड़न ?

उपदर : हर जोते गइल बाड़न।

कुटनी : तोहार मरदू हर जोते आ भसुरू कचहरी करे गइल बाड़न। लोगवा कहेला जे बुढ़िया कुटनी ह। ओकरा अतना खनिहार, तोहरा के बा जे अतना दुख सह के तूं काम करत बाड़ू ? तूं अपने मन के बात करवू। ओकरा चार-चार गो खनिहार आ तोहरा के बा ? एगो काम कहतानी तवन करऽ। तूं अपना गोतिनियाँ से फरका हो जा।

http://bhojpurisahityangan.com

उपकारी : ए दादी, तूं बूढ़ भइलू, तोहार ईहे काम ह ? आ हम फरके होखे के कहीं आ हमार मरदे मारे लागे तब ?

कुटनी : पीसत बाड़ू अकेले रानी ।
तोहरे खातिर कहत बानीं ।।
ऊदम से भइलिस कमजोर ।
चीकनढठ गोतिनियाँ तोर ।।
हमरा नइखे देखल जात ।
तबहूँ तें बाड़िस मुसकात ।।
ए बछिया तोर अइसन रूप ।
देखि-देखि के हम बानीं चूप ।।
लउकत बाटे हाथ में ठेला ।
पीसत - कूटत बाड़ू अकेला ।।
सूख गइल मुँहवाँ के चाम ।
देखल नइखे जात हो राम ।।
उमिर कुछऊ नखऊ गइल ।
कव गो लड़िका हवहू भइल ?
ओकरा कव गो धीया-पूता ।
जेकर ढोवत बाड़ू जूता ।।
एक बाप के तीन गो भइया ।
पोसली, पलली एके मइया ।।
अव मुँह देखल होखे लागल ।
भतरा तोर बा निपटे पागल ।।
कहत भिखारी मानऽ कहल ।
छोड़ऽ ढहनी जवरे रहल ।।
फरका हो के करबू सुख, सुनऽ निहोरा मोर ।
कहे भिखारी देखल नइखे जात नतीजा तोर ।।

http://bhojpurisahityangan.com

उपदर बहू : दादी सुनऽ कथा इतिहास ।
बड़की गोतिनी हई सास ।।
भसुर बाड़न ससुर समान ।
जाउत अवहीं निपट नदान ।।
बेटा बरोबर छोटका देवर ।
बदलल दादी तोहार कलेवर ।।
काहे बोललू अइसन बोली ?
हमरा लागल करेजा गोली ।।
दादी फोरत बाड़ू घर ।
दीन-दुनियाँ के नखवऽ डर ।।
दादी काम धइलू डाइन के
फरका दिल करबू भाइन के
अलगा हो के रहब हम ना ।
तोहरा से बूधी बा कम ना ।।
सुनि ल दादी मोर सिखावल ।
अब मत चलऽ तूं घर-घर धावल ।।
घर फोरला के का मतलब ?
बूढ़ भइलू अब चेतबू कब ?
कतहूँ रहिहऽ बोलिहऽ असल ।
कहे भिखारी छोड़ऽ दू भसल ।।

अतना सुनि के खीस बरत बा, सुनऽ निहोरा मोर ।
अवहीं कवना लायक बानीं, ना भइलीं लरकोर ।।

कुटनी : ए बबुआ बो, तूं अलगा हो जइबू त सेर भर बनइबू, दूनो बेकत खइबू । चीकन दस रोपेया के आदमी हो जइबू ।

उपदर बहू : रउरा पुरनियाँ सरदार हो के अइसन बात ना नू कहे के ह । हमार भसुर ससुर समान, बड़ गोतिनी सासु बरोबर, चार-चार गो जाउत, सब बड़ले बा, हमरा कवन दुख बा जे अलग होखीं ?

http://bhojpurisahityangan.com

कुटनी : बबुआ बहू, तूं भुलात बाड़ू । भसुरा गोतिनियाँ आज जानत-मानत बा, जेह दिन जउतवन के सादी होई करजा में बोथा जइबू । चारो के चार गो जनाना होई । बूझऽ जे कतना खरचा में परबू ? ऊ आप अपना के हो जइहन स । आखिरी में तोहरा के अलगा करिहन स । तूं अलगा होखबू कब ? सिर पर करजा चढ़ी तब । हम तोहरे खातिर कहत बानीं । ना त, हमरा कवन काम बा । हम कहलीं से बेजायँ कइलीं । ई बात कतहूँ कहिहऽ मत ।

उपदर बहू : (बुढ़िया के हाथ घ के)—ए दादी, हमरा अब तोहार कहल कुछ बुझात बा । हम त अलगा हो जइतीं बाकी ऊ अलगा के नाँव सुनि के जर मुइहन ।

कुटनी : घर में अठान कठान डाल ले । मेहरारू कइसन होई जे मरद के अखतियार में ना राखी । बे बात के बात बतिआवऽ । बे झगड़ा के झगड़ा करऽ, तब देखऽ जे अलगा कइसे ना होइहन । अलगा में तोहरा फायदा बुझाई त दादी के जिनिगी भर गुन गइबू । हम जात बानीं ।

(बुढ़िया खुस होत अपना घरे जातीआ)

समाजी : (चौपाई)

बहु बिधि खुसी होत घर जाना ।
तेहि कर रचत भिखारी गाना ॥

(गाना)

बुढ़िया लगवलसि लहरा महलिया भीतर भारी ।
जे घर में सनमत रहे सब दिन
लागल चले पटिदारी । महलिया भीतर भारी···
भाई भाई, गोतिनी गोतिनी पर
कइलस बिघिन सवारी । महलिया भीतर भारी···
रगर से झगर, झगर से गारी,
तेकरा पाछे मारामारी । महलिया भीतर भारी···

http://bhojpurisahityangan.com

एहि बिधि बिगड़त बा घर सबकर
गाइ–गाइ कहत भिखारी । महलिया भीतर भारी···

(परदा का भीतर से उपदर आ उजागर आवतारे)

उपदर : बबुआ उजागर, हम हरवाही जात बानीं । तूं खेत में पानी ले के अइहऽ ।

(ई बात उपदर बो सुनि के सोचतारी जे हमहीं हरवाही में चल जाईं । ओहिजे पसन से बतिआइब । उजागर से पहिले ऊ चल देतारी ।)

समाजी : (चौपाई)

हर जोतन कं गयउ किसाना ।
तब घर में मन सोचत जनाना ।।
पानी ले के खेत में जाऊँ ।
ठन–गन कर के क्रोध बढ़ाऊँ ।।
जब लागी बातन के हरका ।
तब होइहन खिसिआइ के फरका ।।
चली कुभाव कुभेस बनाई ।
ले जल हरवाही में आई ।।
बार–बार पूछत मृदु बानी ।
कवन हेतु तुम गई रिसानी ।।
बोलत नहीं जहर के पुरिया ।
जइसे चुपकारिन देवकुरिया ।।

उपदर : प्रानप्यारी, तूं उदास काहे बाड़ ?

औरत : एह से रउरा कवन काम बा ? रावा सुख बा भाई—भउजाई से । हमरा तकला पर केहू रहित त ई नतीजा ना तूं होइत ।

उपदर : तोहार कवन नतीजा होखत बा ?

औरत : हमार नतीजा होखत बा जे जवना का देह से अतना खनिहार लड़िका तवन काम ना करी । पटिदार हो के मलकीनी कहाई । हम देह तूर-तूर के ऊदम करब । दोसर पटिदार रहित त

http://bhojpurisahityangan.com

झोंटा घ के काम करवाइत । ई दाह हमरा से देखल ना जाई । हम ओह भछनी के मुंह ना देखब । चोटहो से अलगा हो के रहब । ना त नइहर में दिन काटब ।

उपदर : सुनऽ, बड़ भाई पिता, बड़ गोतिनी सास बरोबर ह । अइसन ना बोले के काहे कि आपन दियानत खराब होई । केहू भला ना कही । थपरी के पिटनिहार दुनियां बा । अलगा होखब तब परला-हरला केहू कामे ना आई ।

औरत : दुनियां के हम करब आ दुनियां से करवाइब । बाकी ओह भछनी के हम मुंह ना देखब । एह खीस में आज हम लूगा खोल लेतीं, डांड़ मसका देतीं । आज ईजत चाहऽ त अलगा हो जा । ना त आपन जान हम अपने हत देब । हमरा के गेयान मत सिखावऽ ।

(दोहा)

हम ना मानब स्वामी कतनो कहबऽ लाखन बार ।
कुसल चाहऽ त अलगा हो जा कहत भिखारी पुकार ।।

उपदर : (दोहा)

भइया से ना अलगा होखब, कतनो घुनऽ कपार ।
पूरुब से पच्छिम चलि जइहन, चाहे गंगाजी के धार ।।

(चौपाई)

प्रान प्रिया केहि हेतु रिसानी ।
से हालत कुछु हम ना जानी ।।
माफ करहु जे कछु नगहानी ।
राखि लेहु पगरी कर पानी ।।
पति से पत्नी करी लड़ाई ।
तेकर कइसे होई बड़ाई ।।
दिन-रात बातन के रगरा ।
करबू बड़ गोतिन से झगरा ।।

http://bhojpurisahityangan.com

मालिक का घर उघरी पतरा ।
बात बना के ठगलू भतरा ।।
सरग नरक लउकत ना तोरा ।
प्यारी पइबू दंड कठोरा ।।
मोर बचन हिरदय में धरहू ।
पतिव्रत धर्म के पालन करहू ।।
जेहि से सिद्ध होई सब काम ।
कहत भिखारी जात हजाम ।।

औरत : (धुन पूर्वी)

जहिया से अइलीं पिया तोहरी महलिया में
सब दिन रहलीं टहलिया में पियावा ।
घर में के सब काम, करत सूखल चाम
सुखवा सपनवाँ भइल हमरा पियावा ।
हरवा जोतत सँइयाँ, तोहरो पिराला पँइयाँ
रोपेया के मुँह हम ना देखलीं हो पियावा ।
बड़की गोतिनियाँ भइलि मलकिनियाँ से
छैला चिकनियाँ भसुरवा हो पियावा ।
नइहर में जाइ कर तोहरे इरिखा पर
भउजी के लइका खेलाइब हम हो पियावा ।
कहत भिखारी नाई, दुख देखि के मोर माई,
सुर पुर जाई प्रान तेजि के हो पियावा ।

उपदर : (गाना)

प्यारी, का अँखिया देखलावत बाड़ दूर से ?
कर बाते सहूर से ना ।
कइलू रगर-झगर भउजी से, खेत में पानी ले अइलू खीस से
कुछ-कुझ बूझत बानीं मनवाँ का गरूर से । कर बाते ···।

http://bhojpurisahityangan.com

तोहार किसिम–किसिम के बोली, हमरा लागल
करेजा में गोली
गारी देत बाड़ू भउजी के एक सूर से । कर बाते···
करब जोरू के बात के काना, हम ना हईं दोसर मरदाना,
जवन कहीला से करीला जरूर से । करऽ बाते···
कहत भिखारी नाई, हम ना छोड़व सहोदर भाई,
घर में रहबू चाहे जइबू तीनों पूर से । करऽ बाते···

औरत : (गाना सोरठी)

हमरा त मिललन रामऽ मरद मुँह झँउमा,
रामऽ मरद मुँह झँउसा हो,
काइ बिधना लिखि दिहलन लिलार नूं हो राम ।
सब धन लुटलसि, हम भइलीं भिखइनियाँ,
हम भइलीं भिखइनियाँ हो,
डाकू मिलल वा पटिदार नूं हो राम ।
नइहर में जाइ करब दोसरा के आसरा,
करब दोसरा के आसरा हो,
परल गोतिनियाँ के सुतार नूं हो राम ।
केकरा से कहीं दुखवा, केहू नइखे लउकत हमरा,
केहू नइखे लउकत हो,
कइलसि 'भिखारी' के भिखार नूं हो राम ।

मरद : (गाना)

हमरा त मिलली रामा नारी हो करकसा,
रामा नारी हो करकसा हो,
छुटलन भतीजा, भउजी, भाई नूं हो राम ।

http://bhojpurisahityangan.com

मेहर के छोड़ला से ना होई फेरु बिआहवा हमार
होई ना बिआहवा हो,
करीं हम कवन अब उपाइ नूं हो राम ।

औरत खिसिआई, कवनो जाति से नसाई,
कवनो जाति से नसाई हो
सगरो से पगरी डूबि जाई नूं हो राम ।

चुप होखऽ प्रानप्यारी, भइल अलगा के तेयारी,
भइल अलगा के तेयारी हो,
कहत भिखारी ठाकुर नाई नूं हो राम ।

चुप होखऽ, घरे चल के हम फरिया लेब, ओह लोग के मालिक-मलकिनी बनल निकाल देब । हमरा कवन ? दू परानी बानीं जा, मजे से अलगा होके रहब जा । ऊधो के न लेना ना माधो के देना ।

(परदा का पाछा से बड़ भाई के आगमन)

उपदर : भइया, हम तोहरा साथ में ना रहब । हमार जे कुछ धन, नीमन जबून बा, से सब बाँट द ।

उपकारी : बबुआ, तू अइसन बात काहे कहत बाड़ऽ ?

उपदर : हमार मन । अब ले चलल, अब ना चली ।

समाजी : (चौपाई)

एक साँच, झूठ दस गो जोरी ।
कुटनी कइ दिहलसि घरफोरी ।।

(उपदर रगड़-झगड़ के अलग हो गइलन । छोट भाई उजागर आपन हिस्सा धन ले के उपदर में रहि गइलन ।)

http://bhojpurisahityangan.com

उजागर : (गाना)

दिल लागल देवर से, बाड़ी चतुर भउजाई रे, हाँ ।
आस बिसवास ना करब हम दोसरा के
नइखे फिकिर एको पाई रे । हाँ, दिल लागल···
बड़की के छोड़ि देलीं, छोटकी में रहि गइलीं,
बाटे बाप–दादा के कमाई रे । हाँ, दिल···
हम ना रहब बड़का भाई में,
चाहे बोलिहन चिकनाई रे । हाँ, दिल···
बयस के थोर मोर अबहीं पन,
कहत भिखारी ठाकुर नाई रे । हाँ, दिल···

(भउजाई से) : भउजी, जात बानीं बकरी चरावे ।
भउजाई : जा ।

(बुढ़िया कुटनी के आगमन)

कुटनी : उपदर बहू, बाड़ू स रे ?
उपदरबहू : बानीं, आईं ।

(पैर पर गिर के गोड़ लागतारी)

कुटनी : अब अच्छी तरह बाड़ू न बबुई ?

उपदरबहू : हाँ रउरा असीस से अच्छा तरे बानीं । सेर भर बनाईले, तीनों बेकत खाईले ।

कुटनी : भला रामजी बूझलन । हमार आसिरबाद फरल । कवन लड़िका ह, नन्हका कि नन्हकी ?

उपदरबहू : ना ए दादी, हमरा के रामजी अबहीं ना देलनहां ।

कुटनी : कहत बाड़ू जे तीन बेकत बानीं; से तीन गो के ह ?

उपदरबहू : छोटकू देवर के अपने में रखले बानीं ।

कुटनी : आहो, जवन बेल का काँट से हम तोहरा के फरका करवलीं, से तू अपना पर पटिदार रखलही रहलू ? कुछे दिन के बाद उहो देवरा सेयान होई । बिआह भइला पर उड़ाकू को जाई ।

http://bhojpurisahityangan.com

हमार कहल ना करबू त धोखा में पर जइबू। तूं कवनो हालत से अपना देवर के अछरंग लगा के भतरा से मरवा द।

उपवरबहू : दादी तोहार गोड़ परतानीं तूं हमरा अँगना से चल जा। हमरा के बंसघास करे के गेयान सिखावे आइल बाड़ू ?

कुटनी : बबुआ बो, खिसिआ मत, हम तोहरे खातिर कहतानीं। हमार कहल करबू त तोहरे सुख होई। आगे दिन में फायदा बुझाई तब दादी के गुन गइबू।

उपवरबो : अच्छा दादी, जाईं। ई बात केहू से कहब मत। हम राउर जबान कहिया टरलीं हा ? अब ना टारब।

(बुढ़िया कुटनी परदा का पाछा जातारी।)

समाजी : (चौबोला)

कुटनी आ के, लहरा लगा के, कइली डबल कमाई।
झगरा होखत बा गोतिनी में, भाई में होखत लड़ाई॥
बालक छछनत बा बिरोध से, मातु न दूध पिआई।
भँइस–बकरिया खूँटा-खूँटा पर भोंकरत बछरू-गाई॥
हँड़िया झुरवत बा चूल्हा पर बिनु अदहन रहि जाई।
सूगा 'चित्रकूट' कहि बोलत, तबहूँ दाना ना पाई॥
क्रोध भूत देह-देह में लागल, गुनत ना आपु पराई।
केहू जहर, केहू फाँसी लगावत, केहू इनार गिरि जाई॥
जे बिसवासघात नर करिहन, घर में आग लगाई।
झगरा लगावल पाप बरोबर, समुझऽ भारत के भाई !
ऊपर से चीकन बतिआवत, भीतर करत कलाई।
कुटना–कुटनी घोर के एक में बेंचत जहर मिलाई॥
हे काली जी ! एह कलह के कइसे होखी दवाई।
एक पटिदार बहुत परहेजत, तबहूँ बढ़त सवाई॥
एह विरोध नाटक तन मन से बिधिपूर्बक जे गाई।
भर लछुमन रिपुसूदन करिहन तेकर भलाई॥

http://bhojpurisahityangan.com

एक भाई कइसन जानत बा, एक सिर चढ़ल बलाई ।
छोटका भाई मारल जइहन, कहत भिखारी नाई ।

कबित्त

होत ना देवाल कहूँ बालू के जहान बीच
पानी के फुहेरा चाहे सौ दफे कँड़ला से ।
चाहे बरिआरा केहू कसहूँ सजाय करी,
खल के सुभाव कबो छूटत ना डँड़ला से ।
भोथर दिमाग होत बड़का बुधागर के
कलही ना छोड़े जिद मार चाहे भँड़ला से ।
कहत भिखारी मन समुझि बिचार करीं
कूकुर के पोंछि सोझ होत नाहीं मँड़ला से

(उपदर आ उपदर बो के मंच पर आगमन)

उपदर : प्रानप्यारी, पाँच गो रोपेया द, मालगुजारी देबे के बा ।
औरत : हमरा देह में आग मत लगावऽ ।
उपदर : खेत लिलाम हो जाई तब नीमन होई ?
औरत : ईजत लीलाम होई तब नीमन होई ?
उपदर : के कहता ईजत लीलाम होखे के ?
औरत : तोहर हमार ईजत भरष्ट होखे चाहत बा । तब हमरा तोहरा नगर में मुँह देखावे के ह ?
उपदर : के ईजत भरष्ट करे के चाहत बा ?
औरत : जेकरा के साथ में रखले बाड़ऽ से ही, छोटका भाई ।
उपदर : बबुआ कवना लायक बा ? तूँ पोसले बाड़ू एही लाड़ से मतारी लेखा लंगो-चंगो करत होई । एह बात के मन में बे बिचार ना समुझे के ।
औरत : जे सेयान के करनी करी तेकरा साथ लड़िका के भाव कइसे केहू राखी ? हम बेसी भुँकवावल नइखीं चाहत । उनुकर जान मार द तब घर में कुसल बा, ना त हमार मुँह तूँ ना देखबऽ, तोहार मुँह हम ना देखब ।

http://bhojpurisahityangan.com

उपदर : अछा. ई बतावऽ जे ऊ कहाँ गइल बाड़न ?

औरत : बकरी चरावे ।

उपदर : अइहन त खिआ के सुता दीहऽ । हम जात बानीं नीमन हथियार ले आवे ।

(उपदर परदा में जातारे । उजागर चरवाही से आ गइले ।)

अजागर : भउजी, खाये के द ।

भउजी : बबुआ सूत रहऽ, खायेक बनावत बानीं तब जगा के खिआइब ।
(उजागर सूत जातारे । उपदर नकली हथियार ले के आवतारे आ जान मारे के नकल करतारे । बाद में लास उठाके परदा का भीतर ले जातारे आ फेरु घूर के मंच प आ जातारे ।)

उपदर : (अपना मेहरारू से) (गीत)

आजा, प्यारी, लगालीं गला से गला ।
तोर मोर तकदीर बनल अब झंझट छूटल पटिदारी
वाला । आजा···
जान मारत केहू ना जानल,
फेंक देलीं ले जाके गहिड़ा नाला । आजा···
देवता-पितर हमार तूहीं सुमिरनी,
तूहीं पुरान–बेद तूहीं माला । आजा···
कहत भिखारी अइसन अधिकारी बा,
पेट में घुसल कलिजुग के काला । आजा···

औरत : (उपदर से) (गीत)

मरलस रे बेदरदा भाई के ।
कइले हतेयारी घोर, मुँह ना देखब तोर
करब खिदमत नइहर जा के भाई के । मरलस···
चीकन बोलत बात, काटि के सहोदर भ्रात
कइसे होखवऽ तूं दोसरा के जनमाई के । मरलस···

http://bhojpurisahityangan.com

दुनियाँ से धो के लाज, करबऽ तूं अकेले राज
मरत बानीं हम सरमाइ के। मरलस···
कहत भिखारी नाई, रोअबऽ जमपुर जाई
गुनि–गुनि अपना कमाई के। मरलस···

बाप रे बाप ! तूं अपना एकलाद के भाई के ना भइलऽ तब तूं हमार का होखबऽ। जा तूं अपना के चेतऽ। तोहरा किहाँ ना रहब। ना त कहियो हमरे जान मार देबऽ।

उपदर : ना, हम तोहरा साथ में घात ना करब। हमरा से तूं अँगुठा के छाप ले लऽ।

औरत : जवन बूढ़ गोतिनी भइल, तवना के भतार गहना से देह भर देले बा। हमरा देह पर बिअहुती खिपटी भूलत बा।

उपदर : एकर फिकिर मत करऽ। हम चोरी करके गहना से तोहार देह भर देब।

(परदा का भीतर से उपकारी आवतारे आ उजागर के खोजतारे।)

उपदर : (अपने आप) भारी कसूर हो गइल।

उपकारी : कवन कसूर ?

उपदर : हम बबुआ के जान मार देलीं।

उपकारी : एकदम से ?

उपदर : साफ एकदम से।

उपकारी : कवना कसूर से ?

उपदर : तीसरा के बूधी में परके।

उपकारी : के अइसन बूधि दे दीहल जे बंसघात क देले रे कुकर्मी पापी ? हमरा सोझा से हट जो। मुँह मत देखाव। जल्दी बबुआ के लास बताव।

उपदर : लास ना मिली। (गोड़ पर गिरिके) भइया, कसूर हो गइल, केहू से नाँव मति ल। ना त ऊ गइबे कइल, अब हमहूँ चल जाइब त तूं बिना भाई के हो जइबऽ (ई कहिके चल देतारे।)

(ई बात सुनि के उपकारी बहू रोवे लागतारी।)

http://bhojpurisahityangan.com

विलाप गीत— (धुन पूर्वी)

उपकारीबहू : पद में गउरी के लाल, गिरत बा हमार भाल
दया कर, दुनियाँ से उठलऽ देवरऊ।

हमरा के छोड़ि गइलऽ, काल के कलेवा भइलऽ
भउजी के प्रान के आधार हो देवरऊ।

चूपे चाप राही भइलऽ, कुछुओ ना कहि गइलऽ
मुदई के मनसा पुरवलऽ देवरऊ।

छोटकी गोतिनियाँ ह भारी झपसिनियाँ
ठगिनियाँ बोतवलस दियवा देवरऊ।

जनतीं जे अइसन करी, बबुआ का लागी जरी
ओकरा में रहे हम ना देतीं हो देवरऊ।

केहू नाहीं कइल अइसन, भाई हो के कइलस जइसन
मरलस जान खानदान के देवरऊ।

अजस कपार चढ़ल, कुल में परेत बढ़ल
पढ़ल पंडित कहवाँ गइलऽ देवरऊ।

मनवाँ के नरम से, भउजी का सरम से
चढ़ि–बढ़ि कबहूँ ना बोललऽ देवरऊ।

चम-चम-चम चाल, आँख, नाक, ओठ, गाल
बिसरत नइखे सुरतिया देवरऊ।

धोती, कुरता, टोपी साफ, केइ बन्हिहन लाफ-काफ
केइ 'भउजी' कहि के पुकरिहन देवरऊ ?

कहत भिखारी दास, आसरा भइल नास
लास ना मिलत बा तलास से देवरऊ।

http://bhojpurisahityangan.com

विलाप गीत २

कइलऽ ना कहना हमार, होसियार सँइयाँ ।
बबुआ के छोड़ि देलऽ छोटकी गोतिनियाँ में
कइलस बंस के उजार । होसियार सँइयाँ···

अपने तूं सूधा भइलऽ, ओकर परतीत कइलऽ
भाई ना, हउए हतेयार । होसियार सँइया···

रो के हम करब काइ, सब लोग जानि जाइ
हँसिहन गाँव के गँवार । होसियार सँइयाँ···

कहत भिखारी नाई, सुनिहऽ भारत के भाई
घर में समाइल अतेयाचार । होसियार सँइया···

विलाप गीत ३

देवरू-देवरू रटते-रटते, बीतत बा आठ पहरिया हो ।
बाबड़ी में ला के तेल, रहले सबसे कइके मेल
धोतिया ना सादा, पाढ़धरिया हो । देवरू···

साँवली सुरतिया बोली, लागल बा करेज में गोली
बिसरत नइखे एको घरिया हो । देवरू···

कइसे मेटाई दाग, मुँह में ना पवलऽ आग
रहि-रहि उठत बा लहरिया हो । देवरू···

तेजि दिहिती प्रान आज, कहि-कहि राज–राज,
रहिती जो आपन मतरिया हो । देवरू···

भाई होके मरलस जान, ऊपर कइलस आपन सान
बंस के डुबवलस पगरिया हो । देवरू···

कहत भिखारी दास, जिला छपरा के खास
जेकर हटे कुतुबपुर नगरिया हो । देवरू···

http://bhojpurisahityangan.com

विलाप गीत ४

हो मोर देवर दुलरू, ना तूं परलऽ चारो दिन बेराम।
भउजी से कुछ ना कहलऽ, चोटही में रहि गइलऽ,
हो मोर देवर दुलरू,
देखहीं में हवहिस गोर चाम। हो मोर देवर दुलरू।
गरदन पर चलल छूरी, मुअलऽ धँसि-धँसि खूरी हो मोर देवर दुलरू,
कइलस हतेयारवा घतइल काम। हो मोर देवर दुलरू।
पूका फारि रोवत बानों हम अबहीं खानी, हो मोर देवर दुलरू
बिसरत नइखे मूरत स्याम। हो मोर देवर दुलरू।
कहत भिखारीदास कइलऽ ना कुछ दिन बास हो मोर देवर दुलरू
बचपन में गइलऽ सुरधाम। हो मोर देवर दुलरू।

(परदा का भीतर से उपदर गहना लेले आवतारे। पाछा-से आके 'चोर-चोर' कहत उनका के पकड़ लेतारे स।)

उपदर बहू : ए रावां, छोड़ि दीही लोगनी, अइसन सूधा आदमी के साथ अइसन ना करे के चाहीं।

दोसर आदमी : (उपदर बहू से) दू चार रोपेया खरच कइला से छूट जइहन।

उपदर बहू : हमरा पास में रोपेया नइखे।

दोसर आदमी : आछा, गहना घ दे।

उपदर बहू : कवना गरजे हम गहना घरीं? हमरा बेटा-बेटी के बिआह लागल बा? करनी करिहन ई, हमरा देह पर दूम टाम बा सेहू फँसा दिहीं।

(उपकारी आवतारे।)

उपदर : ए सिपाहीजी, भइया आ गइलन, हमरा लाज लागत बा।

उपकारी : का बात ह?

सिपाही : गहना चोरवले बाड़न।

http://bhojpurisahityangan.com

उपकारी : ई हमार छोट भाई हवन। हम इनकरा के बहुत जनले-मनले बानीं। हमार दण्ड सजाय करीं। चाहे घ के ले चलीं चाहे कृपा कर के छोड़ दीहीं।

सिपाही : अतना दयालु बाड़ऽ त तूं ही चलऽ।

(सिपाही उपकारी के हाथ पकड़तारे।)

उपदर : (फरका हटिके) धन हवऽ हे मालिक ! 'दूध के दूध, पानी के पानी' बिचार तूं हीं करेलऽ। जतना हमरा से बेइमानी चललन तवन भोगसु, आप से आप कपारे चढ़ि गइल। जा, अब जेलह खटऽ।

दोसर सिपाही : (उपदर से) ए भाई, तोहार के हवन ?

उपदर : अलगिहा भाई ह बेइमानवाँ।

सिपाही : कइसन चाल-चलन के हवन ?

उपदर : बस रउआँ हाथ में परले बाड़न, समुझ लीहीं।

(बात होते होत नगीचा जा के सिपाही उपकारी के छोड़ि के उपदर के चलान करतारे।)

उपदर : (रोवत जात बाड़न) (गीत)

हमार कवना हेत से बिगड़ गइल मतिया। हमार···
लोक–लाज सब खोके, भाई से अलग होके
सहत बानीं बहुत बिपतिया। हमार···
कइलीं बहुत पाप, भाई मारि देलीं आप
घेरलसि आइ के कुमतिया। हमार···
पूका फारि रोवत बानीं, सुनऽ भगवान दानी
केहू ना भइल सँघतिया। हमार···
कहत भिखारी दास, नरक में भइल बास
धोखा दिहलसि औरतिया। हमार···

http://bhojpurisahityangan.com

बेटी वियोग

समाजी : (चौपाई)

श्री गणेश पद नाऊँ माथा ।
तब गाऊँ कुँवरी कर काथा ।।
गावत बानीं लोभ के लीला ।
जेहि से होत जगत में गीला ।।
बेचत बेटी मन हरखाई ।
छाँटत ज्ञान ना परत लखाई ।।
सो सब हेतु कहब करि गाना ।
सुनहु कृपा करि के धरि ध्याना ।।

चटक : (अपना पत्नी लोभा से) ए प्रानप्यारी, बबुई के कतहूँ सादी करे के चाहीं, ई बात के हमरा मन में बहुत फिकिर भइल बा ।

लोभा : कइसे सादी होई, हाथ पर त एह घरी एको पइसा नइखे ।

चटक : पइसा नइखे त एकर उपाय हम रचि नू दीहीले ।

लोभा : ए रवों, कवन उपाय रचब ?

चटक : जहँवाँ सदिया कइल जाई तहवाँ से कुछ रोपेया ले लिआई । जेह से सदियो हो जाई आ ऊ खेतवा बाझल बा तवनो छूट जाई ।

लोभा : ए रवों अइसन काम ना करे के । लोग-दुनियाँ सुनी त सिकाइत करी ।

चटक : ई बात केहुए ना जानी ।

(चौपाई)

सुनु प्यारी सुकुमारी बात ।
नींद परत ना दिने रात ।।

http://bhojpurisahityangan.com

बबुई के कहूँ सादी करब ।
रुपया ले के घर में धरब ।।

लोभा : सुनिलऽ पियऊ बात हमारी ।
निन्दा होई जगत में भारी ।।
जब बेटी के बेंचबऽ माँस ।
सुनि के जगत करी उपहाँस ।।

चटक : जगत केहू कइसे के जानी ?
हमरे तोहरे भइल जवानी ।।
केहू बात जाने ना पावे ।
करहु प्यारी जो कुछ मन भावे ।।

लोभा : नाऊ ब्राह्मण केहू ना जाने ।
परे ना पावे केहू का काने ।।
घर–बर देखि के सादी करीं ।
मन में चिन्ता तनिक ना धरीं ।।

चटक : भाई के डर भारी बाटे ।
सुनला पर केहू लागी काटे ।।
पाछे पूछब ब्राह्मण भाई ।
ना त ममिला परी लखाई ।।

लोभा : (दोहा)

लड़िका देखवा लीं पहिले, भेज के कहीं हजाम ।
पाछे ब्राह्मण लेके जाइब, बनले बा सब काम ।।
ए रवों जाईं, पहिले लड़िका देख आईं ।

समाजी : चौपाई

नाऊ का घर कर के मन ।
रास्ता चललन बेटी बेचन ।।

http://bhojpurisahityangan.com

मिललन नाऊ, कइलन सलाम ।
बाबू चललीं कवने काम ?
सारी हालत देलन बताईं ।
सुनलन नाऊ मन चित लाई ।।

(लइका देखे चटक जातारे । देखि के घरे लवट अइले । आ के अपना मेहरारू के पुकारतारे ।)

चटक : ए गजरा के माई, सुनतारू हो ?

लोभा : ए रवों चलि अइलीं ? बड़ा जल्दी चलि अइलीं हाँ ? ई बताईं कवना गाँवें लड़िका ठीक कइलीं हाँ ।

चटक : ऊहे बकलोलपुर ।

लोभा : ए रवों हम सुनत रहलीं हाँ जे बकलोलपुर के लोग बड़ा धन-सेठ ह । लड़िका नीमन बाड़न नू ? खेत-बघार बा नू ?

चटक : लड़िका ? लड़िका त अइसन बा जे मड़वा में आई त देखि के लोग के दाँत लागी । आ घर-दुआर के पूछतारू ? घर एकदम पाका के ह । अवरू लड़िका के मोटा-ताजा के पूछतारू त लड़िका अइसन बा जे सींक से खोद देला प भक से खून फेंक दी ।

लोभा : लड़िका पढ़ल-लिखल बाड़न नू ?

चटक : लड़िका पढ़ि के फेंक देले बा ।

लोभा : देखब, केहू सिकाइत ना करे ।

(एगो गोतिया आवतारे)

गोतिया : का हो चटक भाई, सादी कहाँ ठीक कइलऽ हा ?

चटक : ऊहे बकलोलपुर ।

गोतिया : ई बतावऽ जे अकेले गइल रहल हा कि आउर केहू के लिआ गइल रहलऽ हा ।

चटक : हम गइल रहलीं हाँ आउर पंडीजी गइल रहलीं हाँ ।

गोतिया : ई तूं नइखऽ जानत जे गाँव में दूगो, चारगो जाति भाई बा आ अकेले पंडित जी के लेके चलि गइलऽ हा ?

चटक : कवन हम बेजाईं काम करतानीं ?

http://bhojpurisahityangan.com

गोतिया : रे मरद्वे जब से तोर चाखा-पाखा चलल, लेंढ़ा लगा के ब देलऽ।
चटक : ई तूं बोली कवन बोलतारऽ ?
गोतिया : तोहरा बुझात नइखे ? लड़की पर रोपेया लेके सादी करतारऽ। तोहरा के केहू भाई में ना खिआई।
चटक : हम अकेले खाइबि।
गोतिया : तोहरा से केहू छुतिहर ना छुआई, नरिअर—हूका तोहार बंद कर दिआई।
चटक : हम आपन बीड़िए पर काम चला लेबि।
गोतिया : देखीला तोहरा अंगना गीत गावे के जाला।
चटक : ए, हम लाउड स्पीकर लगा लेबि।
गोतिया : (चौपाई)

बेटी बेंचि के धइलऽ माल।
तोहरा सिर पर चढ़ल काल॥
चढ़ल बंस के पानी गइल।
जब से तोहार जबाना भइल॥
अइसन बंस में जमलऽ कूर।
दया - धरम के कइलऽ दूर॥

लोभा : (गोतिया से) हमरा सादी का बारे में काटाकूटी करबऽ त हाँड़ी से कपार फोर देब। हमरे आगा के जामल छँवड़ा आइल बाड़ऽ बिआह में काटकूट करे।
(अड़ोसिया–पड़ोसिया ते) आवऽ लोगिन, बबुई लोग दू गो गीत गावऽ लोग।

(सखिन के गीत)

राम नाम कहि–कहि के गनना गनाति,
संझा – पराती गवाति हे।
राम नाम कहि–कहि के चउका पुराता,
राम कहि के कलसा धराति हे।

http://bhojpurisahityangan.com

राम नाम कहि कहि चवमुख बराती,
गौरी–गनेस के मनाति हे।
राम नाम कहि के पितर पुजाता,
राम कहि के मउरी बन्हाति हे।
राम नाम कहि–कहि के बर परिछाति,
राम कहि के चलत बराति हे।
राम नाम कहि–कहि के नहछू निरेछन,
राम कहि सुमंगली सोहाति हे।
राम नाम कहि–कहि के चुमवन भाती,
राम कहि के कोहबर समाति हें।
राम नाम कहि नित बढ़ि एहवाती,
कहत भिखारी नाई जाति हे।

(गीत)

घर-घर हलचल मचल नगरिया में
भल सुभ अगहन मासु ए।
मातु–पिता–पुरुखा के होत बा उचारन
जब भोर साँझ होइ जासु ए।
सीता दुलहिन राम दुलहा के नाम ध के
मिथिला में मंगल गवासु ए।
चउका बइठलन जनक सुनयना जी
जेहि बिधि पितर पुजासु ए।
नन्दीमुख श्राद्ध करि के, जेठन के पाँव परि के
कोहबर क के हुलसासु ए।
तब बरिअतिया दुआर पर लगलन
बाजावा से बात ना सुनासु ए।

http://bhojpurisahityangan.com

द्वार पूजा करि कर, बस्तु सब धरि कर,
आसन लागल बा जनवासु ए।
कहत भिखारी नाई, कुतुबपुर दियरा के
असहीं लगन भहरासु ए।

(गीत)

सुतल रहलीं, सपन एक देखलीं
सपना बहुत अजगुत ह।
जनु केहू ब्राह्मण पोथी लेले आवत
अस मोही देत उपदेस हे।
सुनऽ गउरा सुनऽ गउरा हमरी बचनियाँ,
तप करऽ मन चित लाइ हे।
नारद मुनि के सबद मत भुलिहऽ
बर मिलिहन त्रिपुरारि हे।
ब्रह्मा जगत तप बल उपजावत,
शिव तप बल से संहार हे।
शेष धरत महि सिर पर तप हीं से,
तप हउए जगत के आधार हे।
आउ-आउ माई ए टोला परोसिन,
सपना के करु ना बिचार हे।
आमवा महुइया तर दूनो हो समधिया,
दूनो समधी खेले जुआसार हे।
खेलिअ-खुलिअ जब भइलन चटक देवा
ओरिया तर बइठे मनवाँ मार हे।
किया हरलऽ बाबा हो, गइया भँइसिया ?
किया हरलऽ पाकल पान हे ?

http://bhojpurisahityangan.com

नाहीं हम हरलीं बेटी गइया भँइसिया
नाहीं हरलीं पाकल पान हे।
हम त जे हरलीं बेटी बेटी हो उपातो बेटी
चानवाँ–सुरुजवा के जोत हे।
(बेटहा का दुआर पर परिछावन के गीत)
पटना सहरिया से अइलन सोनार भइया,
ले अइलन सोनवाँ बनाइ हे।
से सोनवा पहिरेलन दुलहा झंटूअ दुलहा,
गनपति गउरी मनाइ हे।
जामा, पैजामा, जूता, रचि-रचि पहिरलन पूता
पालकी में बइठे हरखाइ हे।
परिछत आई माई, मंगल गाइ-गाइ,
बाजत बा बेन[१] सहनाइ हे।
परिछे भउजाई आई, नजर ना लागे पाई,
काजर दिहली लगाइ हे।
गोबर के पिंड़िया पाछा, बिगला पर लागे आछा,
लोढ़ा घुमावत बाड़ी माई हे।
असहीं बरात जात, दुलहा के सुघर गात,
साथे नेवतहरी पाहुन भाई हे।
बेरा सोहात कर, चन्दन लिलार पर
कहत भिखारी ठाकुर नाई हे।
(परिछावन बेटिहा का दुआर पर)
(गीत)
चलनी के चालल दुलहा, सूप के झटकारल हे,
दिअका के लागल बर, दुआरे बाजा बाजल हे।

---

१. बैण्ड बाजा

http://bhojpurisahityangan.com

अँवा के पाकल दुलहा, झाँवा के झारल हे,
कलछुल के दागल, बकलोलपुर के भागल हे ।
सासु का अँखिया में अनपट बा छावल हे,
आइ कर देखऽ बर के पान चभुलावल हे ।
आम लेखा पालल दुलहा, गाँव के निकालल हे,
अइसन बकलोल बर चटक देवा का भावल हे ।
मउरी लगावल दुलहा, जामा पहिरावल हे,
कहत भिखारी हवन राम के बनावल हे ।

(पुरोहित बाबा जी के आगमन)

पंडित जी : ईहे सब होत रही रे ? लगन कम बा, पाछे भवरा चढ़ि जाई ।

एगो जनाना : रावा घर से निकलले ना होखे । हाली-हाली बिधि-बेवहार कराईं ।

पंडित जी : तें अच्छत ले आउ, मीठा ले आउ, दही ले आउ । अँगना में परदा करवाउ । हम पाँच मिनिट में घुलटा के बीग देतानीं ।

(गुरहथी होखे बरनेति बइठता)

(गाना)

बइठल बरनेतिया ओरी तर, बान्हि-बान्हि पगरिया
करिया-करिया देखि हो देखि के हँसत बाटे नगरिया
काढ़ि द चटक हो देवा अपनी हो पुतरिया
लगन महूरत बीतत बाटे सुभ हो घरिया
बड़का भइया तानि हो दिहलन अपनी हो चदरिया
धीरे–धीरे लेइ हो अइलन घर में से बहरिया
गाइ के भिखारी हो ठाकुर कइलन मसखरिया
काहे ना ले अइलऽ ए भसुर अपनी हो मतरिया ?

http://bhojpurisahityangan.com

(झूमर)

अँगना में ओरी तर बइठल वरनेतिया, हाय रे जियरा,
पान मसाला खात, हाय रे जियरा।
पंखा डोलत, हँसि-हँसि बोलत, हाय रे जियरा,
मुँह पर गुलाब छिरकात, हाय रे जियरा।
माड़ो में ब्राह्मण बेद उचारत, हाय रे जियरा,
सुनि-सुनि के जिया हुलसात, हाय रे जियरा।
आसिरवाद दुलहा-दुलहिन के, हाय रे जियरा,
घर में से बाटे गवात, हाय रे जियरा।
करत भिखारी विनय गिरधारी से, हाय रे जियरा,
बनल रहे एहवात, हाय रे जियरा।

(गुरहथी के गीत)

एही सुघर भसुर के कइसे देइहों गारी हे,
सिया जोग ले अइलन कुसुमरंग सारी हे।
गोटा-पाटा-जड़ीदार सुभग किनारी हे,
अँचरी जराकसी में गाँठ झझकारी हे।
लाल चदर, लाल लहँगा जड़ीदार धारी हे,
बीचे-बीचे लाल मनि नाग बइठारी हे।
एही सुघर भसुरा के जाऊँ बलिहारी हे,
सिया जोगे ले अइलन कुसुम रंग सारी हे।
नथिया, बुलाक, बेसर, झुलनी लगाइ हे,
माँगटीका, बननी में हीरा जड़ाई हे।
कनफूल, झुमका झमाझम झमकाइ हे,
बिजली छटा सम बिन्दुली सोहाई हे।
सुनर सिन्होरा लाल सेन्दूर भराई हे,
मन सोहगइला तेही मध्य में धराई हे।

http://bhojpurisahityangan.com

(भूमर)

कलसा का ऊपर चवमुख दीहल बा वार हे,
पंडित जी करत वाड़न वेद के उचार हे।
गहना ले अइलन भसुर सब वजनदार हे,
नथिया, गोड़ाँव, कँगना, पहुँची कलदार हे।
हीरा-काट हँसुली, हलका अजवे विस्तार हे,
अँचरी, मनोरी नव नागा चन्द्रहार हे।
कमरकस, डाँड़ा किनलऽ कवना बाजार हे ?
के ई बनावल अइसन रचि-रचि सोनार हे ?
सारी चढ़वलऽ हमार धँगलऽ दरबार हे
दही–पान के टीका दे के छुअलऽ लिलार हे।
माड़ो में अइलऽ लिहलऽ गउरी निहार हे,
कवना दो देस के बउराह बनिहार हे।
देबे के करत बा मन गारी हमार हे,
माई तोहार कइली कतने इयार हे।
प्रेम के गारी लेलऽ पटुका पसार हे,
बड़ बन के अइलऽ छोट भाई का ससुरार हे।
गाइ के भिखारी ठाकुर कइलन परचार हे,
कुतुबपुर गाँव बाटे गंगा किनार हे।

पंडित : चटक जजमान ! जल्दी आईं।

(चटक आवतारे)

पंडित : लड़की ले आउ रे।

(लड़की अइली)

लड़िका ले आउ रे।

(दुलहा अइले)

लड़िका के धोती ले आउ।

http://bhojpurisahityangan.com

पंडित : (मंतर पढ़त) बबुआजी, हई धोती पहिर लीहल जाउ। देखीं देरी करे के काम नइखे। सब फुरती राखल जाउ।

दुलहा : सब फुरती बा, पंडी जी।

पंडित : आछा, बहुत सादी-बिआह हम करवलीं बाकी अइसन सुघर लड़िका मड़वा में हम ना देखले रहलीं हाँ।

एक सखी : ए पंडीजी, हमहूँ नइहरे-ससुरे अतना सादी बिआह देखलीं बाकी अइसन बोलतू लड़िका से हमरा ना भेंट भइल रहल हा।

पंडित : आरे तूं कहाँ से जनलू? का देखलू? आरे ई का बाड़न? आउरो सवांग इनिको ले आले-आले।

सखी : ए रवों, इनिको ले वढ़ियाँ-बढ़ियाँ?

पंडित : आरे बउराहिन, ई सब सवांग जो चार बजे साँझि खानी कतो मुरेठा बान्हि के दुआर पर बइठि जाला लोग त बुझाला जे खास-खास लंका कांड राम लीला शुरू हो रहल बा।
(लड़िका से) बबुआ जी, धोती पेन्हलीं?

दुलहा : तनी-मनी पिछुआ खोंसे में देरी बा पंडी जी।

पंडित : बबुआ जी, पिछुआ खोंसलीं?

दुलहा : जी।

पंडित : दहिना पैर के जूता काढ़ दीं। कढ़लीं?

दुलहा : जी।

पंडित : बाँवाँ पैर के जूता काढ़ दीं। कढ़लीं?

दुलहा : जी हाँ।

पंडित : बइठल जाउ।

(दुलहा बइठ गइलन)

पंडित : (सखिन से) तू लोग गीत गावऽ। का बइठल बाड़ू लोगनी?

(सखिन के समिलात गीत)

लेहु ना चटक देवा धोतिया, हाथे पान के बीरा।
करु ना समधिया से मीनती, सिर आजु नवायो।
राजा नवे उमराव नइयो, हम तइयो ना नइयो।
एक त उपातो बेटी कारने सिर आजु नवायो।

http://bhojpurisahityangan.com

जँघिया बखानों तोर चटक देवा, जिन्ह बेटी जनमायो।
लटे–लटे मोतिया गुहाइ के बेटी जाँघे बइठायो।
जँघिया बखानों तोर खटाई देवा जिन्ह बेटा जनमायो।
सोने के छत्र पेन्हाइ के बेटा बिअहन आयो।

(पंडित जी बिआह करावतारे। लड़िका-लड़की के गेठजोरांव करावतारे।)

(गाना)

खास दुलहा चनरमा समान, बंसीलाल री।
रचि दिहलन रूप भगवान, बंसीलाल री।
मउरी में लागल फूल, जीव देखि जात भूल, लाल री,
खूब मुँहवाँ में खिलत बाटे पान, बंसीलाल री।
कंठा ह असल सोना, केहू मत करिहऽ टोना, लाल री,
देखला पर छूटत बा परान, बंसीलाल री।
कुरता चदर लाल, गरदन में मोहर माल, लाल री,
होता माड़ो भीतर रसखान, बंसीलाल री।
खोजलन चटक बाबू, करिके बहुत काबू, लाल री
होइ गइलन नीके हलकान, बंसीलाल री।
आइल बरात गाँव, दुनियाँ भइल नाँव, लाल री,
बर बूढ़ कनियाँ जवान, बंसीलाल री।
गहना बा भारी-भारी, कहे सब नर-नारी, लाल री,
मिललन कुटुम्ब खानदान, बंसीलाल री।
सादी में भइल होस, केकरा के दीहीं दोस, लाल री,
बिधि बस हो गइलन कन्यादान, बंसीलाल री।
कहत भिखारी नाई, जिला छपरा के भाई, लाल री
जेकर हउवेकुतुबपुर दियर में मकान, बंसीलाल री।

http://bhojpurisahityangan.com

(गाना)

रात कछु बीति गइले, रात कछु बीति गइले,
लगने में सादी में भइले,
गह गह करत बा अँगनवाँ हो लाल ।

नोंह में महावर लाल, नोंह में महावर लाल,
सेन्दुर भरल बा भाल,
रचि-रचि वान्हल बा कंगनवाँ हो लाल ।

बर दुलहिन सोभे, वर–दुलहिन सोभे,
देखि-देखि के मन मोहे,
तनवाँ में भरल बा गहनवाँ हो लाल ।

कहत भिखारी नाई, कहत भिखारी नाई,
लउवा मेरवलन भाई,
माई जी के मनवाँ मगनवाँ हो लाल ।

(पंडित जी बिआह करावतारे । लड़का–लड़की के गेठजोराँव करावतारे ।)

पंडित : बबुआ जी !

दुलहा के बाप : हं पंडीजी !

पंडित : हमार सब नेग चार मिल जाउ ।

बेटहा : सब सबेरे मिली ।

पंडित : सुमंगली, गवनकराई, भुइसी दछिना, गनेसपूजा, अरधा के नेग ई सब सबेरहीं मिली ?
(दुलहा से) हेने आइल जाउ बबुआ जी !

(दुलहा आवतारे ।)

पंडित : कहीं, सब ममिला हाथ में आ गइल नू ? रावा कहत रहीं कि पंडी जी कइसे नीक निहोर से बिआह पार लागी । पंडी जी का आसिरबाद से नीक निहोर से बिआह पार लागि गइल नू ?

बेटहा : हँ, हँ, सब पार लाग गइल ।

http://bhojpurisahityangan.com

पंडित : आछा त, हमरा साथ में रउआ बात-बिचार बा तवन ?

बेटहा : कवन बात ?

पंडित : अइसे काहें कहतानीं ? इयाद पारीं, सुरुता पारीं ।

बेटहा : हमरा नइखे इयाद परत, रवे कहीं ना ।

पंडित : जवन हमरा साथ में रावा करार-मदार रहे दू सइ रोपेया के ।

बेटहा : ऊ रावा अबहीं ना मिलल हा ?

पंडित : हमरा के कब देलीहाँ ? इयाद पारीं । सुरुता पारीं ।

बेटहा : ए पंडी जी, सुनीं । दू स राउर आ चउदह स उनुकर, सोरह स रोपेया के जवन बातचीत तय रहे तवन हम सोरहो स रुपया उनुका के दे देलीं । ऊ कहलन जे दीं, सोरहो स रोपेया हमरा के दीं, हम एह में से दू स रोपेया निकालि के पडीजी के दे देब ।

पंडित : ओह बेमान के काहें के देलीं···—?

(चटक के चाल करत)

चटक जजमान ! चटक जजमान !

चटक : हँ पंडी जी !

पंडित : कहीं, रउआ घबड़ा गइल रहीं जे पंडी जी दुनियां सिकाइत करी । कहीं, जे ई बात केहू जाने पावल ? आ ई सिकाइत का बा महाराज ? ई त बदलइया बा, एक हाथ लछिमी लेना बा, एक हाथ लछिमी देना बा ।

मूल जगत में दूइ है, एक राम एक दाम ।
राम देत है मुक्ति पद, दाम सम्हारत काम ।।

आछा ई बताईं, हऊ ममिला हाथ में क लेले बानीं नूं ?

चटक : हँ—हँ, पंडी जी ! क लेले बानीं ।

पंडित : सेही कहीं जे दुनियां भुला जाई त भुला जाई बाकी हमार चटक जजमान ना भुलइहें । ना त एही बिआह में कतना भितरिया काटाकूटी लागल रहल हा जे कइसे धनी का घर में बिआह हो जाई । पंडी जी का आसिरबाद से नीक निहोर से बिआह पार लाग गइल ।

चटक : ए पंडी जी ! हमरा के तनी बर-बरात के बिदाई कर लेबे दीं त राउर फरिआ नूं जाला । एह घरी रउआ घरे दुआरे जाईं ।

http://bhojpurisahityangan.com

पंडित : ए बबुआ, बर-बरात के बिदाई करत रहिह। जवन ममिला फरिआ जाला तवना के फरिअवले के मोल ह।

चटक बो : ए पंडी जी, रावा का अंगना में हाला-गदाल-कइले चलतानी ? राउर दू-चार आना नेग-चार जवन होई तवन बिहान सबेरे ले जाइबि।

पंडित : आ हा हा हा ! दू-चार आना नेग—चावर के ई ममिला नइखे। ई बरतावा दोसर बा, रावा जानते नइखीं।

चटक बो : कवन भाला बरतावा बा दोसर जवन हम जानते नइखीं ?

पंडित : जइसे कि एह लड़की का ऊपर में सोरह स रोपेया के बातचीत बा जवना में दू स के हमरा के करार-मदार भइल बा।

चटक बो : रावा के दू सव ?

पंडित : हमरा के दू स के बातचीत भइल। हम कहलीं जे आछा, पंडित जी संतोख के पहाड़ हवे। हमरा के जेही भइल सेही ठीक।

चटक बो : आछा त ई ममिला हम नइखीं जानत। जाके ओनहीं फरिआ लीं।

चटक : ए पंडी जी, रावा अतना काहें घबड़ाइल बानीं ? तनी हमरा के नर— नेवतहरी के बिदाई क ना लेबे दीहीं ?

पंडित : हम घबड़ाइबि काहें साहेब ! ई त हम जानतानीं जे रउआ घर में घइल बा त पंडित जी का घर में सनूख में घ के ताला लगावल बा।

चटक बो : ए पंडी जी, राउर ममिला हम फरिया दीं ?

पंडित : हें—हें, कहीं; हमरा जजमानिन के कहनाम बा जे दुनियाँ के बाकी रही त रही बाकी पंडी जी के काहें रही। ई खान्दान आजुए के मेंहीं ना नू ह ? जरिए के मेहीं ह।

चटक बो : ए पंडी जी, जवन हम कहब तवन मानब नूं ?

पंडित : जरूर मानब।

चटक बो : त रउआ अपना घरे—दुआरे चूपे चाप जाईं, हम एको पइसा देब ना।

पंडित : इहाँ से हटऽ।

बोसर अनाना : ए रवों, मउगी के देह प रावा कबड्डी खेलतानीं ?

http://bhojpurisahityangan.com

पंडित : भागऽ ना त दू चटकन देब तहरा के। तें एके हाली पंडी जी के पुरान गुंडे समुझ लेलिस। खबरदार, जीभ लगा के राखे खींच लेबि।

(चटक से) ए बबुआ, तूं हमार रोपेया द।

चटक : ए पंडी जी, कुछ भोजन क लीं। हाथ जोड़ले बानीं, गोड़ परतानी।

पंडित : भोजन कदापि काल में ना होखी। पांच मन सोनो देबऽ तबहूँ ना।

(चटक बो गोड़ पर गिरताड़ी)

पंडित : हमार देहि छू देलिस का रे ?

चटक बो : ना, तनी-मनी धोतिया में हाथ ठेकि गइल हा।

पंडित : हिनकर मखदूर भइल हा पंडी जी के भोजन करावे के ? एक आदमी कुत्ता के मांस आदमी का चँउड़ में क के जूता से तोप देले रहन। अपना चउका में केहू के जाये ना देस। दोसर आदमी पूछल जे केकरा से छुआई जेकरा डरी रावा अतना इंतजाम क के रखले बानीं। ऊ आदमी कहल कि जे आदमी लइकी बेंचेला ओकर परछाहीं पर जाई त भोजन अशुद्ध हो जाई। तेकरा इहाँ पंडित भोजन कइसे कर लेसु ?

चटक बो : त जब भोजन ना होई त हई दू स रोपेया ले के का होई ?

पंडित : कहीं खेत प ध दिआई।

चटक बो : त खेतवा में अनजा-पनियाँ होई त पंडी जी के भोग ना लागी ?

पंडित : भोग लागी तोहरा लेखा आजुए ? जहँवाँ जइसन, तहँवाँ तइसन; इहे ना देखी से पंडित कइसन ?

एगो औरत : ए बाबा, हम रावा से पूछतानीं जे हमरा चटक काका के बरो खोजे रवे नूं गइल रहीं सँउसे पाग बान्हि के ?

पंडित : का लइका के आन्हर देखतारिस कि लंगड़ ? निकहा त लइका हेह गेस बत्ती का सामने बिजली बत्ती अस बरता।

औरत : आन्हर नइखन, लंगड़ नइखन। देखीं त, आँख मुँहे मार कीची फेंकतारन।

पंडित : आरे त जेकरा आँखे ना रही ओकरा कीची कहाँ से गिरी रे ?

http://bhojpurisahityangan.com

औरत : ए रवों, त कीचो गिरेला कीची लेखा कि मार ढकना-के-ढकना। किचिये गिरेला ?

पंडित : आहाहाहा, तोहरो अकिल के थाह पंडीजी के चल गइल। तोहरा से एक हाली जे कह देलीं कि सुखी घर के लइका ह, डबल जे पहथन घीव खइले बा, से घीव के मइल आँख मुँहें निकल रहल बा।

औरत : ए बाबा, एगो किचिये ले हइन ? इनिका मुँह में एको दाँत बड़ुए ?

पंडित : आरे, तोरा से के कह दीहल जे लइका के मुँह में दाँत नइखे ?

औरत : आह बाबा, हमरा से के कही ? हमरा नइखे लउकत जे हऊ मुँह बावतारे त अकास लउकता ?

दुलहा : पंडीजी, एगो दाँते नइखे नू ? बाकी सब ममिला ठीक बा।

औरत : ए बाबा, रावा सुनलीं नू ? ईहे मरद के बोली ह ? सब ममिला ठीक बा आ बोलतारे त साँसे टँगा जाता।

दुलहा : सुनीं। हमरा से तनी रावा हटि के बतिआईं ना त हमरा नजरी प रावा चढ़ गइल बानीं।

पंडित : औरत से)—अब जबाब पवलू नू ? अब हेह लड़िका से भला जबाब—सवाल में हई फरह पावसु ? ई लड़िकवा देखहीं में फूहर-पातर लागत बा ना त नव के पहाड़ा पढ़ि के फेंक देले बा। सुनु, सब खोजला से ना मिले।

औरत : सुनीं, हमरा देह में आग मत लगाईं। रावा का खोजले बानीं ?

पंडित : सुनु। सगरे जब गाँव-नगर में हाला हो गइल हा जे लड़की पर रोपेया लेके सादी करत बाड़न त केहू माड़ो गाड़े ना जाई, केहू गीत गावे ना जाई, केहू पँइचा-उधार ना दीही। अतना संगठन बस्ती में हो गइल हा तब हमार दिल दयालु ठहरल, भीतरे—भीतर कील-कंटा जोरि के बिआह पार करा देलीं। भितरिया एह में डबल रोपेया गनाइल बा। तें सीधा आदमी, तें का जाने गइलिसि ?''

चटक बो : हें, डबल रोपेया गनाइल बा त का एह में हीसा चाहीं ?

पंडित : मति घबड़ा। दुनियाँ में ढोल पिटाई।

http://bhojpurisahityangan.com

चटक बो : त ढोल पिटा के हमार का होई ?

पंडित : तोहार का होखे के बा ! मुड़ली माथ प पानी पड़ल, डगर गइल ।

(पंडित जी जातारे ।)

(औरत लोग झूमर गावता)

(झूमर १)

काँचे नींद दिहलन जगाइ हो, ननद तोहार भइया ।
आँख भरमत रहे भवन में सेज पर,
झटकि के देवर मोर धइलन कलइया ।
नइहर जाइब त जल्दी ना आइब,
सधा लेहब दइया ।
चोरी के बात हम तोहरा से कहलीं,
लगइहऽ मति लइया ।
कहत भिखारी भगवान के भरोसा बा
भव से पार कर द नइया ।

(झूमर २)

पिया मोर गइलन बहरा, पिया मोर गइलन बहरा,
चढ़ल बा जवानी पहरा,
एको ना भेजवलन पतिया हो लाल ।
पढ़ल पंडित मोर, पढ़ल पंडित मोर,
हमरा के कइलन भोर,
कइसे हेराइल हइन मतिया हो लाल ।
ताकत बीतत बा दिन, ताकत बीतत बा दिन,
पिया कब अइहन फिन ?
आठो घरी लहकत बा छतिया हो लाल ।

http://bhojpurisahityangan.com

कहत भिखारी नाई, कहत भिखारी नाई,
एको ना लउके उपाई,
गंगा मइया काटि द बिपतिया हो लाल।

(झूमर ३)

जियरा ललचावेला रे मोर देवरवा,
जियरा ललचावेला मोर देवरवा।

देवरा के जुलुफी बा करिया भँवरवा,
बा करिया भँवरवा,
सचमुच जल में के सेवरवा। जियरा०···

घूमि के नगरिया में ठीक दूपहरिया में
झूठो के खँखारेला पछुआरवा। जियरा०···

देवरा से कर जोरि अरज करीले हम
तेकरा के देहब गलेहारवा। जियरा०···

कहत भिखारी मोर, बीती जो जवानी जोर
पाछे पछतइबे रे हतेयारवा। जियरा०···

(झूमर ४)

ननद अपना भइया से बनवा द हो, हमरा नाक के भुलनियाँ।
तीन पाढ़ के सारी मँगा द, रँगल झूला बेंगनियाँ। ननद०···
छोटे झूला के छव आँगुर तोई, लागल पीठ पर कमनियाँ। ननद०···
चन्द्रहार, हलका, बननी, झूमक, पाँव में के पैंजनियाँ। ननद०···
बाजू, बहरबूटा, जोसन, कँगना पर पछुआ के घनियाँ। ननद०···
कहत भिखारी विआह भइल खुसी से, चढ़ल सोना-चनियाँ। ननद०··

http://bhojpurisahityangan.com

(झूमर ५)

सवेरे जान, ववुई जइहन ससुरिया ।
ए सखी आज के रात सोहात वा, लगन मझरत घरिया । सवेरे···
लागी भवन भेयावन ओही घरी लगिहन छछने मतरिया । सवेरे···
मोर अभाग जे साथ छूटत वा मिल लेंहू भरि अँकवरिया । सवेरे···
बर-दुलहिन के बिलोकिं लोग सब धन-धन अवध नगरिया । सवेरे···
बर भगवान जानकी दुलहिन, चरन कमल बलिहरिया । सवेरे···
कबि जन माफ करहु अक्षर के, कइलन भिखारी लबरिया । सवेरे···

गाना

जब सीता चढ़ी सवारी है, तब बिलखत सब नर-नारी है ।
रानी सुनयना आगे होकर
रामचन्द्र से कहती रोकर
नइखीं हम कुछ देबे लायक
तुम हो तीन लोक के नायक
केवल प्राण–पियारी सिया मेरी पुत्री शरण तिहारी है ।
भरत, लखन, रिपुहन से माता
बार–बार कह गद–गद बाता
अवधपुरी रघुकुल मनि राऊ
अतिशय कोमल शील सुभाऊ
कुछ भूल होय तो करब माफ तव चरण ककल बलिहारी है ।
अवध जाइ सिया करिहें बसेरी
भवन सून लागी अब मेरी
राखब छोह सिया पर नीके
पोसत भानु जिमि कमल-कलीके
हम कँहू का अतना जल्दी में, अब चलने की तइयारी है ।

http://bhojpurisahityangan.com

जय श्री सगुन रूप अवतारी
शोभा-शील-सिन्धु बर चारी
जय करुणानिधान भगवाना
धरत रूप के शंकर ध्याना
नित देहु दया करि के दर्शन, बर माँगत दास भिखारी है।

(बेटी के विदाई होता)

दोहा

हित चित में रहत सदा कहत भिखारी नीत
पुरुष जनाना प्रेम से झूम-झूम गावत गीत

(महतारी का आगा बेटी के बिलाप)

जसते मइया माहुर दे के, काहे ना दिहलू मारी ?
हमरा के नाहक पालन करे में सासत सहलू भारी ।।
आठ मास नव उदर का भीतर, बाहर गोद मँझारी ।
दूध पिया के, तेल लगा के, काया के दिहलू सँवारी ।।
बानी बालक बयस के थोरी, नइखे बुद्धि-बिचारी ।
जो कुछ चूक होत अनजानत, माफ करहु महतारी ।।
ना कुछ चूक होई अब हम से, परतानी पाँव तिहारी ।
चहे भिखारी मति द मइया घर से हमें निकारी ।।

(महतारी के तोख-बोध भरल गीत)

(पूर्वी)

(महतारी समझावतारी)

चूप होखऽ प्रान के आधारी सुकुमारी प्यारी,
विधि लिखि दिहलन लिलार में दुलरुई ।
देस-परदेस, घर-बाहर भोगे के परी,
दिन-रात मोर बात मानि ल दुलरुई ।

http://bhojpurisahityangan.com

आदि के जमाना चाहे, आज के जमाना चाहे
अन्त के जमाना से चलाना बा दुलरुई।
बेटी जनमाइ पोसि-पालि के भेजाइ देत,
परबस अँखिया के अनल दुलरुई।
बिना तोहरा के मोरा भवन उदास लागी
निसदिन अँखिया के पुतरी दुलरुई।
नव मास ढोइ कर, लेटर-बाकस माँही,
सब दुख गावल फुसार बा दुलरुई।
खाटा-मीठा-तींता तेजि देनी बबुई के हेतु
सउरी में सधि कर रहनी दुलरुई।
सेहु बिछुरत नाहीं छूटत परान मोर,
छतिया ना हउए पथलवा दुलरुई।
सोचला पर दुख मोरा लागत बा पहाड़ लेखा
कहनो ना जात बा भिखारी से दुलरुई।

(बेटी के बिलाप)

(चौपाई)

हाय पिता, हाय मइया मेरी।
भइया तोहरा गोड़ के चेरी॥
हाय भउजी, सब सखी सयानी।
हम से काइ भइल नुकसानी?
टोला-परोसा के नर-नारी।
एह कौतुक के बिलोकनहारी॥
पत्नी बालक पति बूढ़ा जवरे।
होखत सुमंगली उठावत कवरे॥

http://bhojpurisahityangan.com

खरिका करत ढेंकारत खानी ।
चाचा–चाची मन में मुसुकानी ।।
जइसे कचरत पान–कसइली ।
ववुई जनम–लोक से गइली ।।
हाय गाँव के कुल–परिवारा ।
हमें धसोरत बीच ही धारा ।।
अनहित हीत काम नहिं आवत ।
केहू ना बाबू के समुझावत ।।
एह घरी पर केहू होखहु सहाई ।
बिदा करे पावे मति माई ।।
कहे भिखारी भिक्षा दीजै ।
अतना बिनय मोर सुनि लीजै ।।

(बिदाई का बेरा दुलहा दहेज मांगतारे)

दुलहा : परनाम माई जो !
सासु : जीहीं ।
दुलहा : दहेज हमरा के दीहीं ।

(सासु मुट्ठी में बान्हि के पइसा देतारी)

दुलहा : ई हम ना लेबि । हमरा के एगो गाय दीं, दूध पियें के ।
सासु : गाय होई त रावा के ना देबि त केकरा के देहब ? अवहीं ईहे वा, ले जाईं ।
दुलहा : सलाम बाबू जो !
ससुर : जीहीं ।
दुलहा: दहेज हमरा के दीहीं ।

(ससुर पइसा देतारे)

दुलहा : ई ना लेबि । घोड़ा दीं दोगाँवा[1] चढ़े के ।

१. घोड़ा के एक चाल ।

http://bhojpurisahityangan.com

ससुर : अबकी ईहे ले जाईं। घोड़ा होई त रावा के ना देहब त ककेरा के देब ?

एगो सखी : (पइसा देत) ए बबुआ, हई ले ले जा।

दुलहा : परनाम।

(चल जा तारे)

समरजी : (चौपाई)

एहि विधि होत बरात बिदाई।
दुलहा के मन अति हरखाई॥
दुअरा पर बा धइल मेयाना[1]।
एहि बिधि करत बरात पेयाना॥
चढ़ी मेयान सेयान उपाती।
पति के घर में गई बिलखाती॥
कछू दिवस बीते ना पाई।
दुलहिन रूस के नइहर आई॥
बेटा गिरे पिता पग जाई।
तुरते दुलहा पहुँचे धाई॥
माता रोवे–धुनि–धुनि सिर।
नार–नारी के लागल भीर॥

(उपातो रूस के नइहर आ गइली। तब ले दुलहा लाठी लेके धावल पहुँचातारे ई कहत)

दुलहा : ना फिरबू ? ना फिरबू ?

(पहुँचला पर एक आदमी लाठी घ लेता हें–हें कहत)

दुलहा : ना, छोड़ीं सभे। बे मरले जान ना छोड़ब। एको बात के सवाल ना सुने, साहेब ! एक लोटा पानी मंगला से ना देबे।

(अंगना में एगो सखी के प्रवेश)

सखी : ए चटक बो काकी, उपातो बबी नू अइली हा ?

---

१. पालकी

http://bhojpurisahityangan.com

मतारी : (उपाती से) काहे रूस के अइलू ए हमार करेज ?

सखी : का करेज, करेज कइले बाड़ू हो ? दुआर पर झाँटुल नू आके खाड़ा बाड़े ।

दुलहा : सलाम माई जी ।

सासु : सलाम ना जे कथी दो ।

दुलहा : सलाम बाबूजी ।

ससुर : जीहीं । कहीं साहेब, ना लड़को दुइए महीना गइला भइल, ना चारे महीना, तब तक ले लड़की रूस के हमरा घरे भाग आइल । अबहीं त उहाँ से हमरा मर-मिठाई नू आवे के ह ?

सखी : आइ हो बाबा, हमनिओं के झूमर गावत-गावत गला फंस गइल जे चटक काका का समधियान से आम, कटहर, आहुर—पुरिया, मिठाई आई त हमनी का मिली । आ ई कवना दो मुलुक में सादी कइलन कि करिखाहा हाँड़ी लेखा मुँह कइले आवता ।

दुलहा : साहेब, से कहीं जे आम, बड़हर, केरा, मर-मिठाई सभ गाड़ी पर लादल महजूद, बाकी घर में अनपटरी हो गइल त हम का करीं साहेब ?

एगो पंच : हं, हं, रावा का घटले बा साहेब !

चटक : कहीं साहेब, हमरा अइसन नालायक कुटुम से सादी भइल जे दुनियां भर में हँसवा के घ दीहल ।

दुलहा : कहीं साहेब, अइसन भकोल कुटुम से कामे परल कि हमरा के चउहद्दी भर में हंसवा के घ देलन ।

चटक : कहीं साहेब, हमरा खान्दान के इनिका पेसाब ना मिले के चाहीं ।

दुलहा : हमरा खान्दान के तोहरा टट्टी ना मिले के चाहीं । सोरह सः रोपेया गना के लामा-लामा बात बतिआवतारे ।

चटक : लेबऽ रोपेया के नाँव तूं ?

(ससुर—दामाद के हाथा-बाँहीं, धारा-धरी)

सासु : (पंच से) ए रवों सुनीं । इनिका के हमरा दुआर प से खदेर दीं । ना त, हंड़िया उठा के इनिकर कपारे फोरब । कहीं त, जइसन हमरा बेटी का गोड़ में रूप बा ओइसन एह करिखाहा का मुँह में रूप हइस ?

http://bhojpurisahityangan.com

पंच : अइसे ना कंहे के ।

दुलहा : हमरे रूप में तहार बेटी लगिहे ? सोरह स रोपेया गना के कंठा-हंसुली पेन्हले चलतारू ?

(हल्ला—गुल्ला होता । पंच के शांत करे के परता)

पंच : (दुलहा से) एही में ईजति बा ? बइठीं दस दिन, दस दिन के दिन धरवा दिआता ।

दुलहा : ना. संगे—सँगे बिदाई करवा दीं ।

पंच : कहीं मँगे—सँगे बिदाई होला ?

दुलहा : एक लोटा पानी के देनिहार केहू नइखे ।

सखी : हँ, पानी के देनिहार तोहरा केहू नइखे, बाकी अब ले तोहरा के पानी के देत रहल हा ?

दुलहा : अब ले राम जी रहलो हाँ ।

सखी : हँ, ए मुँहवाँ प तोहरा के रामजी पानी देवे आवतारन ।

दुलहा : तो हम को क्या समझती है ?

सखी : तोहरा के बुढ़वा बानर समझतो है ।

दुलहा : हम तोहरा के बुढ़िया बनरो समझतानीं ।

पंच : ए जी, चटक जी, ई सभ झंझट छोड़ीं । आखिर घर-दुआर छूटहीं के नइखे, बिदाई कर दीहीं ।

चटक : (जनाना से) ए गजरा के माई, सुनऽ । आखिर घर-दुआर छूटे के नइखे । बिदाई क के झंझट हटावऽ ।

(बेटी के मतारी रो-रो के कहतारी)

मतारी : चौपाई

अपने मन से भइलऽ भूपा ।
बेटी काटि के डललऽ कूपा ।।

बूढ़ा बर से सादी कइलऽ ।
गाँव-घर का चीत से गइलऽ ।।

अइसन जग में कइल ना कोई ।
जिनिगी भर मोर बबुई रोई ।।

http://bhojpurisahityangan.com

दिल से दया दूर कइ दिहलऽ ।
अजस्स पातक सिर पर लिहलऽ ।।
सरप हो के दिहलऽ डंस ।
अब ना बेटी के बढ़ी बंस ।।

बाप ना हउअ, हउअ भूत ।
अब ना बेटी खेलइहन पूत ।।
बाप ना हउअ, हउअ जीन ।
बबुई के बा नाया सीन ।।

तोहरा आँख में परल धूर ।
कइलऽ बुढ़वा वर मंजूर ।।
कहे भिखारी लालच कइलऽ ।
लोक–वेद के इज्जत खइलऽ ।।

सखी : चुप रहऽ ए चटक त्रो काकी ! इनिकर जिनिगी आबाद रही त साले भर में मोटहन नाती खेला लीहऽ ।

(दुलहा से हँसी करत) ए बबुआ सुनऽ । एगो काम करिहऽ जे बजार से एक बोतल सालसा मँगा के दूनो टाइम साँझि-सबेरे पिअले जइहऽ । ई पिअबऽ त मोटा के लाल तगड़ा हो जइबऽ । तब लागो खट-खट लड़िका होखे । आ ना पिअबऽ त कवन ठीक बा जे अगिला पुरनवाँसो ले रहबऽ कि रामजी प जइबऽ ।

दुलहा : सुनीं, रवो के एगो हम कहतानीं तवन रावा करीं । रवो एक बोतल सालसा मँगा के पीहीं त रवो भरल-भरल लड़िका होई ।

पंच : विदाई कर ।

(बेटी बाप का आगा रो–रो के विलाप करतारी)

(पूर्वी)

बेटी : गिरिजा कुमार करऽ दुखवा हमार पार,
ढर-ढर ढरकत वा लोर मोर हो बाबूजी ।

http://bhojpurisahityangan.com

पढ़ल-गुनल भूलि गइलऽ समदल भेंड़ा भइलऽ
सउदा वेसाहे में ठगइलऽ हो बाबूजी।
केइ अइसन जादू कइल, पागल, तोहार मति भइल,
नेटी काटि के बेटी भसिअवलऽ हो बाबूजी।
रोपेया गिनाइ लिहलऽ, पगहा धराइ दिहलऽ
चेरिया के छेरिया बनवलऽ हो बाबूजी।

(बाप का गोड़ लगे बइठतारी)

(बीच में पंच के टोकारी)

पंच : ऐ लड़की रोअतारी जोड़ी खातिर। जवना जोड़ी के हमनी का मरदाना हो के बखान करीला जे फलाना के दुआर कइसन सोभता—एक जोड़ी बैल बा, चाहे एक जोड़ी घोड़ा बा अथवा कुत्ता-कबूतर के जोड़ी के बखान करतानीं। आ आदमी के जोड़ी नइखे लागत, जे हमनी के अपना से खोजि के लगावे के बा, सेकर जोड़ी नइखे लागत। जे आदमी के सब कुछ के जोड़ी लाग जाय आ अपना बेटी दमाद के जोड़ी ना लागे त जाने के चाहीं कि हमार सभ दिन के जोड़ी लगावल आज अनेर हो गइल।

(बेटी-बिलाप आगे बढ़ता)

साफ क के आँगन गली के, छीपा-लोटा जूठ मलिके
बनि के रहलीं माई के टहलनी हो बाबूजी।
गोबर-करसी कइला से, पियहा-छुतिहर घइला से
कवना करनियाँ में चुकलीं हो बाबूजी
वर खोजे चलि गइलऽ, माल लेके घर में धइलऽ
दादा लेखा खोजलऽ दुलहवा हो बाबूजी।
अइसन देखवलऽ दुख, सपना भइल सुख
सोनवाँ में डललऽ सोहागावा हो बाबूजी।

http://bhojpurisahityangan.com

बुढ़ऊ से सादी भइल, सुख वो सोहाग गइल
घर पर हर चलववलऽ हो बाबूजी।
अवहूँ से करऽ चेत, देखि के पुरान सेत
डोला काढ़ऽ, मोलवा मोलइहऽ मत हो बाबूजी।
घूठी पर धोती तोर, आस कइलऽ नास मोर
पगली पर बगली भरवलऽ हो बाबूजी।
हँसत वा लोग गँइयाँ के, सूरत देखि के सँइयाँ के
खाइके जहर मरि जाइब हम हो बाबूजी।

पंच : अंडा सिखावत बच्चा बोल।
बेटी बाप के कहत भकोल॥

आज हमनो का दू आना, चार आना के सउदा कीने बजार में जातानीं त समुझावे के परता जे भइया, तूं चतुर आदमी से सउदा किनवइहऽ ना त तूं ठगा जइबऽ। त बताईं, दू आना, चार आना के सउदा ठगइला के हमनी का अतना फिकिर रहता। बाकी जेह लड़की के पति खरिद ये जातारन ओह लड़की से ना कहाय कि बाबूजी हमार बर नीमन खोजिहऽ, घर नीमन खोजिहऽ। एह अनबोलता के हइसन जबून सउदा खरिदाजातारन। काहे? आज-कालह इज्जत बड़का हो गइल बाड़न. धरम छोटका हो गइल बाड़न। धरम के बड़का समुझल हा के?

शिवि-दधीचि हरिचंद नरेसू। धर्म हेतु सहे कोटि कलेसू॥

धरम के बड़का ऊहे लोग समुझल हा। लड़की के सुख देल जो धरम बुझाय त जोर से बोले के—

बोलिये राजा रामचन्द्र की जय।

(लड़की के विलाप जारी रहता)

खुसी से होता विदाई, पथल छाती कइलास माई
दूधवा पिआइ विसराइ देली हो बाबूजी।

http://bhojpurisahityangan.com

लाज सभ छोड़ि कर, दूनो हाथ जोड़ि कर
चित में के गीत हम गावत बानीं हो बाबूजी।
प्राणनाथ धइलन हाथ, कइसे के निबही अब साथ,
इहे गुनि-गुनि सिर धूनत बानीं हो बाबूजी।
वृद्ध बाड़न पति मोर, चढ़ल बा जवानी जोर
जरिया के अरिया से कटलऽ हो बाबूजी।
अगुआ अभागा मुँहलागा अगुआन होके
पूड़ी खाके छूड़ी पेसि दिहलसि हो बाबूजी।
रोवत बानी सिर धुनि, इहे छछनल सुनि
बेटी मति बेंचे दीहऽ केहू के हो बाबूजी।
आपन होखे तेकरो के, पूछे आवे सेकरो के
दीहऽ मति पति दुलहिन जोग हो बाबूजी।
आँखि से सूझत कम, हरदम खींचत दम,
माथवा के बारवा चँवरवा हो बाबूजी।
हूकुर-हूकुर छाती, करत बाटे दिन-राती,
अधजीव दुलहा पसन कइलऽ हो बाबूजी।
घरी-घरी होता झरी, साक से भरल नरी,
नरक बीगत दिन बीती मोर हो बाबूजी।

पंच : आजु हमनी का पूछतानीजा जे कवन लड़िका भइल हा त कहे के परता कि लछिमी भइली हा। ओह लछिमी से कतना सुख परापत बा। गया जी में गइला प पहिले नने-नानी के पिंडा दिआला। नाती हवन से बेटिये के जर से। जवना गया जी में सब देस के लोग आवेला पिंडा पारे खातिर, जवना पिंडा में घीव परता, मधु परता, मखाना परता, आ ऊ पिंडा पहिले नाना-नानी के दिआता। त जवना लड़की से अतना लाभ बा

http://bhojpurisahityangan.com

ओह लड़की के डोला नइखीं काढ़ देत, चाना उगाह के नइखीं सादी क देत, त आजु बाच देतानीं। एह ले अधरम एको नइखे।

बेटी :

लूजुर-लूजुर पिया, देखऽ मुँह लेके दिया,
कहीं कइसे कहे नइखे आवत हो बाबूजी।
मुँहवाँ में दात नाहीं, भात चुवेला गाल माहीं,
बावला प भीतरी सलंदर हो बाबूजी।
जीभ-दाँत-ओठ-गाल, पान से भइल बा लाल,
काल लेखा लागत बा सुरतिया हो बाबूजी।
रतिया के छतिया में बतिया जरेला मोरा,
बीच डललस विचवान मोर हो बाबूजी।
हम कहि के जात बानीं, होई अबकी जीव के हानी,
नाहीं देखब नइहर नगरिया हो बाबूजी।
रोइ-रोइ गवला के, अइसन पद मिलवला के,
नाम ग्राम कहिके सुनावत बानीं हो बाबूजी।
हईं हम नाई जात, खोलि दिहलीं मुख बात,
लछिमी के लछन उतरलऽ हो बाबूजी।
'पूरुब के कोना घर, गंगा के किनार पर,
छपरा से तीन कोस दिअरा में बाबूजी।
कहत भिखारी तूं खरारी के इयाद करऽ,
फेरु मति करिहऽ अइसन काम तूं हो बाबूजी।

हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे-हरे।
हरे राम, हरे राम, राम-राम हरे-हरे॥

http://bhojpurisahityangan.com

(बेटी विलाप)

बाबू मोर छछनक्ल जियरा ।
रस से बस मलवाल भइल मन, चढ़ल जवानी बा जोर ।मोर०।
दिने-राति कबो कलना परत बा, गुनत-गुनत होत भोर ।मोर०।
बाल-वृद्ध एक संग कइ दिहलऽ, पथल के छाती बा तोर ।मोर०।
कहत भिखारी जवानी काल बा, मदन देत झकझोर ।मोर०।

(बेटी के विलाप बाप से)

करिलऽ कान, करिलऽ कान, करिलऽ कान, करिलऽ कान ।
कहदीं बाबू से सब लोग, अबहीं नइखीं स्वामी जोग,
बयस बहुते बा नादान । करिलऽ कान·····

दुलहा नव्वे बरिस से कम, बानी नवके दूना हम,
नाहक भइल सेन्दुर-दान । करिलऽ कान·····

जब हम होखब मस्त जवान, बालम सुतिहन चादर तान,
खटिया पहुँची घाट मसान । करिलऽ कान·····

करत भिखारी गान, हमरा खातिर सूरज-चान,
काहे भइलन अंतर्धान । करिलऽ कान·····

(मतारी से)

माता सुन, माता सुन, माता सुन, माता सुन ।
बूढ़ा-बालक में मेल, तेह से भलहीं बा अकेल,
उमर बाटे पँचगून । माता·····
काठ, पथल समान, एगो जीव का ठेकान ?
देह में तनिको नइखे खून । माता·····

http://bhojpurisahityangan.com

दुलहा-दुलहिन चाहीं जोग, जइसे लावेला सभ लोग,
तरकारी दाल में नून । माता···
जोरिके कहत भिखारी कर, नगर भर के नारी नर।
लोगवा कहत बा जबून । माता···

(सवइया)

असली यह नाच भिखारी हजाम के, ग्राम के नाम कुतुबपुर है ।
देखिये-सुनिये वार्ता मरजाद से, आदि से अंत नहीं दूर है ।
कवहूँ-कबहूँ अबहूँ निजहूँ कुछ ब्यान सुनावत जो लूर है ।
देखन के जलसा ललसा कर मातृभासा घर के गूर है ।

(बेटी वियोग समाप्त)

http://bhojpurisahityangan.com

कलयुग प्रेम नाटक

(पियवा निसइल)

(मंच पर दुखहारिन के विलाप-गीत)

दुखहारिन :

निसा खा के पिया मोर, निसा खा के पिया मोर
दिहलन कपार फोर, (से) परल बानीं निसइल का
पालवा हो लाल
(से) परल बानीं···

बेंचि के चौकठ केवारी, बेंचि के चौकठ केवारी
तन पर के हमरा सारी, (से) सेतिहे में बिगलन
मोहरमालावा हो लाल
(से) परल बानीं···

कहला पर दुख मानि के, कहला पर दुख मानि के
झोंटवा धरेलन फानि के, (से) मालवा बनि के भइले
जिव के कालवा हो लाल
(से) परल बानीं···

कहत भिखारी ठाकुर, कहत भिखारी ठाकुर
दियरा में घर कुतुबपुर, (से) भोगत बानीं चालवा के
फलवा हो लाल
(से) परल बानीं ··

(धुन पूर्वी)

समाजी :

सिर नाइ चरन में गौरी सुत गनेसजी के
गावतानी निसइल के गीत पिअऊ निसइल ।

http://bhojpurisahityangan.com

समाजी में के एक आदमी : एक निसइल निसा खातिर समूचा धन बेंच देलस।
लरिका का हाथ में एगो बेरा रहि गइल बा।
एहू खातिर पहुंचहीं चाहता।
(निसइल कूदत-फानत आवता। लोग धरता।)
(रो-रो के कहनाम—धुन पूर्वी)

दुखहारिन : कतना दिनन से कहत बानीं तोहरा से
कइलऽ ना कान हमार बात पिअऊ निसइल।
बेंचि के कमाई पुरुखन के उड़ाइ कर
अपने भइलऽ लहँगाझार पिअऊ निसइल।
खेत-बारी गहना तूं बेंच देलऽ निसा खातिर
घरे नइखे छीपा के ठेकान पियऊ निसइल।
सूई-डोरा घर में ना, लुगरी फाटल बाटे
लड़िका रहत बा उघार पिअऊ नसइल।
पँइचा मिलत नइखे कवन जतन करीं
हफता से बीतता उपास पिअऊ निसइल।
धन में रहल बाटे बेरा लड़िका का हाथे
तेहि खातिर करत बाड़ऽ मार पिअऊ निसइल।

लड़का : ई बेरा इनिके ह ? ई त नानी देले बिया।

दुखहारिन : काढ़ि के सोनार घर, बेंचि द अबहीं जा के
खरची के रचि द उपाय पिअऊ निसइल।
अगिया लागल बाटे अन बिनु पेटवा में
चाक लेखा नाचता कपार पिअऊ निसइल।
रहता चले के तनी हूब ना करत बाटे
हमरा के अन में मिला द पिअऊ निसइल।
चिखना-संराक छोंड़ऽ लड़िका के मुंह दखऽ
अतना अरज मीर मानऽ पिअऊ निसइल।

http://bhojpurisahityangan.com

छोड़ि द सराव तोहे, कहता खराव सभै
हँसता नगरिया के लोग पिअऊ निसइल।
कुल परिवार के खियाल कर मन माहीं
जइसन हउवऽ खानदान पियऊ निसइल।
भजऽ सीताराम हईं जाति के हजाम, मोर
नाम ह भिखारी जिला सारन पिअऊ निसइल।
पोस्ट गुलटेनगंज, कुतुवपुर मोकाम खास
दिअरा में गंगा के किनार पिअऊ निसइल।

(बिलाप गीत–२)

दुखहारिन : कइलन निरमोही डबल घात।
हमरा खातिर एक दिन नइहर में
साजि के ले गइलन बरात। घात···

निसइल : दोस्त !

समाजी : हँ दोस्त।

निसइल : एह सादी में जइसन हम ठगान ठगइलीं ओइसन हमार कुल-परिवार ना ठगाइल होई।

(गीत जारी)

दुखहारिन : ऊ दिन भोर भइल पिअऊ का
अब दारू-ताड़ी सोहात। घात···
पी के घर में धूम मचावत
ताबर तोर ओकात। घात···

निसइल : कहिया ओकइलीं हाँ हो ?

लड़का : ओकइलऽ हा ना ? ओही दिन नूँ ओकात-ओकात मोरी में गिरलऽ रहऽ ?

(गीत जारी)

दुखहारिन : रात दिन गारी चाहे फजिहत
मारत जूता - लात। घात···

http://bhojpurisahityangan.com

आध पाव खरची नइखे घर में
लड़िका भूखे मरि जात। घात···
ई दुख आइ के पहुँचल सिर पर
हमरा से नइखे सहात। घात···
अब का कहीं बस्तर नइखे तन पर
सगरो गतर लखात। घात···
कतनो कहीले बरजल ना मानसु
हमरे पर खिसिआत। घात···
होत नतीजा पिउ का हाथ से
नइखे भिखारी से कहात। घात···

(पूर्वी)

समाजी : अतना बचनियाँ कहली जब धनियाँ त
बेटा रोके कहत रिसाइ के हो बाबूजी।

(निसइल दुखहारिन का कपार पर लाठी चला देतारे)

लड़का :हा पिता, तुम क्या किया, नशा में होकर चूर।
सोंटा से तुमने दिया, मइया के माथा थूर॥
रो रही अछुधाह होकर, खास पति के हजूर।
कहे भिखारी इज्जत के आज खिल्लत हो गइल धूर॥

निसइल : चुगलखोर बदमास, अरे तूं सोझा से हट जाव।
चार दिना के जामल बच्चा, हमें सिखावत दाव॥
अरे बदमास, लुच्चा ! तूं बोलने वाला कौन ?

लड़का : बेटा।

निसइल : किसका ?

लड़का : खास आपही का।

http://bhojpurisahityangan.com

निसइल : कैसे ?

लड़का : जनमाया जइसे ।

निसइल : मैं नहीं जनमाया तेरी महतारी ने जनमाया है जिसका तू पक्ष करता है ।

लड़का : हम क्या पक्ष करेंगे ? नाहक में नशा खाकर मारपीट करते हैं ।

(चौपाई)

निसइल : बढ़-बढ़ करबऽ बेसी जवाब ।
सोझा बने के खासा नवाब ।।
दूर होख अबहीं बेइमान ।
झट-झट बोलत चोर समान ।।
करबऽ खूब मातु के पाला ।
कहियो काटब छूरी से गाला ।।
अकेला में भेंटा जइबऽ त तोहरा लाद में छूड़ी पेस देबि ।

(चौपाई)

लड़का : बाबू कइलीं कवन कसूर ?
मन कइलऽ बेटा से दूर ।
बाबू खेललऽ अइसन खेल ।
दारू में सब धन देलऽ ढकेल ।।
बाबू देह भइल बा सून ।
भर पेट मिलत ना एको जून ।।
सहल जात नइखे दुख भारी ।
छोड़ द बाबू दारू - ताड़ी ।।
गाँव के लोग देत सब गारी ।
हिन्दू - मुसलमान नर - नारी ।।

http://bhojpurisahityangan.com

बाबू छोड़ नीच के काम।
बेड़ा पार लगइहन राम ॥
अबहूँ से जो चेतबऽ घर।
तनिक ना लागी काल से डर ॥
हम लड़िका कतना समुझाईं।
अबहीं सूझत ना दहिना - बाईं ॥
दुख से जीव भइल बकलोल।
दुसमन का घर बाजत ढोल ॥
बाबू सुनऽ बात अनमोल।
कहे भिखारी परदा खोल ॥

(छन्द)

निसइल : रे बेहूदा हट सोझा से, ना तो मारब जान से।
करत खल माई के पछ, बोलत बहुत अभिमान से।
हम जो शिक्षा देत निसि-दिन सुनत नाहीं कुछ ध्यान से।
कहे भिखारी जीव दुखित बा एह बेटा सैतान से ॥

इस बदमास का मुँह देखने से दोष होगा, क्योंकि बाप को ज्ञान सिखाता है। इसको कुछ मालूम नहीं, नशा की निन्दा करने में खास पंडित बन जाता है। अरे नशा वही चीज है जिसको खाकर देवों में महादेव हुए।

लड़का : तो क्या आप वही हैं ?

निसइल : हाँ-हाँ, तुम्हारे लिए।

लड़का : हमारे लिए तो वही हैं लेकिन आपकी हालत वही होगी जो हिरण्यकश्यप की थी।

निसइल : तो क्या तुम प्रह्लाद हो ?

लड़का : आपके लिए जरूर हूँ।

निसइल : सोझा से हट कुकर्मी, मेरा नाश करने के लिए प्रह्लाद बनता है।

http://bhojpurisahityangan.com

लड़का : नाश तो हो चुका फिर दूसरा नाश है कौन ?
बोलने का कुछ काम नहीं, रहो पिता हो मौन ।।

निसइल : हम क्या मौन रहेंगे, मौन बेलूरा तूम ।
खरचदार खन्दान में, हुआ नालायक सूम ।।

करब घर में बड़का धूम ।
माई बेटा के भूली टूम ।।

लड़का : टूम त भूलल ओही दिन ।
भइलऽ निसा के अधीन ।।

छीपा बेचि के खइलऽ पान ।
भरसक भइल बा अतना सान ।।

निसइल : सानी बबुआ जनबे कब ?
मुँह में थापर बाजी तब ।।

तनिको बाँह जो पकड़े पाइब ।
तोहरे चाम के ढोल छवाइब ।।

लड़का : (सवइया)

खाइ निसा कें किस्सा बहु भाखत लाज ना लागत एको रती ।
हाय पिता धिक्कार तुझे, कलपावत नाहक ब्याही सती ।

बेटा के चाम के ढोल छवावे के कवन गुरू सिखलाई मती ।
कहे भिखारी ओढ़ा दे सिर पर माई बेटा कें महा बिपती ।

निसइल : (सवइया)

बिपती अबहीं नहिं मीलत बा, हमरे सँग में तुम खेलहु खेला ।
साँच बतावहु कूर कपूत भये कवना गुरू से कब चेला ।

http://bhojpurisahityangan.com

माई-बेटा के सिखा कर पोढ़ किया थोरहीं दिन में अलबेला।
कहे भिखारी भखौटी उतारब पाइब मैं कहियो जो अकेला।
अकेला भेंटा जइबऽ त तोहार चमड़ी ओदार देब।

लड़का : अकेला राम लखन को घेरा खर-दूसन ने।
चौदह हजार सुभट, तुमको गने॥
मार के निपात किया पल-मात्र में।
देखो समझ के गवात शास्त्र में॥

निसइल : चौदह करोड़ के ऊपर मैं पिता तेरा हूँ।
अभिमानी अधर्मी सूम साँच मैं कहूँ॥
शास्त्र के पँवारा न मुझको सुनाव।
आया निकट काल तेरा आरबल गोहराव॥

लड़का : आरबल के बाप मेरा प्राण के आधार।
श्री राम-राम नाम जो है जग के करतार॥
वही मेरा माता-पिता सुत दारा भइया।
वही भवसागर के नाव खेवइया।

निसइल : वही राम बेड़ा तेरा लगावेगा पार।
सीता को कलंक ला के दिया जो निकार॥
राम कह के दशरथ जी का अंत हुआ प्रान।
उन्हीं पर किया है तूं अतिना गुमान?

लड़का। दिल में विचारऽ कहन का मेरा।
सनमुख निन्दा करत बाटे सब केहू
तनिको ना मन में सरम बा तेरा। दिल०।
दिन-रात झगरत बहु-बेटा से
लोग नगर के हँसत चहुँ फेरा। दिल०।

http://bhojpurisahityangan.com

चानी ना हाथ में, काल परल वाटे
एही खातिर मइया पर चलल असेरा ।दिल०।
कहत भिखारी आखिरी वीतत वाटे
जल्दी निकालऽ जुझावत वा बेरा । दिल०।

निसइल : आरे दुष्ट, लोग हँसत वा कि तोहनी का मतारी-बेटा रात-दिन हमरा निशा के निन्दा करत रहतारऽ स ।

(चौपाई)

समाजी : पिता पुत्र के मारन धाई ।
तुरते मइया गोद लगाई ।।
तब दुखहारिन जोड़ के हाथ ।
करे बिनय सुनिये मोर नाथ ।।

(गीत)

दुखहारिन : करऽ अवगुन माफ, वबुआ के नाथ ।
पुत्र पानी एक दिन थकला पर
दीही इहे वा स्वार्थ । नाथ करऽ···
तुम खोजत बुद्धी अपने अस,
कहाँ चरन कहाँ माथ ! नाथ करऽ···
चाहे दुलार मार चाहे गारी,
सब कुछ तोहरे हाथ । नाथ करऽ···
कहत भिखारी जिअब कतहूँ लेके,
राखब अपने साथ । नाथ करऽ···

(धुन पूर्बी)

बालक अबुझ पर बुझ कर के माफ करऽ
निपट नदान अनजान पियऊ निसइल ।

http://bhojpurisahityangan.com

अबुध जानत नाहीं, एही से मानत नाहीं
बड़ छोट नइखे बिचार पिअऊ निसइल

दुख से मरत बानीं, पँइयाँ परत बानीं
हमरा पर करहु खेयाल पिअऊ निसइल।

अँचरा पसारि भीख माँगत बानीं स्वामीजी से
बबुआ के छोड़ऽ जीवदान पिअऊ निसइल।

घर-घर भीख माँगब, बबुआ के सँगे राखब
देखि-देखि मन के बुझाइब पिअऊ निसइल।

करहु बिचार मन, आवत बा चउथपन
हँसिहन गाँव के गँवार पिअऊ निसइल।

आगे के निसानी पर होखहु देयाल दानी
बबुआ दी पितर के पानी पिअऊ निसइल।

बबुआ से बढ़कर, दोसर कवन जर
हमनी का बाटे से बता द पिअऊ निसइल।

हमनी का मनि फनि, बबुआ ह नागमनि
मन में करोध जनि राखऽ पिअऊ निसइल।

करबऽ करोध, नइखे मन में तनिक बोध
काँच बा उमिर, अकुलाई पिअऊ निसइल।

भाग के पराई कवनो मुलुक में जाई तब
कहत भिखारी कइसन होई पिअऊ निसइल।

कुतुबपुर ग्राम होके, जात के हजाम, जिला
छपरा में परत मोकाम पिअऊ निसइल।

पोस्ट गुलटेन गंज, पिया मति होखऽ रंज
बेटा लेके करहु बहार पिअऊ निसइल।

http://bhojpurisahityangan.com

समाजी : (चौपाई)

कहल-सुनल मन में ना लागे ।
उठ कर निसइल तुरते भागे ।।

अँइठत निसइल गइलन तहँवाँ ।
रंडी रहे भवन में जहँवाँ ।।

दुखहारिन : (विलाप गीत)

कहँवाँ लगवलऽ अतना देरी, ए दायानिधि !
कहँवाँ लगवलऽ अतना देरी !

एह दरिद्र के दाग दूर करऽ,
काटऽ करम के फेरी, ए दायानिधि !

हम मतिहीन बिनय करीं कइसे ?
चाल-चलन के छेरी, ए दायानिधि !

बड़ दुख दाह साहस बा कमती,
पउवा पर चढ़ल पसेरी, ए दायानिधि !

औरत हो के परत बानीं पग पर,
तोहरा चरन के चेरी, ए दायानिधि !

कहत भिखारी दायानिधि दाया करऽ
बिपति चहूँ दिसि घेरी, ए दायानिधि !

(चौपाई)

नइखे मीलत भरि पेट अन ।
पिअऊ निसा में बेंचलन धन ।।

बड़का बेटा कहाँ दो गइल ।
एही से बेसी नतीजा भइल ।।

http://bhojpurisahityangan.com

पिअऊ का मारे छोड़लस घर ।
हम सब बिधि से भइलीं सर ।।

आइ के ई दुख देखिते शंकर ।
भाई–माई भइल भयंकर ।।

छोटका के बा बच्चापन ।
अब हम करीं कवन जतन ?

कवना जर से खरची आई ?
कइसे लड़िका पालल जाई ?

कब के छिपल पाप प्रगटाइल ।
जेहि से पति के मति बउराइल ।।

मति के सुद्ध करऽ जगबंदन ।
जय-जय पारबती के नंदन ।।

जय राधाबर कुंजबिहारी ।
पति के मति भल करऽ गिरधारी ।।

जय सीतापति सुख के सागर ।
पति का मति के करऽ उजागर ।।

जय-जय जय-जय शिव के सती ।
निमन बना द पिअऊ के मती ।।

जय जगदीस ओड़ीसाबासी ।
रोअत बाड़ी चरन के दासी ।।

तोहरे पर बा पाका आसा ।
कब लवटी पापिन के पासा ।।

कहे भिखारी होत बा देरी ।
अवघट परल चरन के चेरी ।।

http://bhojpurisahityangan.com

समाजी : (चौपाई)

आइल निसइल रंडी साथा ।
रिस बस सोंटा गहिकर हाथा ।।
मारन चले लोग बहु धाई ।
धर कर बाँह निकट बइठाई ।।

एक आदमी : (निसइल से) भाई, तनी छड़ी दे दऽ ।

निसइल : हम छड़ी ना देब ।

पंच : (रंडी से) ए माई, तूहीं तनी कहि के डंटा दिअवा द ।

रंडी : (निसइल से) अच्छा छड़ी दे दीं ।

(निसइल छड़ी दे तारे)

निसइल :

एह जून चढ़ल बा नया कमान ।
जानी मिलली कबूतर समान ।।
जानी ना हई, हई परान ।
इनिके खातिर बानीं हरान ।।
कतना गाईं इनिकर सपूती ।
इनके ही बाटे सकल बिभूती ।।
कउँचत होइहन कतना जीव ।
हम ना बोलीं लगा के घीव ।।
हमरा सोझा केहुए बोली ।
फगुआ लेखा खेलाइब होली ।।

दुखहारिन : (रंडी से रोकर) तनी तूं समुझाइ द बहिनी, तोहर गोड़ परत बानीं । हमनी का दूनों मतारी-बेटा का बहुत तकलीफ बा । अब सहात नइखे ।

रंडी : ए, बहिन किस नाते से कहती हो, बताओ तो भला ।

दुखहारिन : सवतिन का नाता से ।

http://bhojpurisahityangan.com

रंडो : फूटी किसमत वाली ।
फटी लुगरी वाली ।।

मैं दूँगी गाली ।
क्यों बकती खाली ?

भँड़ुवे की साली ।
खान्दान के कुचाली ।।

मुझसे सरबर करने वाली ।
बाह जी सौतिन बननेवाली ।।

वेसी सान हो तो पानी में मुँह देख । अपने मन में बिचार कर कि मैं किसके सौतिन योग्य हूँ ।

निसइल : बाह वा, बाह बा, ई तूँ बोली ह । बोलतारी त इनकरा बोली में मधु चूवता ।

दुखहारिन : (रो-रो के गावतारी)

राखऽ सरन के पानी, ए बहिनी !

अन्न वस्तर बिनु माई-बोटा का
बीतता बहुत हलकानी, ए बहिनी !···

एह पागल के अवगुन माफ करऽ
दासी अपनी जानी, ए बहिनी !···

प्राननाथ के तूंहीं समुझा द
हो जा तूँ अटल भवानी ए बहिनी !···

कहत भिखारी जियब हम जबले
तोहरे चरन लपटानी, ए बहिनी !···

http://bhojpurisahityangan.com

रंडी : (गाना)

तूं का बने अइलू हमार दासी, ए चोटहो ?
सोझा से दूर होख, चोटही बेसरमी,
नाहीं त छोड़ाइब बदमासी, ए चोटहो ।
पूरा-पूरा रोवे के हाल जानत बाड़ू
नान्हें के बनल हऊ खासी, ए चोटहो ।
हाथ में ना गोड़ में, टकहा लिलार में
मने-मने मारताड़ू गाँसी, ए चोटहो ।
जीव लेके भागऽ कहूँ कहत भिखारी,
चाहे मक्का चाहे कासी, ए चोटहो ।

दुखहारिन : (बेटा से) बबुआ, तोहार माई हई, इनका गोड़ पर गिरकर कहऽ । तोहार कहल सुनिहन ।

लड़का : ए माई, हमरा दूगो माई आ एगो बाबू, हम कइसे-कइसे भइलीं ए माई ।

(गाना)

बहुत करब सेवकाई ए माई !
रात दिन तोहरे अर्हवन में
हरदम रहब लव लाई, ए माई !
मार-पीट गारी चाहे फजिहत
करबू तूं कतनो सजाई, ए माई !
बाबू के कह करके समुझा द,
तोहरे बा सभ प्रभुताई, ए माई !
कहत भिखारी कसूर माफ करऽ
गिरलीं चरन में आई, ए माई !

http://bhojpurisahityangan.com

रंडी (गाना)

तें का हमार करबे सेवकाई रे फुहरा ?
हमरा के जहाँ-तहाँ पाछा में रात-दिन
कहेले रखेलिन तोर माई, रे फुहरा ।

लड़का : ना-ना, तोहरा के आज से हमार माई काली जी कही ।

रंडी । (गाना)

खुदे तोर बाप अपमान कइ दिहलसि,
भाग मुँह में करिखा पोताई, रे फुहरा ।
कुरता-धोती नीमन मिली, माई के निहोरा कर,
करो कहीं दोसर सगाई, रे फुहरा ।
कहत भिखारी तोरा हाथ के जो पानी पीअब,
तुरते उपात होई जाई, रे फुहरा ।

समाजी : (चौपाई)

अति उतंग मन चले निसखोरा ।
रंडी साथ में घर के ओरा ।।

लड़का : (रोकर) (चौपाई)

त्राहि-त्राहि जगदम्बा त्राह ।
बाबू धइलन नरक के राह ।।
त्राहि-त्राहि बउरहऊ भोला ।
बाबू के लागल बिख के गोला ।।
त्राहि काली कलकत्ते वाली ।
मइया ! एह जून परलीं खाली ।।
बालक अबुध ज्ञान कुछ नाहीं ।
गिरलीं भवसागर के माँही ।।

http://bhojpurisahityangan.com

त्राहि धार में परल बा जीव ।
खींच के सुखला कर द शिव ।।
अबकी बेरा लगा द पार ।
हरिहर नाथ जी सुनहु पुकार ।।
गोहाटी परबत के बासी ।
काटऽ कमच्छा गला के फाँसी ।।
सिर पर पहुँचल बीपत भारी ।
खप्पर खरग ले करहु तेयारी ।।
देवी अबहीं दरसन दे दऽ ।
दूख-दलीदर पल में खेदऽ ।।
गीरत बानीं चरन में आज ।
मइया राखऽ भिखारी के लाज ।।

समाजी : (चौपाई)

अब आगे कर सुनिये बाता ।
शंकर छोड़ दिहलन कलकत्ता ।।
आवत मन-मन सोचत बाता ।
देखत कलपत माँ लघु भ्राता ।।
पाँच बरस में घर पर आइल ।
बाप के डर से रहे पराइल ।।
दुखहारिन के दुख भुलाइल ।
बहुत सा रुपया रहल कमाइल ।।
बेटा परत मातु के पाँव ।
दुखहारिन के लवटन दाँव ।।
कहे भिखारी सोच मत कीजै ।
अमृत नाम राम को पीजै ।।

http://bhojpurisahityangan.com

राधेश्याम बहार

वंदना

(चौपाई)

श्री गणेश के लागी पाँव ।
जगत जपत वा जिनिकर नाँव ।।

बिप्र चरन में नाऊँ सीस ।
जे वा दुनियाँ भर में बीस ।!

सन्त चरन में नाऊँ माथ ।
जिन्ह परगट कइलन रघुनाथ ।।

बासुदेव देवकी पद लागूँ ।
बार-बार अतने बर माँगूँ ।।

हरि गुन गावत निसि-दिन जाय ।
क्रोध - लोभ देहू बिसराय ।।

पुरुखन के चरनन सिर नाऊँ ।
जिनकी कृपा कृष्ण गुन गाऊँ ।।

जिनकी कृपा से देस-बिदेसा ।
गिरि-कानन नहिं होत कलेसा ।।

जिनकी कृपा सकल परिवारा ।
बिहरत बा सुरसरी किनारा ।।

जिनकी कृपा गंगाजल पाऊँ ।
सिर पर नित रेनुका चढ़ाऊँ ।।

जिनकी कृपा राधे गुन गाऊँ ।
जाते अन्त अमर पद पाऊँ ।।

http://bhojpurisahityangan.com

मोहन दानी हउअन भारी ।
रंक के कइलन ऊँच अटारी ।।
सोइ मोहन अब दाया करिके ।
बसहु हृदय मम बंसी धरिके ।।
मोर मुकुट कछनी के काछे ।
बंसी बजावत गइयन पाछे ।।
मम हिय कानन परबत गाछी ।
तेहि के मध्य चरावहु बाछी ।।

(दोहा)

यशोदा नन्दन सखि सहित, ललिता राधे बलराम ।
मोहि हिय ब्रज के ऐश्वर्य ले, बसहु सदा घनश्याम ।।

(एह मंगलाचरण का बाद मंच पर बइठल समाजी लोग के सामूहिक गान)

चौपाई (बानी के साथ)

झुण्ड-झुण्ड मिलि ब्रज के नागरी, साँवलिया प्यारे ।
घर-घर से चली सिर लेई गागरी, साँवलिया प्यारे ।
जमुना-जल भरने को जाती, साँवलिया प्यारे ।
भूसन-बसन सजे बहु भाँती, साँवलिया प्य रे ।
एही बिधि सखी जात मग माँहीं, साँवलिया प्यारे ।
ठाढ़े श्याम कदम की छाँहीं, साँवलिया प्यारे ।

(पाछा से गीत गावत सखियन के प्रवेश)

गीत

कब मिलिहन नन्दलाला, ए साँवर गोरिया !
मोर मुकुट माथे, मोर मुकुट माथे,
कछनी पीताम्बर, सोहत गले माला, ए साँवर गोरिया !

http://bhojpurisahityangan.com

कारी जुलुफिया पर, कारी जुलुफिया पर
मनवाँ लोभाइल, तिलक बीच भाला, ए साँवर गोरिया !
साँवली सुरतिया बिनु, साँवली सुरतिया बिनु
कल ना परत बा, जियरा हो गइलन बेहाला, ए साँवर गोरिया !
कहत भिखारी तनी भर, कहत भिखारी तनी भर
सबद सुनावऽ, हउअ खुदे बंसीवाला, ए साँवर गोरिया !

(एही बीचे वंशीधर कृष्ण आ बलराम आ जातारन)

(समाजी के चौपाई)

सखी श्याम के दरसन पाई ।
जय-जय कहि-कहि सीस नवाई ।।

(मंच पर उपस्थित सखी समाजी का साथ-साथ)—बोलिये वृन्दावन बिहारी लाल की जय !

(सखी लोग के राधेश्याम बहार के लीला गान)

(१)

करत बहार राधेश्याम, करत बहार राधेश्याम ।
श्री गोकुल-मथुरा कुंजन में होत नित-नित जाम । करत बहार···
मोर मुकुट ललाट चन्दन, जुगल अति छवि धाम । करत बहार···
बंसी फूँकत धरि अधर पर, संग में व्रज के बाम । करत बहार···
कहे भिखारी हरि के भजिलऽ, मन, ना लागी दाम । करत बहार···

(२)

कान्हा से लागे मोरा नैना, नैन बिनु सननन, सननन, सननन ।
कान्हा·····
मोरा पछुआरवा सारंगी बाजे, सारंगी बाजे सननन, सननन,
सननन । कान्हा·····
मोरा पछुआरवा तबला बाजे, तबला बाजे ठननन, ठननन,
ठननन । कान्हा·····

http://bhojpurisahityangan.com

(सखी आ कृष्ण के युगल गान)

सखी : नैना लगाये चलि जाय हो, कदमियाँ के छँहियें-छँहियें,
—हाँ कोई, हाँ कोई ।
आँखों में सुरमा जड़ीदार टोपी, —हाँ कोई, हाँ कोई,
जुलुफी देखाये चलि जाय हो, कदमियाँ के छँहियें-छँहियें ।

कृष्ण : आओ सखी, तोहे बंसी सुनाऊँ —हाँ कोई, हाँ कोई
जियरा जराये चलि जाय हो, कदमियाँ के छँहियें-छँहियें ।

(दोहा)

कृष्ण : इस तरफ मत जा ए सखिया, राहत घर के लीजिये ।
जमुना तीरे पुण्य क्षेत्र है, जल कुआँ के पीजिये ।।

सखी : कुआँ के जल खार बहुत है, मीठा चाहत हूँ प्यारे ।
ई बतिया कबहूँ ना सुनलीं, ई बतिया सुनलीं न्यारे ।।

कृष्ण : नया चाल के हाल त, सुनहु सुमुखि दे कान ।
जमुना तीरे दण्ड लगत है, दे जोबन के दान ।

सखी : जोबन-जोबन मत करहु, सुनहु अर्ज घनश्याम ।
हम सबका सोझा मत लेहू, नीच काम कर नाम ।।

(जमुना में जल भरे से कृष्ण के रोकला पर सखी लोग के निहोरा)

हमरा के भरे द गगरिया ए साजन !
हटऽ-हटऽ घाट छोड़ऽ जसोदा के लालन !
बेरि-बेरि करेलऽ रगरिया ए साजन ! हमरा के···

अइसन दुलार के हम पथल पर पटक देहब ,
काहें तूँ चलावेलऽ नजरिया ए साजन ! हमरा के···

एहिजा से जाके कहीं कबडी जमावऽ गऽ,
पनिघट के छोड़ के डगरिया ए साजन ! हमरा के···

http://bhojpurisahityangan.com

कहत भिखारी जो ना भरे देबऽ गगरी,
नाहीं बसब नन्द का नगरिया ए साजन ! हमरा के···

(दोसर सखी के कहनाम)

कवित्त

नन्द के कुमार, सुनिलऽ अरज हमार एक,
अइसन सान साहबी पर पँजरा में ना बहिहों।
जसोदा के लाल गाल तनिको बजावऽ मत
चाल से ना चलबऽ तब नगर में ना रहिहों।
चाहे जान रही चाहे जाई एही लागे कान्ह
जरा सा अनीति बात सपना में ना सहिहों।
कहत भिखारी हम असल के बेटी हईं
एक बात कहला पर लाख बात कहिहों।

(चौपाई)

कृष्ण : कइक लाख के बा तोर चोली।
काहें ना बोलबू अइसन बोली ?
कहबू बात रसीली पाका।
देखिहऽ पाछे ना लागे धाका।
ठंढे मन से होइबू भारी।
सुनिलऽ पुस्तक कान पसारी॥
कहे भिखारी छोड़ऽ सान।
ना त उठी जगत से मान॥

(गाना)

सखी : देखावऽ मति जारी, ए गिरिवरधारी !
चोलिया मसकि गइल, चोलिया मसकि गइल,
अँगुरी दुखाइल, रेसमिया फाटल सारी, ए गिरिवरधारी !

http://bhojpurisahityangan.com

अइसन अनीति पर, अइसन अनीति पर
आफत लगाइब, हम ना हईं दोसर नारी, ए गिरिवरधारी !
सोझा सेचलि जा हमरा, सोझा से चलि जा हमरा
रसिक बिहारी ! तूं कइलऽ बटवारी ए गिरिवरधारी !
कहत भिखारी तोहे, कहत भिखारी तोहे
भजन सुनाइब, इजतिया भलवऽ भारी ए गिरिवरधारी !
(एकरा बाद सखी कृष्ण के बंसी छीन लेतारी।)

(दोहा)

कृष्ण : बंशी दे दो ऐ सखी ! क्यों करती हलकान ?
मुसुकी छोड़त, गाल बजावत, लागत नाहीं गलान ।

सखी : बोली बोलत ढीठ से, तनिक नहीं सरमात ।
टेढ़ी बोलबऽ सखियन से, त जइब घरे पछतात ।।

कृष्ण : घर के हम ना जाइब, सखिया मानऽ बचन हमार ।
तेरी अँखिया रस भरी, मारत जिया में बान ।।

सखी : काचा जीव है मोहन तुम्हारे, थोरही में उतरात ।
इहाँ ना लागी तनिक चल्हाँकी, बोलऽ ना अटपट बात ।

कृष्ण : अटपट बातें कुछ ना बोलिहों, बंसी दे दो सखिया री ।
आसिरबाद कुछ हमसे लेलऽ जीअऽ हो के लखिया री ।।

सखी : आसिरबाद का देबऽ मोहन, तूं नान्हें के चोर ।
कतिना घर में माखन खइलऽ, भइल जगत में सोर ।।

कृष्ण : दुनियां भर में सोर भइल हम कुछ ना जनलीं तोर ।
पाका ठगिनी हमके ठगलू , सूरत देखा के गोर ।

सखी : ए मोहन, ! तूं सेखी ढिलऽ सूरत निहरलऽ मोर ।
कहे भिखारी जसोदा से कहब, करिहें नतीजा तोर ।।

http://bhojpurisahityangan.com

कृष्ण : आगे पीछे होई नतीजा, बेसी देखाइबू टिपोर ।
कहे भिखारी तमकल जइबू, गगरी देहब फोर ।

सखी : गगरी फोरबऽ बात बढ़इबऽ, हमें देखाइबऽ जोर ।
कहे भिखारी अब मुँह छूटी, सुनबऽ लाख कड़ोर ।।

(चौपाई)

ओरहन देहब तुरते जाई ।
हाल बनइहन जसोदा माई ।।

(समाजी के चौपाई)

अस कहि चले सकल ब्रजबाला ।
आगे से रोके नन्दलाला ।।

कृष्ण : बीतल बात के मारहु गोली ।
अब ना कबहूँ करब ठिठोली ।।

(सारी धइके सखी के रोकतारे)

(दोहा)

सखी : छोड़ऽ सारी हे गिरधारी, बेसी लागल बा दाम ।
ई मति जानऽ कमरी हउए, कहत भिखारी हजाम ।।

कृष्ण : एक सारी के प्यारी बहुत, करत बाड़ू बखान ।
कहत भिखारी हुकुम पाइब तब, लाखन देहब आन ।

सखी : सहजे में फुसलइबऽ हमको ।
का नहीं जानत हूँ हम तुमको ।
इहाँ से सेखी सान हटावऽ ।
झूठे कहि-कहि दिन कटावऽ ।।
नन्द राय के गाय चरावऽ ।
सूखल बाँस के बंसी बजावऽ ।।

http://bhojpurisahityangan.com

सदा तूँ ओढ़लऽ कमरी कारी ।
हमरे सोझा देखइबऽ जारी ।।
तूँ का सरबर करबऽ मोर ?
हम ना हईं गोरस के चोर ।।

कृष्ण : सरबर कुछ ना करिहों तोर ।
सखिया ! सुनऽ निहोरा मोर ।।
करहु माफ, खेलहु कुछ खेला ।
सब प्रकार हमरे बा पेला ।।

(सखी के नकारल)

गाना

सुनऽ ए मोहन प्यारे, हम ना खेलब तोहरा संग ।
सारी मोर दिहलऽ फारी, सारी मोर दिहलऽ फारी,
बँहियाँ झकझोरलऽ सुनऽ ए मोहन प्यारे,
चोलिया के बनवाँ कइलऽ भंग । सुन०···
रीति अनरीति कइलऽ रीति अनरीति कइलऽ
भइलीं हम बे-पानी, सुनऽ ए मोहन प्यारे,
लउके लागल सगरो अलंग । सुन०···
गाल के बनवलऽ हाल, गाल के बनवलऽ हाल
मोती-लर तुरलऽ, सुनऽ ए मोहन प्यारे,
देहिया के कइ दिहलऽ तंग । सुन०···
कहत भिखारी आज तूँ, कहत भिखारी आज तूँ,
कइलऽ बरिआरी, सुनऽ ए मोहन प्यारे,
आँख भँहुँआ चलत बा बेरंग, सुनऽ ए मोहन प्यारे ।

(कृष्ण के मनावल)

गाना

छतीसी गुजरिया, तूँ घरे चलऽ हो ।

http://bhojpurisahityangan.com

नखड़ा देखा के हमार जीव मोहलू, तूँ बाड़ू भल हो । छतीसी०···
मोतीहार बहार मजेदार, सोहत गले हो । छतीसी०···
जारी जनावेलू झूठे के, रोवऽ मत, बल-बल हो । छतीसी०···
कहत भिखारी तूँ खुदे जानत बाड़ू कल-छल हो । छतीसी०···

(सखी के नकारल)

गाना

हम ना सुनब तोहार बात, हो नन्दलाल !
जे ना बात कहे के से चट देना कह देलऽ हो नन्दलाल !
ब्रज के ना कुछु बा बसात, हो नन्दलाल !
सारी-चोली दरकल, घरे का जबाब देहब हो नन्दलाल !
एको नइखे हमरा से कहात हो नन्दलाल !
कतनो मनइवऽ मोहन, एको ना सवाल सुनब हो नन्दलाल !
अबहीं ले बाड़ऽ मुसुकात हो नन्दलाल !
कहत भिखारी बे बिचारी ना सहात बाटे हो नन्दलाल !
आखिर हउअ जगत पितु-मात हो नन्दलाल !

(सखी के दोसर गीत)

चल के कहब जसोदा से ई बतिया ।

डगर चलत कान्हा नगर मचवलन, कइलन दुरगतिया । चलके···
असल जे होखव त अब ना सहब अइसन फजिहतिया । चलके···
रीति छाड़ि अनरीति के धइलन; हेराइल हइन मतिया । चलके···
चसकल जो रहिहें त कहत भिखारी, उतरिहन इजतिया । चलके···

(सखी के प्रस्थान)

समाजी : (चौपाई)

राह में बोलत निपटे उदासा । गई सखी जसुमति के पासा ।।

http://bhojpurisahityangan.com

(यशोदा जी से सखी के ओरहन)

मइया जसोदा जी,
कइलन बेहुरमत सखियन के कान्हा तोर।
पानी भरे जात जब हमनी के देखेलन,
रहेलन बटिया अगोर। मइया जसोदा जी···
बान्हल केस हमनी के अझुरवलन,
धइलन अँचरवा के कोर। मइया जसोदा जी···
कहत भिखारी केहू के बसे नाहीं दिहितन,
तनी भर रहितन जो गोर। मइया जसोदा जी···

यशोदा। (दोहा)

कवने कारन का भइल, तनिक बतावऽ भेद।
बढ़ि-बढ़ि के तूं बातें कइलू, एक के नव-नव छेद॥

(सखी खुलासा करतारी)

सखी : (गाना)

गँइयाँ के ईजत ना बाँची,
तोहार बेटा भइलन अमीर।
देखि के अकेला बखेड़ा मचावेलन,
सखियन के खोलेलन चीर।
जल्दी उपाय करऽ पाछे पछतइबू,
नान्हें से भइलन बावन बीर!
एगो सलाह करऽ घरवा में बन क के,
बाहर से भर द जँजीर।
कहत भिखारी तोहार धन बरबाद क के,
नन्द के बनइहन फकीर।

(कृष्ण के हाथ ध के यशोदा जी के कहनाम)

यशोदा : (चौपाई)

बाछन सुनहू बात हमारी।
छूटी बानि अबकिए बारी॥

http://bhojpurisahityangan.com

तूं नान्हें से भइलऽ ढीठ।
चभुकी से हम फोरब पीठ।।
अइसन ओरहन हमें न भावे।
बात सुनत में मन सरमावे।।
सरवस खा के निरबस कइलऽ।
तूं दुलरू दुलार से गइलऽ।।

जा, तोहरा लोग का बारे में हमरा बोलला के कवन मतलब बा, तूं लोग जो नीमन रहितऽ त आज एकनी के मजाल रहल हा अँगना में कचवा उड़ावे के ?

कृष्ण : (गाना)

लगवले बाड़ी मइया, ललिता लहरवा। लगवले बाड़ी···
दामोदर सँग हम गेंदा खेलत रहलीं,
उहाँ जाके सखी सब मरली नजरवा। लगवले बाड़ी···
मुकुट पीतामरी हमार छीन लिहली,
ओह घरी सजली दिलग्गी के बजरवा। लगवले बाड़ी···
लंगा बना के हमें नाच नचवली,
हँसे लगली मुँह पर धइ के अँचरवा। लगवले बाड़ी···
कहत भिखारी, इहे सरदारी ह,
घरे आके तोरा भिरी बोलली जहरवा। लगवले बाड़ी···

कृष्ण : (चौपाई)

मइया सुनहू अरजिया मोरी।
तजवीज करिहऽ बात करेरी।।
इनिकर बात सकल बा साजल।
तोरा जाने में हम हईं पागल।।

http://bhojpurisahityangan.com

नाहक काहें गारी देहब ?
दुनिया भर से अजस लेहब ॥

सखी :

(चौपाई)

अजस के डर इनिका कइसन ?
देखतू करनी करेलन जइसन ॥
इनिका बा झगरे में माजा ।
गाल बजावत तनिक ना लाजा ॥
दुनिया भर के हवन गाल ।
अब ना सुधरी इनिकर चाल ॥

(कवित्त)

मोहन के चलाँकी सुनीं, नजर करके बाँकी,
नित ककर चला-चला के गगरी पर मारेलन ।
अइसन बेपानी कबहूँ देखलीं ना भइलीं हम,
चुन-चुन के गारी सब सखियन के पारेलन ।
अइसन बरिआरी केहू कइसे सही जसोदा जी,
हाथा-बाँहीं करि-करि के चोली-सारी फारेलन ।
कहत भिखारी इनिका छल भरल बा नारी-नारी,
पुरवासाठ करे का बेरा तुरते नकारेलन ॥

(सखियन के छेड़खानी कइल नइखे छूटत । एक दिन के बात । मोहन के रंग-ढंग देखि के एगो सखी के कहनाम)

सखी : मनमोहन श्याम, बेरि-बेरि करेलऽ रगरिया हो ।
पाँव परत बानीं, सखियन संग के,
छोड़ि द कइल कचहरिया हो । मनमोहन···
एक नगर में बास करत नित,
अनत के हईं ना फुहरिया हो । मनमोहन···

http://bhojpurisahityangan.com

राम करस, कुछ बोलत नइखीं,
तनी एसा फोरि द गगरिया हो। मनमोहन···
पहुँची सवेरे दरबार में ओरहन,
देखिहऽ भिखारी के लबरिया हो। मनमोहन···

(अब का पूछे के रहे। एगो ककड़ उठा के चलाइए त देले मोहन। सखी के गगरी फूट गइल। ऊ आगे बढ़लि झूमर पारत)

सखी : पनघट पर फोरलन गगरी हमार ।। टेक ।।
जाइ के कहब जब, जसोदा का लउकी तब,
मोहन से पुछिहन समाचार। पनघट पर···
केहू ओहिजा रहे नाहीं, कइलन हाथाबाँहीं,
चुनरी फाटल लहरदार। पनघट पर···
मोहन का नइखे सरम, नरम पर भइलन गरम,
रहता में करब खूब उधार। पनघट पर···
झगरा भिखारी गावे, सोचि के नीके बनावे,
कटत बा नाच में बहार। पनघट पर···

(सखी लोग जसोदा जी का लगे पहुँचल। मिलि-जुलि के अरज-ओरहन सुनावे लागल)

सखी : हम ना बसब तोहरा नगरी ए जसोदा जी,
हम ना बसब तोहरा नगरी।
मोहन जी धूरी में फाना उड़ावेलन,
पनिघट पर फोरेलन गगरी। ए जसोदा जी···
अबहीं त घरहीं में चरचा चलत बा,
जान जाई दुनिया भर सगरी। ए जसोदा जी···
रसिक विहारी कपारे पड़ल बाड़न,
नित दिन बेसाहेलन रगरी। ए जसोदा जी···

http://bhojpurisahityangan.com

कहत भिखारी बड़ाई होई एही में,
नन्द जी के बड़का बा पगरी। ए जसोदा जी···

दोसर सखी : तोहरे सोझा जसोदा जी रानी !
सब दिन से हम नगर में बानीं ॥
हमरा मुँह से आवत-जात ।
खाल-ऊँच कबो सुनलू बात ?
हँसी दिलग्गी मोरा न भावे ।
तनिको झूठ कहे ना आवे ॥
तोहार बेटा छैल चिकनियाँ ।
नान्हें से भइलन किरतनियाँ ॥
नाचि-गाइ के सखी रिझावत ।
लाज के बात ना मुँह से आवत ॥
नन्दजी के बड़का बा पगरी ए जसोदा जी,
हम ना बसब तोहरा नगरी ।

तीसरी सखी : (मैथिली बोली में)

जेखनी से साँझ भेल, दिया बत्ती बर गेल,
उजर चदर झारि खाट पर बिछलखिन ।
केना कहूँ मैं कहत लजाई छी,
बड़ अजगूत कान्हा हमरा से कलखिन ।
नवँग सुपारी वो तो कहाँ से दो ललखिन,
कोकचि-कोकचि मोरा मुँह में ठुसलखिन ।
गमक से प्रान गेल, नूगा मोरा खूल गेल,
बिधुनि - बिधुनि के सब गत कलखिन ।
नन्द जी के बड़का बा पगरी ए जसोदा जी,
हम ना बसब तोहरा नगरी ।

http://bhojpurisahityangan.com

चउठ सखी : देह से हम बानी कमजोर ।
नाहीं त पूरा होइत झकझोर ।।
घर के मरद ना पतिआस ।
एही से अइलीं जसोदा का पास ।।
एहिजो के बा अटपट बानी ।
अइला के ना रदूल पानी ।।
तर के भूँभुर, ऊपर के घाम ।
झगरे में झुरवत बा चाम ।।
नगर में बसब ना कहत भिखारी ।
ईजत के खिल्लत उड़वलन बिहारी ।।
नन्द जी के बड़का बा पगरी ए जसोदा जी,
हम ना बसब तोहरा नगरी ।

पाँचवीं सखी : जसोदा जी से टूट गइल आजुए से नाता ।
हँसी का बहाना से सारी झटक देलन,
अब ना ई फजिहत सहाता । जसोदा जी से···
घर-आँगन आपन चाहे अनकर,
तनिको ना हमरा सोहाता । जसोदा जी से···
एही इरिखा से कवनो मुलुक में चलि जाइब,
जाके पीसब केहु के जाँता । जसोदा जी से···
कहत भिखारी मुरारी आफत कइलन,
तूँही सहऽ हऊ उनुकर माता । जसोदा जी से···

छठवीं सखी : (चौपाई)
मोहन मोहन भइल सोर ।
मोहन मचवलन उपदर जोर ।।

http://bhojpurisahityangan.com

मोहन भइलन नान्हें से रगरी।
अब ना बसब नन्द का नगरी॥
सब कर ईजत बरोबर देखी।
तेकरे रही जगत में सेखी॥
अबलन से कइलन तकरार।
मोहन के नइखन डाँटनहार॥
टूट गइल अजुए से नाता जसोदा जी से···

सातवीं सखी : नटनागर मोर सब गत कइलन। नटनागर···
पानी भरे जात रहीं जमुना किनार पर,
गइया चरावत चलि अइलन। नटनागर···
साँच बात कहला से तूं ना पतिअइबू,
लपकि-झपकि के बाँह धइलन। नटनागर···
अइसन अबाटी जगत में ना देखलीं,
झट दे झटकि के परा गइलन। नटनागर···
कहत भिखारी सदा कमरी से दिन गइल,
कछनी पहिर के अमीर भइलन। नटनागर···

आठवीं सखी : (दोहा)
नागर गागर फोर के, कइ दिहलन सकचून।
ई सब कसर सधाइ लेब हम, असल जो होखब बून॥
जइसे चूरी लालजी, कइ दिहलन चकनाचूर।
ओसहीं मुकुट, कुंडल, बंसी, कछनी छीनब जरूर॥

नवीं : (चौपाई)
मोहन के गइल लाज मरजादा।
अपने मन से बनत सहजादा।

http://bhojpurisahityangan.com

केहू का मन में तनिक ना भावस ।
कतनो करिया मुँह चमकावस ।।
कतनो लइहन देह में ईतर ।
चाहे मनइहन देवता - पीतर ।।

कतनो लावस तेल - फुलेल ।
अब ना होई मोहन से मेल ।।
मोर मुकुट कतनो चमकइहन ।
हमनी का मन में तनिक ना भइहन ।।
ईजत खातिर नगर में बानीं ।
सुनिलऽ मइया जसोदा जी रानी ।।
सहल जात नइखे बरिआरी ।
मोहन फरलन तन के सारी ।।
फाट गइल कपड़ा के धारी ।
कसिके खींच दिहलन गिरधारी ।।
जो कुछ कहलीं कड़ुआ भारी ।
छमब देबि अपराध हमारी ।।
कहे भिखारी जसोदा जी रानी ।
खीस में लउकत बा आग ना पानी ।।

एक सखी : हम ना बसब अब जसोदा का टोली ।
जसोदा के बेटा मोहन रंग रसिया,
पनघट पर सखियन से कइलन ठिठोली । हम ना···
झूठो के बबुआ पर थपरा उठावेली,
ऊपर से बोलेली लीपल बोली । हम ना···

http://bhojpurisahityangan.com

मोहन का मने-मने माघ-फागुन लउकत बा
हमनी पर सब दिन बितावेलन होली ! हम ना···
कहत भिखारी सहात नइखे हमरा से
फारि दिहलन नयका कटाव काटल चोली । हम ना···

(एही बीचे एगो आउर सखी गावत आवतारी)

झकझूमर में फाटि गइल सारिया ।
चुनि - चुनि के पारत गारी,
बलराम पीताम्बरधारी,
सब रोवत ब्रज के नारी,
देखलीं ना अइसन मसखरिया ।

केहि हेतु होत तकरारा ?
एक वारहि - वारमवारा,
सुनि-समुझि के करहु बिचारा,
रहे माथ पर भरल गगरिया ।

मत करहु रीस बहुतेरा,
इहाँ बसत बजाज घनेरा,
जब खुली दूकान सबेरा,
एगो कीन द दोसर पाढ़धरिया ।

गीत गावत भिखारी नाई,
दरबार पहुँचलीं जाई,
जहाँ खुदे जसोदा जी माई,
हउवे कुतुबपुर दियरा नगरिया ।

(तवले फेरु केहू सुनावत आइल)

पनिघट पर गगरी फोरलन मोर ।

http://bhojpurisahityangan.com

जसोदा के बेटा मोहन मीठ बोलिया,
भइलन नगर में चोर। मोर पनिघट पर···
अइसन कइलन केहू ना पतिआई,
हाथ बाँहि झकझोर। मोर पनिघट पर···
गगरी फूटल त दोसर किनाई,
लागल ईजत के ओर। मोर पनिघट पर···
कहत भिखारी सनीचर के दिन होई,
सँउसे गाँव के बटोर। मोर पनिघट पर···

(सखिन के समिलात बिरहा)

एह अरजी पर मरजी करीं बाबू भइया,
बड़े छोटे नीके देखीं एह झगरा के बूझ।
नीके देखी एह झगरा के बूझ ब्रजबासी।
नाहीं त जाके बसब अजोध्या चाहे कासी।
चाहें बसब ठाकुरदुअरा, चाहे बसब झाँसी।
हमरा देह से जसोदा के सहात नइखे गाँसी।
घरवा छोड़िके बन में चाहे बनि जाइब उदासी।
कहे भिखारी चाहे मरब गला में लाके फाँसी।
बड़े छोटे नीके देखीं एह झगरा के बूझ।

एगो बूढ़ सखी : (कबित्त)

अहो पंच परमेश्वर एह पंचाइत के न्याय करीं,
जानि गइल जगत जे नन्दरानी जी कहावेली।
मोहन के ओरहन जो देत केहू कवनो बिधि,
सुनि के मीठ बोली में अनगावल गीत गावेली।
अइसन अनरीति कवना मुलुक में चलन बाटे,
बेटा के पछ ककै हमनी के सिखावेली।

http://bhojpurisahityangan.com

कहत भिखारी सबका देखे में चीकन बाड़ी,
झगरा करसु ना ई झगरा करावेली।

[बूढ़ सखी ओरहन देके चल जात बाड़ी]

समाजी के चौपाई : सुनि - सुनि ओरहन जसोदा माई।
मोहन से बोली रिसिआई॥

यशोदा (मोहन से) : हम ना छोड़ब तोहार जान,
मोहन करवलऽ फजिहतिया।
आधा जबान केहू कबहूँ ना बोलल,
सहत बानीं सखियन के स न। मोहन···
राति-दिन ओरहन सोगिया लगवनिन के
सुनत-सुनत बहिर भइल कान। मोहन···
एगो ना बात मानऽ कतिना सिखाईं,
अब ना छूटी तोहार बान। मोहन···
कहत भिखारी तूं सखियन के संग छोड़ऽ
मनवाँ में करिलऽ गलान। मोहन···

कृष्ण : (कृष्ण के सफाई)

मइया बतिया हमार सुनऽ साफा।
लबजी का बात के तू साँचे पतिअइलू,
सहजे में हो गइलू खाफा। मइया···
लरिका समुझि हमें खूब दिक कइली,
सहि गइलीं कइ-कइ दाफा। मइया···
मुरली माँगत रहीं सारी में हाथ लागल,
फारला में का बाटे नाफा? मइया···
कहत भिखारी ई झूठे लगावत बाड़ी,
एके हाली गाफा के गाफा। मइया···

http://bhojpurisahityangan.com

यशोदा (एगो सखी से) : गुजरिया तूं नाहके अपत कइलू हो।
फुसुर-फुसुर का-का दोनी घरे बतिआ के
हमरा मोहन के बोला ले गइलू हो। गुजरिया···
छोटे बदन में तूं मोटे गुमान कइलू
हमरा मोहनजी के नाँव धइलू हो। गुजरिया···
कहत भिखारी बिहारी के दोस देके,
लबजो कहिया से कुलवंती भइलू हो ? गुजरिया···

(ई सुनि के सखी लोग समिलात दुखड़ा सुनावे लागल)

सखी : (पूर्वी)

हमनी का कहत बानीं, सुनऽ ए जसोदा रानी !
कइलन नगहानी अवहीं खानी हो बिहारी जी।
घर में बालक लाल, बाहर में होके माल,
गाल से देवाल के उड़ावेलन बिहारी जी।
जइसन बलराम, तइसन घनश्याम,
ओइसन नाम-ग्राम करिहन बिहारी जी।
रहता में जनीजात, देखि के करेलन बात
मन में ना तनी सरमात हो बिहारी जी।
गोकुला नगरिया के, नन्द-कचहरिया के
बड़का बनइहन पगरिया बिहारी जी।
कहत भिखारीदास, कुतुबपुर ह ग्राम खास
हमनी के कइलन उदवास हो बिहारी जी।

(यशोदा जी कृष्ण के समुझावे लगली)

यशोदा : (पूर्वी)

बबुआ सुनहु बात, डगर आवत - जात
केकरो से बोले के गरज का दुलरुआ ?

http://bhojpurisahityangan.com

ओरहन आइल तोर, दुखित भइल मन मोर
काहे भइलऽ अइसन मुँहजोर हो दुलरुआ ?
केहू के तूं देलऽ गारी, रोवत घरे अइली नारी
सारी फारि दिहलऽ गरीब के दुलरुआ !
करि के रगरिया गगरिया केहू - केहू के
फोरिकर फेंकलऽ गेड़रिया दुलरुआ !
भइल बाड़ऽ बावन बीर, दुअरा पर लागल भीर
काहे जालऽ जमुना का तीर हो दुलरुआ ?
माखन - मलाई खालऽ, बछरू चरावे जालऽ
करे खातिर गिधवामिसान हो दुलरुआ !
छोड़ि द ढिठाई काम, कृष्णचन्द्र बलराम
करत बा लोग बदनाम हो दुलरुआ !
अबहूँ से करऽ ज्ञान, छोड़ि द अइसन बान
नाहीं त छोड़ब हम ना जान हो दुलरुआ !
धइले बाड़ऽ नीमन साथ, रसरी में बान्हब हाथ
काहे जालऽ बछरू चरावे हो दुलरुआ ?
नोकर बहुत मोरा, कवन फिकिर बाटे तोरा
घेरले बा लोग चारू ओर से दुलरुआ !
देखि के लागत बा लाज, रहितन जो घरे आज
मालिक होइतन अनराज हो दुलरुआ !
हिरदय बसहु आई, पितु कृष्ण राधे माई
कहत भिखारी नाई गाइ के दुलरुआ !

(तब कृष्णो आपन बयान सुनावे लगले)

कृष्ण : (पुनः)

कहत बानीं बात खोलि के, सब सखी मिलि-जुलि के
पनिया भरब मइली जमुना में हो मइया !

http://bhojpurisahityangan.com

हम गइली घाट पर, साथे-साथ हलधर
बछरू चराइ के पिआवे जल हो मइया !
एक सखी बंसी लेली, हाथ झकझोरि देली
एक सखी छिनली पीताम्बरी हो मइया !
जनलीं जे हँसी कइली, राह धके चलि भइली,
आगे जाके मँगलीं पीताम्बरी हो मइया !
केहू बोले लागल सेखी, बालक नादान देखि,
केहू कहे छीनब हम कछनियाँ हो मइया !
तनी ना चलत सक, होइ गइलीं हम भक
झक - झक चारू ओर से घेरली हो मइया !
मोरवा मुकुट केहू, बाँचल रहल सेहू
ढीठे हाथे सिर से उतरली हो मइया !
केहू नासामनी लेहल, केहू-केहू गारी देहल
केहू खोलि लेहल पैंजनियाँ हो मइया !
केहू हाथ धइल कसि के, केहू बोलल हँसि-हँसि के
उटुकी - खुटुकिया चलावल केहू हो मइया !
नाहीं हम जनलीं माई, झगरा दीहें लगाइ
खबर पहुँची दरबार में हो मइया !
इहे हउवे समाचार, हमरा के बारम्बार
थपरी बजा के लजववली हो मइया !
अब हमरा सूझि गइल, हीत दुसमन भइल
खुलि गइल आँखि के झपनियाँ हो मइया !
कहत भिखारी नाई, पनिघट के गीत गाइ
कुतुबपुर दियरा में घर बा हो मइया !

(यशोदाजी बेटा का कहला में आ गइली आ
लगली सखी लोग के सुनावे)

http://bhojpurisahityangan.com

यशोदा : (पूर्वी)

सुनिलऽ हमार कहल, मन बा तोहार दहल
उमिर मोहन के नादान बा हो गोरिया !
कइसे हेराइल बूध, बोलत नइखू बोली सूध
नखऊ विचार बड़ - छोट के हो गोरिया !
बबुआ नादान बाटे, लगलू कसीदा काटे
झूठहूँ के लहरा लगवलू हो गोरिया !
झगरे के हऊ मन, कतिना बा तोरा धन
हन-हन झन - झन छोड़ि द हो गोरिया !
नाहीं त जुलुम होई, राजा जी से कही कोई
तब नाहीं बसबू नगर में हो गोरिया !
लगन हमार लखि, जरत-मरत वाड़ सखी,
अनभल छोड़ि द मनावल हो गोरिया !
परल बाड़ू हाथवा में, चलऽ हमरा साथवा में
कहब तोहरा भाई--भउजाई से हो गोरिया !
चलऽ बबुआ दूनों भइया, जहँवाँ इनिकर हवहिन मइया
नीकं पुरवासाठ करिकं छोड़ब हम हो गोरिया !
मुँहवाँ के राखऽ लाली, काली कलकत्ता वाली
कहत भिखारी नाई गाइ के हो गोरिया !

समाजी : (चौपाई)

जसोदा सखी संग ले जाई
साथे कृष्ण जात मुसुकाई
जो यह कही-सुनी नर-नारी
तेहि के पद-मँह परत भिखारी

(ओरहन सुनवला से सखिन के मन नइखे भरत । मोहन के करनी फेरू गवाये लागल)

http://bhojpurisahityangan.com

एक सखी : (गाना)

करीं हमका जसोदा ! चसकल मोहनवाँ ।
बरजि रही बरजल ना मानत
नित उठि आवे कान्हा हमरा अङनवाँ ।
गगरी फोरत इनिका संका ना लागत
कहेलू जे बड़ सूधा हउअन ललनवाँ ।
देखतू तनिक तूं ढिठाई बिहारी के
कइसे दो त सोझा तोहरा रहेलन भवनवाँ ।
कहत भिखारी गजब बरिआरी बा
कब - कब देबे हम आइब ओरहनवाँ ।

दोसर सखी : (गाना)

पनिघट पर कइसे केहू जाई ।
सुनि लेहु, सुनि लेहु, आरे मातावा जसोदाजी हो,
अपना लालन जी के हालत कइलन बरिआई ।
गरिया से तर कइलन, आरे नकिया के बेसर धइलन
देखतू तूं त तूंही जइतू सरमाई ।
केहू के कहल ना माने, आरे हमनी के ना त आदमी में जाने,
देखतानी तोहरो दनाई !
कहत भिखारी, अब ना, आरे बसे दीहें मुरारी केहू के
एको ना लउकत बा उपाई ।

तीसर सखी : (गाना)

जइसन करत बाड़न करनी बिहारी जी नूं हो
बतिआ कहब निरुआरी ।
कंकर चला के गगरी फोरलन
धइलेलन भर अँकवारी ।

http://bhojpurisahityangan.com

मोतीहार हजार के तुरलन,
हाथ गला बीच डारी ।
रगर-झगर कइ बाँह ममोरलन
फारि देलन तन पर के सारी ।
एह बस्ती में केहू कइसे बसिहन
जहँवाँ होत बटवारी ।
लाज के बात बताईं हम कइसे
देखि लेलन लाँगट उघारी ।
ई अनरीत सहात नइखे हम से
असले कहत भिखारी ।
धइके कसर लेहब सब दिन के,
चाहे हमें देबू तूं उजारी ।

चउठी सखी : (गाना)

ए जसोदा मइया, चसकल बा ललना तोहार ।
रोकि के डगरिया मोसे कइलन मसखरिया,
ए जसोदा मइया, जब जाईं जमुना किनार ।
रीति अनरीति कइलन, बाँह काहें धइलन,
ए जसोदा मइया, अपने मने हउवन होसियार ।
असल हम हईं जनि जनिहऽ कम असल,
ए जसोदा मइया, टिकल नइखे बेसवा बजार ।
कहत भिखारी कहूं मोती लर टूटल,
ए जसोदा मइया, लागि जाई कतिना हजार ।

पाँचवीं सखी । (गाना)

जमुना में जात रहीं जल भरे हो,
कान्हा हम से कइलन तकरार ।

http://bhojpurisahityangan.com

कुछ दूर डगर में गइलीं हम हो,
विचही में मिललन मुरार।
बाते - बाते रगर बढ़वलन हो,
गारी हमें दिहलन हजार।
नीमन काम करत बाड़न बबुआजी हो,
कइले जइहऽ असहीं दुलार।
बछरू चरावे का बहाना नित हो,
लेलन ईजत हमार।
अरज करत बानीं आरे मइया हो,
एही में बा मरजी तोहार।
आपन - बिराना मति सोचिहऽ तूं हो,
पंचित करऽ निरधार।
कुतुबपुर गँइयाँ भिखारी ठाकुर हो,
बसल बाड़न गंगा का किनार।
ऊहे त ई प्रेम के झगरा गवलन हो,
गाइ - गाइ कइलन बहार।

http://bhojpurisahityangan.com

[illegible]